आर.एन.आई. पंजीयन क्रमांक 45215/86

ज्योतिष, स्वास्थ्य एवं सुसंस्कार की शिक्षाप्रद पत्रिका

जीवन वैभव

स्थापना के 40 वर्ष

स्थापना वर्ष : 40 | वर्ष अंक : 1 | जनवरी से मार्च 2026

ISO certified 9001- 2015

अन्तर्राष्ट्रीय ज्योतिष सम्मान समारोह - 2026

स्मारिका विशेषांक

मूल्य रू.50

जीवन वैभव के संस्थापक पितृपुरूष को सादर नमन

जीवन वैभव त्रैमासिक पत्रिका के 40 वर्ष पूर्ण करने पर आयोजित
समारोह में संस्थापक जीवन वैभव
स्व. रामचन्द्रजी पाण्डेय की प्रेरणा और सतत् मार्गदर्शन के लिए
जीवन वैभव परिवार की ओर से सादर नमन।

सम्पादक
हेमचन्द्र पाण्डेय

जीवन वैभव

ज्योतिष, स्वास्थ्य एवं सुसंस्कार की शिक्षाप्रद पत्रिका

स्थापना के 40 वर्ष

स्थापना वर्ष : 40, अंक-1, जनवरी से मार्च 2026

संपादक
डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय

सहायक संपादक
अरविन्द पाण्डेय
आशुतोष पाण्डेय

कानूनी सलाहकार
श्री अजय दुबे, श्री बी.एस. शुक्ल

सलाहकार मण्डल
डॉ.श्रीमती पुष्पा चौहान, श्री मनोज अग्निहोत्री, सुनील भण्डारी (मुम्बई), सौरभ पुरोहित, विनोद जोशी, डॉ. अरविंद राय

प्रकाशन कार्यालय : 15-ए, प्रेस कॉम्पलेक्स
महाराणा प्रताप नगर, भोपाल मोबा. : 9425008662
www.jeevanvaibhav.in

(सम्पादक मण्डल के सभी सदस्य मानसेवी हैं।)

सभी प्रकार के विवाद का न्याय-क्षेत्र भोपाल रहेगा

मूल्य

एक प्रति - 50 रूपये **वार्षिक - 200 रूपये**
त्रैवार्षिक - 500 रूपये **आजीवन - 5000 रूपये**

ISO9001:2015
(Quality management system)
QCAS-JEV-22-0514738

अनुक्रमणिका

1.	वंदना	2
2.	सम्पादक की कलम से	3
3.	वैभव दर्शन	5
4	ज्योतिष शास्त्र के योगों पर दृष्टि	6
5	आवासीय वास्तु और ग्रह का प्रभाव ज्योतिष गणना में आयु निर्धारण : एक जीवन-कथा	7
6	नक्षत्र से रोग विचार तथा उपाय	8
7	समस्त बाधाओं का हरण कर लेती है शिवजी की महाकाल की नगरी उज्जैन	9
8	सुखमय दाम्पत्य जीवन और ज्योतिष	11
9	शनि की साढ़े साती और उपाय	13
10	नवार्ण मंत्र महत्व	15
11	अंगारक योग पर कुछ भ्रांतियां	16
12	फलित ज्योतिष में शकुन-अपशकुन का विचार	17
13	ज्योतिषी के लिये स्वर ज्ञान की आवश्यकता	21
14	शुक्र ग्रह प्रकृति, स्वभाव एवं बारह भावों में महत्व	22
15	क्रिस्टलः ऊर्जा को संतुलित करने का प्राकृतिक तरीका	27
17	ज्योतिष में तलाक के कारण और निवारण	29
18	'ज्योतिषीय उपायों की प्रभावशीलताः कब और कैसे?'	30
19	गृहस्थ जीवन के लिए जरूरी है पंचमहायज्ञ	31
20	वास्तु में ब्रह्मस्थान का महत्व	32
21	नवग्रहो में गुरू ग्रह की स्थिति का आकलन	34
22	ज्योतिषी कैसा होना चाहिए-एक विश्लेषण	35
23	रुद्राक्ष का महत्व और धारण करने के लाभ	37
24	जीवन में अध्यात्म और रिश्तों का महत्व	39
25	ज्योतिष में जातक की कुंडली में त्रयंबक कैसे होता है?	40
26	जाने धनेश द्वारा धनार्जन करने के साधन एवं साध्य कैसे?	41
27	कारावास योग	47
28	जन्म कुंडली, अंक शास्त्र, हस्त रेखा, टैरो कार्ड	48
29	अष्टक वर्ग के आधार पर जातक की जन्मकुण्डली का विवेचन	49
30	वास्तु शास्त्र में पंच तत्वों के संतुलन का महत्व	50
31	केपी ज्योतिष में ग्रहों का कारकत्व और कस्पल इंटरलिंकः फलादेश की यथार्थ कुंजी	52
32	भविष्यवाणी के लिए टैरो कार्ड का उपयोग	53
33	जन्म लग्न के अनुसार योगकारक, सम एवं मारक ग्रह	54
34	नवग्रहों का प्रभाव शरीर के रोग एवं निवारण	56
35	ज्योतिष, संहिता खंड और बाज़ार को समझने की सरल सोच	58
36	'पूर्वजन्मकृत पापों का वर्तमान जन्म में प्रभाव	60
37	सूर्यग्रह विश्व परिस्थिति का निर्णायक	62
38	त्रैमासिक राशि भविष्य फल	64
39	त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त	68

स्वामित्व, प्रकाशक, मुद्रक, श्रीमती प्रेम्लता पाण्डेय, 15-ए, इंदिरा प्रेस कॉम्प्लेक्स, भोपाल से प्रकाशित एवं मेश प्रिंट्स, 105-ए, सेक्टर-एफ, गोविन्दपुरा, भोपाल-462011(म.प्र.) से मुद्रित, संपादकः डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय।

संस्थापक-संपादकः स्वर्गीय श्री रामचन्द्र जी पाण्डेय, स्वर्गीय श्री व्यंकटराव जी यादव

वन्दना

भवानी अष्टकम्

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता।
न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानी ॥1॥

****

भवाब्धावपारे महादःखभीरू पपात प्रकामी प्रलोभी प्रमत्तः ।
कुसंसारपाशप्रबध्दः सदाहं गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानी ॥ 2 ॥

****

न् जानामि दानं न च ध्यानयोगम् न जानामि तन्त्रम् न च स्तोत्र स्तोत्रमन्त्रम्।
न जानामि पुजाम् न च न्यासयोगम् गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानी ॥3॥

****

न जानामि पुण्यं न जानामि तिर्थम् न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित् ।
न जानामि भक्तिं व्रतं वापि मातर्गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानी ॥ 4 ॥

****

कुकर्मी कुसङ्गी कुबुध्दीः कुदास् कुलाचारहीन् कदाचारलीन् ।
कुदृष्टीः कुवाक्यप्रबन्ध् सदाहं गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानी ॥ 5 ॥

****

प्रजेशम् रमेशम् महेशम् सुरेशम् दिनेशम् निशीधेश्वरं वा कदाचित् ।
न जानामि चान्यत् सदाहं शरण्ये गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानी ॥ 6 ॥

****

विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे जले चानले पर्वते शत्रुमध्ये ।
अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानी ॥ 7 ॥

****

अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो महाक्षीणदीनः सदा जाड्यचक्रः ।
विपत्तौ प्रविष्टः प्रनष्टः सदाहं गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानी ॥ 8 ॥

भावार्थ : हे भवानी ! पिता, माता, भाई, दाता, पुत्र, पुत्री, नौकर, स्वामी, स्त्री, विद्या, वृत्ति इनमें से कुछ भी मेरा नहीं है। हे देवी ! तुम्ही एकमात्र मेरी गति हो।।1।। मैं अपार भवसागर में पड़ा हुआ हूं, महान् दुःखों से भयभीत हूं, कामी, लोभी, मतवाला तथा घृणा योग्य संसार के बंधनों में सदा सदा बंधा हुआ हुँ, हे भवानी ! एकमात्र अब तुम्ही मेरी गति हो।।2।। मैं न तो दान देना जानता हूं और न तो ध्यानमार्ग का ही मुझे पता है। तंत्र-स्तोत्र-मंत्रों का भी मुझे ज्ञान नही है, और पूजा और न्यास आदि की क्रियाओं से तो मैं एकदम कोरा हूं। हे भवानी ! एकमात्र अब तुम्ही मेरी गति हो।।3।। न पुण्य जानता नहीं, ना ही तीर्थ, न लय या मुक्ति का पता है। हे माता! भक्ति और व्रत भी मुझे ज्ञात नहीं है, हे भवानी ! एकमात्र अब तुम्ही मेरा सहारा हो।।4।। मैं कुकर्मी, बुरी संगति में रहनेवाला, दुर्बुद्धि, दुष्टदास, कुलोचित्त सदाचार से हीन, दुराचारपरायण, कुत्सित दृष्टि रखनेवाला और सदा दुर्वचन बोलनेवाला हूँ, हे भवानि! मुझ अधम की अब एकमात्र तुम्हीं मेरी गति हो।।5।। मैं ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इन्द्र, सूर्य, चन्द्रमा तथा अन्य किसी भी देवताओं को नहीं जानता, हे शरण देनेवाली माँ भवानि! अब एकमात्र तुम्हीं मेरी गति हो।।6।। हे शरण्ये! तुम विवाद, विषाद, प्रमाद, परदेश, जल, अनल, पर्वत, वन तथा शत्रुओं के मध्य में सदा ही मेरी रक्षा करो, हे माता भवानि! अब एकमात्र तुम्हीं मेरी गति हो।।7।। हे भवानि! मैं सदा से ही अनाथ, दरिद्र, जरा-जीर्ण, रोगी, अत्यन्त दुर्बल, दीन, गूँगा, विपद् ग्रस्त और नष्ट हूँ, अब एकमात्र तुम्हीं मेरी गति हो।।8।।

A TATA PRODUCT

Give wings to the girl within!

TANISHQ

Festival Of Diamonds

FLAT 20%OFF
on diamond value across 10,000+ designs

FLAT 0% DEDUCTION* ON EXCHANGE
of old gold of any karat from any jeweller, on purchase of diamond jewellery

*Conditions apply.

Showroom:

- **G-29- C, Ground Floor, DB City Mall, Arera Hills, Bhopal - 462011 | M.: 78801137563**
- **15-A, Rajbhawan Road, Malviya Nagar, Bhopal - 462003 | M.: 0755-4202904**

SRC
श्री राम कॉलोनी
प्राईम लोकेशन टोल टेक्स के पास
Shri Ram Colony
सुविधाएं
सम्पूर्ण शासकीय अनुमति प्राप्त कॉलोनी
सी.सी. रोड
सी.सी. नाल
बिजली और पानी की पूर्ण सुविधा
नेशनल हाइवे रोड से लगी हुई कॉलोनी
फायनेंस सुविधा कार्मशियल दुनाक
गार्डन व्यवस्था
पहले आओ, पहले पाओं
कम कीमत में
आपका अपना खुद का घर बनायें
बुकिंग चालू है
कॉलोनी पताः मेन रोड बिशनखेड़ा, ओबेदुल्लागंज
टोल टेक्स के पास, नेशनल हाइवे मो. 9425605612

झाग ही झाग..
सफाई बेदाग™

तन मन®
डिटर्जेंट पाउडर व साबुन

अब और भी ताकतवर एवं
नई खुशबू के साथ!
नया तनमन ब्लू

अब एन्जाईम युक्त
नई खुशबू के साथ!
नया तनमन व्हाइट

DETERGENT CAKE
50g FREE^ ₹10/- ONLY

BHASKAR VENKATESH PRODUCTS PVT. LTD
Corp. Office: 96 Anant House, Near Governor House, Behind Airtel Office, Malviya Nagarn Bhopal-462003 (M.P) India
For Any Consumer Query / Complaints Contact us: 0755-2733815, 4031323 | Email: bvppl@poojapaath.com

जीवन वैभव की स्थापना के 40 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर शुभकामनाएं , अभिनंदन और आगामी निरंतर प्रकाशन की शुभकामनाएँ - पं. जगदीश शर्मा

आशिमा अनुपम सिटी, भोपाल

जीवन वैभव की स्थापना के 40 वर्ष पूर्ण होने के अवसर लेखको एवं पाठकों को
हार्दिक शुभकामनाएं

सौम्या प्रिवीलेज,कोलार रोड, भोपाल

SNL

Shree Nakoda Logistics

Fleet Owners and Leading Logistics Service Provider.

We provide dedicated secondary and primary logistics services to **Reliance Industries ltd, Tata Digital, DMart, Zomato, Zepto, Bisleri, Amazon, Walmart,** etc

Reliance TATA DIGITAL DMart Bisleri

zepto zomato Walmart amazon

Our Clients

Address: 1st Floor, Plot No. WA-72, Near MRF Tyres-Scheme No. 94, Indore-452010

SINCE 1997
ATTRACTIVE GROUP
NO DREAM , TOO BIG

मैनेजिंग डायरेक्टर

श्री अपूर्व असाटी ने वर्ष 2010 में मात्र 20 वर्ष की आयु में अपने पिता के साथ मिलकर व्यवसाय में कदम रखा। अपने दृढ़ संकल्प और पिता के मार्गदर्शन से उन्होंने अट्रैक्टिव ग्रुप को आगे बढ़ाया और भोपाल में टीवीएस मोटर कंपनी के अधिकृत मुख्य डीलर के रूप में स्थापित किया।

अट्रैक्टिव ग्रुप के बारे में

- अट्रैक्टिव ग्रुप गर्व से मध्य प्रदेश में सबसे बड़े और सबसे एडवांस्ड टू-व्हीलर वर्कशॉप चलाता है।
- अट्रैक्टिव ग्रुप भोपाल में सबसे पुराना TVS टू-व्हीलर शोरूम चलाता है।
- अट्रैक्टिव ग्रुप मॉडर्न मोबिलिटी के लिए डिज़ाइन किए गए इनोवेटिव और भरोसेमंद इलेक्ट्रिक 2-व्हीलर बनाता है।
- अट्रैक्टिव ग्रुप दुनिया भर के 20 से ज़्यादा देशों में हाई-क्वालिटी 2W और 3W ऑटो कंपोनेंट्स एक्सपोर्ट करता है।
- अट्रैक्टिव ग्रुप ने 30 डिस्ट्रीब्यूटर्स के मज़बूत ग्लोबल नेटवर्क के साथ, हर दिन 60,000 ट्यूब बनाने में सक्षम पूरी तरह से एक्सपोर्ट-ओरिएंटेड मैन्युफैक्चरिंग यूनिट लॉन्च करके एक विशेष उपलब्धि हासिल कि है।

attractive.export@gmail.com +91 8871009677 www.attractiveexport.com

जीवन वैभव पाठकों के
गौरवशाली 40 वर्ष पूर्ण होने
के अवसर पर हार्दिक
शुभकामनाएँ, अभिनंदन एवं
सादर धन्यवाद।

Sahita Construction Company

जीवन वैभव ज्योतिष त्रैमासिक पत्रिका जो कि जीवन की
समृद्धि के लिए गागर में सागर है–

प्रत्येक अंक में देश के सम्मानित एवं मूर्धन्य विद्वानों के शिक्षाप्रद आलेख समाविष्ट रहते है। इस पत्रिका की सदस्यता निम्नानुसार ले सकते है।

वार्षिक सदस्यता रु. 200 /- त्रैवार्षिक रु. 500 /-, आजीवन सदस्यता रु. 5000 /-

विगत तीन वर्ष के एक साथ सजिल्द अंक 450 रू.।

उपरोक्तानुसार सदस्यता ''जीवन वैभव'' के नाम से अरेरा कॉलोनी की इण्डियन बैंक के
खाता क्र. 50159870448, आईएफएससी कोड IDIB000B796
के अनुसार जमा कर रसीद की प्रति कार्यालय को प्रेषित करें।

- जीवन वैभव पत्रिका में विविध विषय जो कि परिवार एवं समाज के लिये उपयोगी है, इन विषयों पर सामग्री प्रकाशित की जाती है, ज्योतिष, चरित्र–निर्माण, योग, होम्योपैथी, आहार चिकित्सा, धर्म, अध्यात्म आदि। जीवन वैभव में स्थाई स्तंभ प्रत्येक अंकों में प्रकाशित होते हैं जो कि संग्रहणीय हैं।
- **'वंदना', अमृतवाणी , वैभवदर्शन , गीता माता , उचितआहार, चिकित्सा , धर्मिक शिक्षाप्रद जानकारी, ज्योतिष एवं स्वास्थ्य, व्रत पर्व, विविध मुहूर्त, त्रैमासिक भविष्यफल आदि जानकारी प्रत्येक अंक में उपब्ध रहती है।**
- महापुरूषों द्वारा दिए गए आर्शीर्वचन एवं सुखी जीवन के लिए अनमोल सुझाव पृथक से बाक्स के रूप में दिये जाते हैं जो पाठकों को लाभप्रद एवं रोचक लगते हैं।
- **जीवन वैभव का प्रत्येक अंक संग्रहणीय है, तथा जीवन वैभव के उपरोक्त पुराने उपलब्ध अंक कार्यालय से प्राप्त की जा सकती हैं।**

कार्यालय का पता *व्यवस्थापक* **जीवन वैभव**

15 ए. प्रेस काम्प्लेक्स, जोन–1 महाराणा प्रताप नगर, भोपाल म.प्र.
संपर्क : 9425008662, ईमेल : *hcp2002@gmail.com*

जीवन वैभव की सदस्यता हेतु क्या करें?

जीवन वैभव पत्रिका आपकी अपनी पत्रिका है, इसे आप जैसे प्रबुद्ध पाठकों ने सराहा और इसकी प्रगति के लिए मार्गदर्शन दिया है। आपसे निवेदन है कि वार्षिक/त्रैवार्षिक/आजीवन सदस्यता की वृद्धि कर प्रचार-प्रसार संख्या बढ़ाने में सहयोग करें। सद्ज्ञान का प्रचार-प्रसार करने से समाज में धनात्मक ऊर्जा का संचार होगा जो कि एक पुण्य कार्य है। अतः पुण्यकार्य में सहयोगी बनें।

अपने संस्थान का विज्ञापन दें

आप अपने संस्थान का विज्ञापन यदि इस त्रैमासिक एवं संग्रहणीय जीवन वैभव में देंगे तो लगातार तीन माह ही नहीं जब तक यह पत्रिका पाठक के पास सुरक्षित रहेगी, आपके संस्थान का स्मरण होता रहेगा। अतः शीघ्रता करें अपनी विज्ञापन निम्नलिखित पते पर प्रेषित करें।

अपने घर बैठे जीवन वैभव पत्रिका प्राप्त करें

जीवन वैभव पत्रिका प्राप्त करने के लिये आपको जीवन वैभव पत्रिका की सदस्यता हेतु आवेदन पत्र पत्रिका में से निकालकर अपना नाम पता स्पष्ट रूप से उल्लेख कर वार्षिक/त्रैवार्षिक अथवा आजीवन सदस्यता का निर्धारित शुल्क जीवन वैभव नाम से इलाहाबाद बैंक जोकि वर्तमान में इण्डियन बैंक है इसमें जीवन वैभव पत्रिका का

खाता नंबर 50159870448

खाते का नाम - जीवन वैभव

आय एफ एस सी कोड - IDIB000B796

ब्रांच कोड - 4197

MICR code - 462019018

के अनुसार खाते में राशि जमा कराकर उसकी स्लीप तथा अपना पता वाट्सएप कर देवें ताकि पत्रिका नियमित भेजी जा सके।

जीवन वैभव के सदस्यों से आग्रह

जिन सदस्यों के सदस्यता शुल्क राशि समाप्त हो गई है उनसे अनुरोध है कि उपरोक्त दर्शाए अनुसार जीवन वैभव के खाते में राशि जमाकर सदस्यता नियमित कर लें।

संपादक

जीवन वैभव

15-ए,महाराणा प्रताप नगर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, भोपाल

संपर्क: 9425008662; **ईमेल:** hcp2002@gmail.com

जीवन वैभव की सदस्यता हेतु आवेदन

नाम .....

डाक का पूरा पता .....

.....

.....

दूरभाष/मोबाईल .....

सदस्यता ..... आजीवन/ त्रैवार्षिक/ वार्षिक

सदस्यता शुल्क का विवरण **5000/- 500/- 200/-**

बैंक ड्राफ्ट क्रमांक ..... दिनाँक .....

चैक क्रमांक ..... दिनाँक .....

जीवन वैभव के नाम से इलाहाबाद बैंक अरेरा कॉलोनी शाखा भोपाल के खाता नं. 50159870448 में जमा की गई राशि की बैंक स्लिप की फोटो प्रति।

त्रैमासिक पत्रिका ''जीवन वैभव'' के बारे में आपकी राय:-

.....

.....

.....

.....

.....

पाठक के हस्ताक्षर

पता:

जीवन वैभव

15-ए,महाराणा प्रताप नगर

प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, भोपाल

संपर्क: 9425008662

ईमेल: hcp2002@gmail.com

नोट: उपरोक्त जानकारी डाक/कोरियर/ई-मेल द्वारा प्रेषित करें। ताकि जीवन वैभव की सदस्यता देते हुए आगामी अंक की प्रति प्रेषित की जा सके।

ज्योतिष प्रश्नोत्तरी कूपन

नाम : .....

पता : .....

जन्म तारीख : .....

जन्म समय : .....

जन्म स्थान : .....

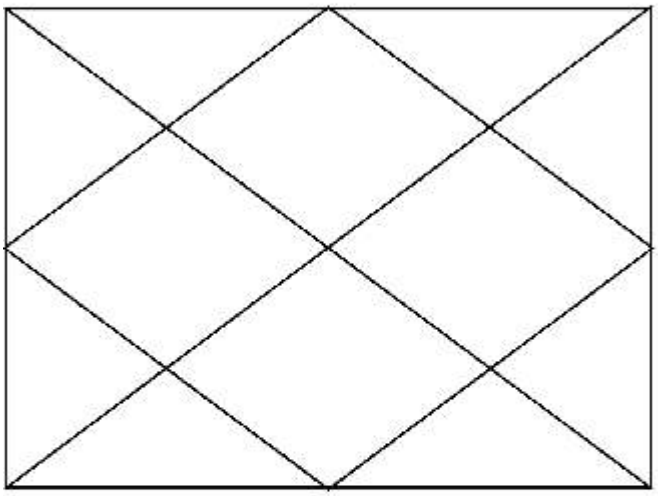

कोई एक प्रश्न .....

.....

.....

भवदीय

.....

जीवन मूल्य और नैतिक शिक्षा
लेखक - डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय
मूल्य 150 रुपये
अपनी प्रति सुरक्षित करावें-

फलित ज्योतिष शिक्षा के लिए
पाराशरी ज्योतिष फलित कोर्स
बेसिक कक्षा हेतु सम्पर्क करें
व्यवस्थापक जीवन वैभव
15 ए, प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी.नगर भोपाल, म.प्र.
मोबाईल- 9425008662

परिवार के सभी सदस्यों के लिए उपयोगी
एवं मार्गदर्शक पुस्तक

सुप्रभात की अमृतवाणी

मूल्य : 50/- केवल

शिक्षाप्रद-जीवनोपयोगी
सदुपदेशों पर आधारित पुस्तक
डाक/ कोरियर से जीवन वैभव
कार्यालय से प्राप्त करें।

ज्योतिष मित्र

ज्योतिष के प्रारंभिक ज्ञान के
लिए ज्ञानवर्द्धक पुस्तक है।
एक प्रति 150 रुपये + वी. पी. डाक/
कोरियर 50 रुपये इस प्रकार 200 रुपये
भेजकर अपनी प्रति आज ही प्राप्त करें।
लेखक - डॉ. पं. हेमचन्द्र पाण्डेय

व्यवस्थापक :
जीवन वैभव
15 ए, जोन-I, प्रेस कॉम्पलेक्स,
महाराणा प्रताप नगर, भोपाल

संपर्क : 9425008662
ईमेल : hcp2002@gmail.com

पाठकों से अपनी बात

सम्माननीय पाठक गण

सादर सहृदय हरिस्मरण

ईस्वी नववर्ष 2026 की शुभ कामनाएं देते हुए हमें प्रसन्नता है कि जीवन वैभव त्रैमासिक पत्रिका ने अपनी स्थापना के 40 वर्ष पूर्ण कर लिए हैं और यह अंक 41 वें वर्ष का प्रथम अंक जीवन वैभव अन्तर्राष्ट्रीय समारोह स्मारिका अंक के रूप में आपको प्रस्तुत है।

जीवन वैभव ने अपनी पिछली 40 वर्ष की यात्रा के बारेमें संक्षिप्त विवेचन करें तो प्रकाशन सम्बधित कई कठिनाइयां आई जिन्हे हल करने में आप जैसे पाठक वर्ग और सहयोगी मित्रों को श्रेय जाता है। मुद्रण करने के लिए हर पृष्ठ कंपोजिटर द्वारा हाथ से शब्दों की सेटिंग करते हुए एक एक पेज के ब्लाक को सेट करके छपाई करने के लिए प्रेस को प्रस्तुत करते हुए प्रकाशन किया जाता था। कठिनाई भरा यह कार्य होता था जिसमें समय का व्यय और श्रमाधिक लग जाता था।

नवम दशक के साथ कम्प्यूटर द्वारा सेटिंग होने पर थोड़ी राहत महसूस हुई लेकिन महंगाई बढ़ने से आर्थिक समस्याएं अधिक रही। किंतु हमारे विद्वान लेखक के उत्तम आलेख और विज्ञापन दाता के सहयोग और सम्पादक मण्डल द्वारा आत्मबल बढ़ाते रहने से ही निरंतरता बनी रही।

हमारे नियमित प्रबुद्ध पाठक वर्ग का बहुत बड़ा सहयोग रहा है क्योंकि जीवन वैभव में प्रकाशित आलेख का आकर्षण पाठक वर्ग को सराहनीय लगा है जोकि पाठकों की प्रतिक्रिया और सदस्यता की निरंतरता से स्पष्ट हैः भविष्य में भी बना रहेगा।

ज्ञान के निःस्वार्थ समाज को प्रेरित करने से समाज में धनात्मक उर्जा के संचरण का जीवन वैभव का संकल्प जारी रहेगा। आप सभी पाठक वर्ग का, लेखकों और सहयोगियों को इस नववर्ष की शुभ कामनाएं देते हए 41 वें वर्ष में जीवन वैभव परिवार की निरंतर विस्तार की शुभ कामनाएं।

आपका सदैव शुभेच्छु
डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय
संपादक, जीवन वैभव

अमृत घट

1. प्रिय वचन बोलने से सभी प्राणी प्रसन्न हो जाते हैं। इसलिए सदा प्रिय वचन ही बोलना चाहिए। बोलने में क्या दरिद्रता। **- चाणक्य**
2. अपने प्रति दूसरों के जिस व्यवहार को तुम पसंद नहीं करते, वैसा ही व्यवहार स्वयं भी दूसरों के प्रति मत करो। **-कन्फ्यूशियस**
3. महान बनने की सबसे पहली सीढ़ी नम्रता है,नम्रता वह अमोद्य अस्त्र है जो हमें सफलता की राह दिखाता है और मानव को देवता बना देता है। **- रस्किन**
4. संसार में जितने दुख है, सब क्षण स्थाई है। वे हमारी मूर्खता से पैदा होते हैं। जब तक हमें उनकी असलियत नहीं मालूम हो जाती, तभी तक हम उन पर काबू नहीं पा सकते। **-भगवान बुद्ध**
5. आपत्तियों से आदमी की परख होती है ,और महत्व प्रकट होता है। अतः धीरता से मुकाबला करो। **- गुरु नानक देव**
6. आवश्यकताएं कम करें। आवश्यकता जितनी कम होगी, उतना ही अधिक सुख होगा। **- स्वामी रामतीर्थ**
7. अपने माथे से झूठा कलंक का टीका हटाने,अपनी झूठी बदनामी को मिटाने का सबसे बड़ा इलाज यह है कि उससे बिना घबराए अपने सच्चे मार्ग पर चलता जाए। **-स्वामी विवेकानंद**
8. जीवन की सफलता संचित धन-राशि से न आकी जाकर उन कार्यों से आकी जाएगी जो समाज के कल्याण के विचार से किए गए हो। **- विनोबा भावे**
9. चाहे तुम्हारा काम कितना ही छोटा परिणाम निकलने वाला क्यों ना हो भगवान के नाम पर उसे अधूरा ना छोड़ो, उसे आखिरी नतीजे और मंजिल तक पहुंचा दो। उसे छोटा या तुच्छ न समझे। **- सरदार पटेल**

वैभव दर्शन

दूसरों की भूल देखने की प्रवृत्ति

स्व. श्री रामचन्द्र जी पाण्डेय
संस्थापक संपादक

वास्तव में यह विषय महत्वपूर्ण है। मनुष्य में यह एक कमजोरी है कि वह अपनी भूलों और गलतियों की ओर तो ध्यान नहीं देता लेकिन दूसरों के दोष का वर्णन करता है। - **संपादक**

दूसरों के दोष निकालना एक ऐसी कमजोरी है जिसके द्वारा मनुष्य अपनी कमजोरियों पर पर्दा डाले रखना चाहता है परंतु वह दोषपूर्ण है संभवतः इस प्रवृत्ति को उजागर करने के लिए ही संत कबीर ने कहा है-

बुरा जो ढूंढने को चला,बुरा न मिलता कोय।
जो दिल खोजा आपुना,मुझसे बुरा न कोय।।

कहने का आशय है कि हम दूसरों की भूले, बुराइयां देखने की बजाय अपने अतः करण में देखे कि हमारे अंदर कौन-कौन सी बुराइयां है कबीर ने अपनी बुराइयां पहले देखी एवं सुधारी।

वास्तव में विचारवान वे है, जो दूसरों की भूले न देखकर पहले स्वयं अपनी त्रुटियां, दोष एवं दुर्गुणों को निकालने का प्रयत्न करते हैं।

जिस प्रकार एक-एक बूंद से पाप का घड़ा भर जाता है उसी प्रकार थोड़ी-थोड़ी त्रुटि पूर्ण दोष युक्त बातों का समावेश होते रहने पर मनुष्य कुछ समय में पाप के पंक याने कीचड़ में डूबता जाता है। इस कारण सदैव ध्यान रखना चाहिए कि तनिक भी बुराई (दोष) को हमारे पवित्र मन जहां की प्रभु विराजमान है, नहीं आने देना चाहिए। जिससे हमारा मन मंदिर दूषित नहीं हो सके।

यदि कोई त्रुटि या भूल पहले हो गई है तो उसको लेकर अधिक पछताना, दिन भर दुखी रहना अपने को असहाय, पतित समझना छोड़कर भविष्य में ईमानदार, सच्चरित्रवान तथा नैतिकता से जीवन जीने का संकल्प लीजिए। परिस्थिति वश यदि त्रुटि हुई है तो उसे सुधार लीजिए।

भूल को स्वीकार करने से आत्म संतोष मिलेगा। भविष्य में आप उस मार्ग में नहीं जाएंगे। याद रखें आगे बढ़ने वाला व्यक्ति कभी भी पीछे पलट कर नहीं देखता है।

एक विद्वान ने कहा है कि आप कठिनाइयों से बचना या छुटकारा प्राप्त करना चाहते हैं तो अपने भीतर दोषों को ढूंढ निकालिए और उन्हें नष्ट कर बाहर निकालने में जुट जाइए। दुर्गुण रूपी कांटों को हटाकर उनके स्थान पर अपने हृदय उद्यान में सद्गुणों के पुष्प वाले पौधों को बोईये।

जिस अनुपात में आप यह कार्य कर सकेंगे, उसके अनुसार ही आप विपत्ति से छूटकर स्थाई उन्नति की ओर अग्रसर होते जाएंगे।

इसी कारण आप अपने आपको पहचाने एवं एक-एक करके अपनी भूलों को सुधारते हुए एक अच्छे मानव के रूप में समाज में अपनी पहचान बनाए।

धर्माचार्य पं. गंगाप्रसाद शास्त्री
परमशक्ति ज्योतिष परामर्श केन्द्र भोपाल

ज्योतिष शास्त्र के योगों पर दृष्टि

वेदांग के छः शास्त्रों, मे से ज्योतिषशास्त्र चक्षु, यानी नयन है। जोकि हमें जीवन पथ में आगे अग्रसर होने के लिए पथ प्रशस्त करता है तथा अपने कर्मों की ओर प्रेरित करने में सहयोग करता है । कुछ शुभ योग जोकि मनुष्य की कुण्डली में प्राप्त होकर जीवन में कुछ कर गुजरने का मन बनाते और क्रियान्वित करवाते है उन चुनिन्दा योगों की जानकारी निम्नानुसार है।

ज्योतिष शास्त्र में अनेक योगों के, उल्लेख प्राप्त होते, है, जिनका मानव जीवन पर निश्चित रूप से प्रभाव पड़ता है। कतिपय योगो, के नाम, एवं योग कुंडली में कैसे बनते हैं तथा इनका प्रभाव का वर्णन निम्न प्रकार से समझे।

(1) गजकेसरी योग, यह योग कुंडली में चंद्रमा से केंद्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है और चंद्रमा नीच,अस्तादि, न,हो, शुक्र गुरु और बुध, की दृष्टि पढ़ती हो तो भी गजकेसरी योग होता है।

गजकेसरी योग का प्रभाव, इस योग मे, उत्पन्न जातक धनी मेधावी गुणी एवं राजा का प्रिय, शुभ कर्म करने वाला होता है।

(2) अमला योग, जन्म लग्न, से व चंद्रमा से, दशम स्थान में केवल शुभ ग्रह हो तो अमला योग होता है।

अमला योग में उत्पन्न जातक की कीर्ति जब तक चंद्रमा आकाश में रहेगा तब तक रहती है एवं राजा से पूज्य, महाभोगी दाता, और बन्धुओ का प्रिय होता है।

(3) शुभ योग, शुभ कर्तरी, यदि लग्न में शुभ ग्रह युत हो तो, शुभ योग होता है जिसे शुभ कर्तरी भी कहते हैं एवं लग्न कुंडली में,12/2, भाव में स्थित शुभ ग्रह होने पर, शुभ योग शुभ कर्तरी होता है जिसका फल जातक बुद्धिमान, रूप, शील, गुण, से युक्त होता है।

यदि लग्न में पाप ग्रह युत, हो, अशुभ,योग, होता है,एवँ,(12/2) भाव में पाप ग्रह हो तो पाप कर्तरी अशुभयोग होता है, जिसका प्रभाव इस योग में उत्पन्न जातक कामी, पाप कर्म करने वाला, होता है।

(4) पर्वतयोग, यदि सातवें आठवें भाव में कोई ग्रह न हो, अथवा शुभ ग्रह से युत, हो, और केन्द्रों में, शुभ ग्रह हो तो पर्वत योग बनता है, लग्नेश और,व्ययेश, परस्पर केंद्र में हो और मित्र ग्रह से देखे, जाते हो तो पर्वत योग होता है।

इस योग में उत्पन्न जातक भाग्यवान विद्वान और दाता, होता है।

(5) शारदायोगः,योगः,शारदसँज्ञकः
सुतगते, कर्माधिपे, चंद्रजे,
केंद्रस्थे,दिननायके,निजगृह
प्राप्तेह्यवीर्यान्विते।
चंद्रात्कोणगते, पुरंदरगुरौ,
सौम्यत्रिकोणे,कुजे,लाभे,वा
यदि,देवमन्त्रिणि,बुधात्तच्छारदासँज्ञकः,।।
स्त्रीपुत्रबंधुसुखरूपगुणानुरक्ताः
भूपप्रिया, गुरुमहीसुरदेवभक्त्ताः।
विद्याविनोदरतिशीलतपोबलाढ्याः,जाताः
स्वधर्मनिरता,भुवि, शारदाख्ये।।

उपरोक्त श्लोक का अर्थ, शारदा योग, यदि पांचवे भाव में कार्मेश हो,बुध, केंद्र में हो और सूर्य अपनी राशि में अत्यंत बली हो अथवा चंद्रमा से,9/5, भाव में गुरु हो,बुध,से,त्रिकोण,मे,भौम,हो,बुध,से,लाभ,भाव,मे, गुरु हो तो शारदा योग होता है।

शारदा योग में उत्पन्न जातक विद्या का विनोदी,कामी,शीलवान, तपस्वी अपने धर्म में निरत, स्त्री पुत्र बंधु के सुख से युक्त एवं राजा का प्रिय गुरु ब्राह्मण देवता का भक्त होता है।

आवासीय वास्तु और ग्रह का प्रभाव

पं. पंकज शर्मा पाटन वाले
राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारतीय
ज्योतिष एवं वास्तु एसोशियशन

वास्तु विद्या को जिस तरह से बहुत साधारण समझा जाता है उतनी साधारण यह विद्या नहीं है सिर्फ चार कोने देख लेना और वास्तु पर गणना करना यह सही नहीं है सही तरीके से सही मायने में कुंडली और उसमें स्थित ग्रह आपके घर आपकी दुकान फैक्ट्री मकान का नक्शा बताते हैं नौ ग्रह से मिलकर एक घर बनता है चारों दिशाएं चारों कोने एवं आकाश एवं पाताल का सम्मिश्रण करके वास्तु गणना की जाती है प्रत्येक ग्रह का धरती पर किसी भी निर्माण में अपना स्थान होता है जब ब्रह्मा जी ने वास्तु पुरुष को धरती पर स्थान दिया एवं प्रत्येक ग्रह से कहा आप लोग अपना अपना स्थान चुन लीजिए इस तरह से नौ ग्रह उस वास्तु पुरुष के उल्टे लेटे हुए चित्र पर स्थापित हो गए और अपना-अपना फल देने लगे जिस तरह से बृहस्पति देव मंगल कार्य शुभ कार्य एवं तरक्की के प्रतीक माने जाते हैं शुक्र देव भौतिक समृद्धि महिलाएं एवं शारीरिक व्यवस्था को दर्शाती है मंगल ग्रह आपकी आर्थिक स्थिति कर्ज एवं ब्लड से संबंधित दोष देता है यदि उसकी निर्धारित दिशामें अग्नि ; विद्युत यंत्र आदि को स्थापित नही किया जावे। इसी तरह से सभी ग्रहों का अपना फल होता है और ग्रह आपके घर ;दुकान; मकान; फैक्ट्री आरि में अपने स्थान पर (बैठते) स्थापित रहते हैं उस स्थान पर अन्य कोई ग्रह आ जाता है तो वास्तु दोष पैदा हो जाता है और उसके विपरीत फल मिलने लग जाता है अत: जब कभी भी वास्तु पर गणना करनी हो फल करना हो तो ग्रह की जानकारी एवं उनका चरित्र जरूर जान लेना चाहिए।

वह वास्तुविद ही श्रेष्ठ वास्तुविद कहलाता है जो कुंडली के अनुसार आपके आवास में आवश्यक गणना भी जानता हो ताकि ग्रहों की प्रकृति के अनुसार उपकरण वस्तुएं आदि भवन में स्थिर कर सके ;बगैर कुंडली की गणना के चाहे वह टैरो ; हस्तरेखा ; फेस रीडिंग हो या अंक शास्त्र हो किसी भी गणना में उतनी सफलता नहीं मिल पाती है जब तक की आप जन्म कुंडली के ग्रहों नक्षत्रों की जानकारी नहीं रखते हो ।

ग्रह की जानकारी नहीं रखते हैं अत: गणना एवं गृह फल उसके लिए भी आपके ईष्ट को प्रबल करना बहुत जरूरी होता है आपका ईष्ट प्रबल है आपके गुरु का आशीर्वाद है आपके पूर्वजों का आशीर्वाद है तो आप आध्यात्म में जो समृद्धि पाएंगे या आध्यात्मिक क्षेत्र में जो स्थान आपको मिलेगा वह अति श्रेष्ठ कहलाएगा यह सब आपको अपने ईशान्य कोण में स्थित आपकी आराधना का फल होगा।

ज्योतिष गणना में आयु निर्धारण : एक जीवन-कथा

आचार्य अजय कुमार मिश्र
(ज्योतिषाचार्य, काशी)

काशी की प्राचीन ज्योतिष परंपरा में जब भी किसी जातक की कुंडली खोली जाती है, तो सबसे पहला प्रश्न यही उठता है— 'यह जीवन कितनी दूर तक जाएगा?'

महर्षि पराशर का यह वचन केवल श्लोक नहीं, अपितु ज्योतिष का मूल सिद्धांत है—

'आयुषः प्रथमं कार्यं पश्चाद् अन्यफलं वदेत्।'

अर्थात् आयु का विचार किए बिना अन्य फल कथन अधूरा है।

शास्त्रों ने मानव जीवन को अल्पायु, मध्यायु और दीर्घायु—इन तीन पथों में विभक्त किया है। कोई जीवन शीघ्र पूर्ण हो जाता है, कोई मध्यम समय तक चलता है और कोई दीर्घ यात्रा करता है। यह विभाजन भाग्य का अंतिम निर्णय नहीं, बल्कि संभावनाओं का संकेत है।

इस संभाव्यता का प्रथम द्वार लग्न है। लग्न जीवन का प्रवेश-द्वार है और अष्टम भाव उसकी अवधि का रहस्य-गृह। जब लग्नेश बलवान होता है और अष्टमेश दुर्बल, तब जीवन स्वयं अपनी रक्षा करता है। पराशर स्पष्ट कहते हैं कि ऐसे योग में जातक दीर्घायु होता है। इसके विपरीत स्थिति जीवन को संक्षिप्त कर देती है।

जीवन केवल शरीर नहीं, उद्देश्य भी है। त्रिकोण भाव—धर्म, बुद्धि और भाग्य—जीवन के स्तंभ हैं। जब ये सुदृढ़ हों, तो जीवन की इमारत स्थिर रहती है। इसी कारण मन्थेश्वर ने त्रिकोणेशों के बल को आयु निर्धारण का प्रमुख आधार बताया है।

इसके बाद दृष्टि जाती है चंद्र पर, जो प्राण और मन का प्रतीक है। दुर्बल शरीर वाला व्यक्ति भी यदि चंद्र से बलवान हो, तो कठिन परिस्थितियों में जीवन को थामे रखता है। वहीं सूर्य, जो आत्मा और जीवन-शक्ति का कारक है, जीवन में तेज और संकल्प प्रदान करता है। सूर्यहीन कुंडली में जीवन की अग्नि मंद पड़ जाती है।

जब अनुभव और दृष्टि भ्रमित करें, तब अष्टकवर्ग गणना के रूप में सत्य बोलता है। लग्न और अष्टम के बिंदु जीवन की अवधि का गणितीय संकेत देते हैं। अधिक बिंदु दीर्घायु और न्यून बिंदु अल्पायु की ओर संकेत करते हैं।

इस सम्पूर्ण कथा में ग्रह पात्रों की भाँति कार्य करते हैं—शनि मृत्यु का द्वारपाल है, गुरु जीवन का रक्षक, शुक्र दीर्घायु का वरदाता और मंगल आकस्मिक संकट का सूचक। अंतत: कहानी का निर्णायक अध्याय दशा-भुक्ति में खुलता है, जहाँ मारकेश और अष्टमेश की दशाएँ जीवन की कसौटी बनती हैं। फिर भी, वैदिक ज्योतिष का उद्देश्य मृत्यु का भय दिखाना नहीं, बल्कि जीवन को समझाना है। आयु निर्धारण चेतावनी है, दैव-विधान नहीं। यही शास्त्रों की करुणा है और यही काशी की ज्योतिष परंपरा का धर्म।

नक्षत्र से रोग विचार तथा उपाय

ज्यो. शैलेन्द्र सिंगला
पलवल हरियाणा

भारतीय ज्योतिष शास्त्र में नक्षत्र के अनुसार रोगों का वर्णन किया गया है। व्यक्ति के कुंडली में नक्षत्र अनुसार रोगों का विवरण निम्नानुसार है। आपके कुंडली में नक्षत्र के अनुसार संभावित रोग और उसके बचाव के लिए उपाय करके रोगों से मुक्त होकर स्वस्थ्य रहने का प्रयास कर सकते है।

अश्विनी नक्षत्र जातक को वायुपीड़ा, ज्वर, मतिभ्रम आदि से कष्ट।

उपाय : दान पुण्य, दिन दुखियों की सेवा से लाभ होता है।

भरणी नक्षत्र जातक को शीत के कारण कम्पन, ज्वर, देह पीड़ा से कष्ट, देह में दुर्बलता, आलस्य व कार्य क्षमता का अभाव।

उपाय : गरीबोंकी सेवा करे लाभ होगा।

कृतिका नक्षत्र जातक आँखों सम्बंधित बीमारी, चक्कर आना, जलन, निद्रा भंग, गठिया घुटने का दर्द, ह्रदय रोग, घुस्सा आदि।

उपाय : मन्त्र जप, हवन से लाभ।

रोहिणी नक्षत्र ज्वर, सिर या बगल में दर्द, चित्य में अधीरता।

उपाय : चिर चिटे की जड़ भुजा में बांधने से मन को शांति मिलती है।

मृगशिरा नक्षत्र जातक को जुकाम, खांसी, नजला, से कष्ट।

उपाय : पूर्णिमा का व्रत करे लाभ होगा।

आर्द्रा नक्षत्र जातक को अनिद्रा, सिर में चक्कर आना, अधासीरी का दर्द, पैर, पीठ में पीड़ा।

उपाय : भगवान शिव की आराधना करे, सोमवार का व्रत करे, पीपल की जड़ दाहिनी भुजा में बांधे लाभ होगा।

पुनर्वसु नक्षत्र जातक सिर या कमर में दर्द से कष्ट।

उपाय: रविवार को पुष्य नक्षत्र में आक का पौधा की जड़ अपनी भुजा मर बांधने से लाभ होगा।

पुष्प नक्षत्र जातक निरोगी व स्वस्थ होता है। कभी तीव्र ज्वर से दर्द परेशानी होती है, कुशा की जड़ भुजा में बांधने से तथा पुष्य नक्षत्र में दान पुण्य करने से लाभ होता है।

अश्लेश नक्षत्र जातक का दुर्बल देह प्राय: रोग ग्रस्त बना रहता है, देह में सभी अंग में पीड़ा, विष प्रभाव या प्रदुषण के कारण कष्ट।

उपाय : नागपंचमी का पूजन करे, पटोल की जड़ बांधने से लाभ होता है।

मघा नक्षत्र जातक को अर्धसीरी या अर्धांग पीड़ा, भुत पिचाश से बाधा।

उपाय : कुष्ठ रोगी की सेवा करे, गरीबोंको मिष्ठान खिलाये।

पूर्व फाल्गुनी जातक को बुखार,खांसी, नजला, जुकाम, पसली चलना, वायु विकार से कष्ट।

उपाय : पटोल या आक की जड़ बाजु में बांधे, नवरात्रों में देवी माँ की उपासना करे।

उत्तर फाल्गुनी जातक को ज्वर ताप, सिर व बगल में दर्द, कभी बदन में पीड़ा या जकडन।

उपाय : पटोल या आक की जड़ बाजु में बांधे, ब्राह्मण को भोजन कराये।

हस्त नक्षत्र जातको पेट दर्द, पेट में अफारा, पसीने से दुर्गन्ध, बदन में वात पीड़ा आक या जावित्री की जड़ भुजा में बांधने से लाभ होगा।

चित्रा नक्षत्र जातक जटिल या विषम रोगों से कष्ट पता है। रोग का कारण बहुधा समज पाना कठिन होता है। फोड़े फुंसी सुजन या चोट से कष्ट होता है।

उपाय : असंगध की जड़ भुजा में बांधने से लाभ होता है, तिल चावल जौ से हवन करे।

स्वाति नक्षत्र वाट पीड़ा से कष्ट, पेट में गैस, गठिया, जकडन से कष्ट।

उपाय : गौ तथा ब्राह्मणों की सेवा करे, जावित्री की जड़ भुजा में बांधे।

विशाखा नक्षत्र जातक को सर्वांग पीड़ा से दु:ख, कभी फोड़े होने से पीड़ा।

उपाय : गूंजा की जड़ भुजा भुजा पर बांधना, सुगन्धित वास्तु से हवन करना लाभ दायक होता है।

अनुराधा नक्षत्र जातक को ज्वर ताप, सिर दर्द, बदन दर्द, जलन, रोगों से कष्ट,

उपाय : चमेली, मोतिया, गुलाब की जड़ भुजा में बांधना से लाभ।

जेष्ठा नक्षत्र जातक को पित्त बड़ने से कष्ट,देह में कम्पन, चित्त में व्याकुलता, एकाग्रता में कमी, कम में मन नहीं लगना।

उपाय : चिरचिटे की जड़ भुजा में बांधने से लाभ। ब्राह्मण को दूध से बनी मिठाई खिलाये।

मूल नक्षत्र जातक को सन्निपात ज्वर, हाथ पैरों का ठंडा पड़ना, रक्तचाप मंद, पेट गले में दर्द अक्सर रोगग्रस्त रहना।

उपाय : 32 कुओं (नालों) के पानी से स्नान तथा दान पुण्य से लाभ होगा।

पूर्वाषाढ़ नक्षत्र जातक को देह में कम्पन, सिर दर्द तथा सर्वांग में पीड़ा। सफ़ेद चन्दन का लेप, आवास कक्ष में सुगन्धित पुष्प से सजाये। कपास की जड़ भुजा में बांधने से लाभ।

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र जातक संधि वात, गठिया, वात शूल या कटी पीड़ा से कष्ट, कभी असहय वेदना।

उपाय : कपास की जड़ भुजा में बांधे, ब्राह्मणों को भोज कराये लाभ होगा।

श्रवन नक्षत्र जातक अतिसार, दस्त, देह पीड़ा ज्वर से कष्ट, दाद, खाज खुजली जैसे चर्म रोग कुष्ठ, पित्त, मवाद बनना, संधि वात, क्षय रोग से पीड़ा।

उपाय : अपामार्ग की जड़ भुजा में बांधने से रोग का शमन होता है।

धनिष्ठा नक्षत्र जातक मूत्र रोग, खुनी दस्त, पैर में चोट, सुखी खांसी, बलगम, अंग भंग, सुजन, फोड़े या लंगड़े पण से कष्ट।

उपाय : भगवान मारुती की आराधना करे ,गुड चने का दान करे।

शतभिषा नक्षत्र जातक जलमय, सन्निपात, ज्वर, वातपीड़ा, बुखार से कष्ट। अनिंद्रा, छाती पर सुजन, ह्रदय की अनियमित धड़कन, पिंडली में दर्द से कष्ट।

उपाय : यज्ञ, हवन, दान, पुण्य तथा ब्राह्मणों को मिठाई खिलानेसे लाभ होगा।

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र जातक को उल्टी या वमन, देह पीड़ा, बैचेनी, ह्रदय रोग, टकने की सुजन, आंतो का रोग से कष्ट होता है।

उपाय : भृंगराज की जड़ भुजा में भुजा पर बांधे, तिल का दान करने से लाभ होता है।

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र जातक अतिसार, वातपीड़ा, पीलिया, गठिया, संधिवात, उदरवायु, पाव सुन्न पड़ना से कष्ट हो सकता है।

उपाय : पीपल की जड़ भुजा पर बांधने से तथा ब्राह्मणों को मिठाई खिलाये लाभ होगा।

रेवती नक्षत्र जातक को ज्वर, वात पीड़ा, मति भ्रम, उदार विकार, मादक द्रव्य सेवन से उत्पन्न रोग किडनी के रोग, बहरापन, या कण के रोग पाव की अस्थि, मासपेशी खिचाव से कष्ट।

उपाय : पीपल की जड़ भुजा में बांधे लाभ होगा।

समस्त बाधाओं का हरण कर लेती है शिवजी की महाकाल की नगरी उज्जैन

आचार्य के.आर.उपाध्याय

वैदिक और वैज्ञानिक कारण....

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार उज्जैन कर्क-रेखा पर स्थित है... और कर्क राशि कुंडली में चतुर्थ भाव (सुख व ऐश्वर्य का कारक) माना जाता है..... एवं इसका प्रतिनिधित्व चंद्रमा (यानि मन) को माना जाता है..... इससे प्रमाणित होता है कि उज्जैन नगरी मन की ऐकाग्रता का केन्द्र है..... और चतुर्थ भाव (कर्क रेखा) पर होने के कारण... सुख व ऐश्वर्य में बाधा पहुंचाने वाले ज्योतिष के दोष जैसे.... पित्रदोष, विषदोष, अमावस्या दोष, अंगारक मंगल दोष, ग्रहणदोष, या कालशर्प दोष आदि के शमन के लिऐ किऐ जाने वाले प्रायश्चित अनुष्ठानों के लिए महाकाल की नगरी (उज्जैन) सर्वश्रेष्ठ स्थान है।। यहाँ किया गया अनुष्ठान अवस्य ही मनोवांछित फल प्रदान करता है।।

वैदिक-तंत्र- अनुष्ठान- कर्मकांड एवं ज्योतिषीय दोषों की शांति के अनुष्ठान (प्रायश्चित कर्मों) आदि में सर्वश्रेष्ठ फलदायी क्यों है अवन्तिका (उज्जैन) महाकाल की नगरी।।

उज्जैन को प्रतिदिन 'तिल भर' बड़ा होने का गौरव प्राप्त है, यहां की गई कोई भी वैदिक या तांत्रिक पूजन करने वाले को शिव परिवार की कृपा के साथ ही अन्य देवी-देवताओं का भी आशीर्वाद प्राप्त होता है, एवं तुरन्त शुभ फल प्राप्त होता है।ऐसा ग्रंथों में उल्लेख है प्रत्यक्ष अनुभव भी होता है ।।

वैदिक और तंत्र के अनुष्ठान, कर्मकांड एवं ज्योतिषीय गणना करने में तीर्थ नगरी उज्जैन का सर्वोच्च स्थान हैं।

माँ क्षिप्रा की गोद में बसा उज्जैन नगरहै , जिसके राजा स्वयं बाबा 'महाकाल' हैं,

यहाँ वेदोक्त-शास्त्रोक्त-तांत्रोक्त पद्धति से किये जाने वाले अनुष्ठान, पूजन, जाप, अभिषेक, हवन-यज्ञादि, साधना-सिद्धि, तंत्र-मंत्र-यंत्र से शत-प्रतिशत अभीष्ट व् मनचाहे फल प्राप्त होता हैं।

उज्जयिनी के पंडितों, आचार्यों, तंत्रज्ञों, शास्त्रियों एवं ज्योतिषियों आदि का सम्मान पूरे विश्व में किया जाता हैं यहाँ के पंडितों ने पूरे भारत वर्ष में समय समय पर अपना लोहा मनवाया हैं।

यहाँ के ज्ञाताओं विद्वानों का पुराणों में उल्लेख हैं भगवान कृष्ण के गुरू संदीपनी ऋषी, औघड़ पंथ से महाराज भर्तृहरि व विक्रम संवत के आरंभकर्ता राजाविक्रमादित्य, महान गणितज्ञ वाराहमिहिर, से लेकर अभी भी असंख्य विद्वानों की तपस्या का चमत्कारी प्रभाव यहाँ पग-पग पर दृष्टिगोचर होता है।

खगोलीय एवं ज्योतिषीय केंद्र बिंदु (कर्क रेखा) होने के कारण ये नगरी..... काल गणना, ज्योतिष, और औघडीय तंत्र आदि में उज्जैन का स्थान सर्व प्रथम आता हैं। और यहाँ आज भी इन विषयों के विद्वानों की भरमार है।।

नागतीर्थ :-महाकाल ज्योतिर्लिंग के ठीक ऊपर ही नागतीर्थ मंदिर है जो सिर्फ नागपंचमी के दिन ही जनदर्शन के लिए खुलता है।।

*अवंतिका(उज्जैन) खंड में नागतीर्थ का भी उल्लेख है, चूंकि जन्मेजय के नाग सत्र के बाद जरकतारू पुत्र आस्तिक मुनि के द्वारा नाग सत्र रोका गया था और उनका स्थान परिवर्तित किया गया था, उसमें महाकाल वन की कई सीमा ली गई थी, यह भी एक कारण है कि यहां की गई पूजा सफल होती है। उज्जैन नागों का

शरण स्थली भी रहा है, इसलिए यहां नाग पूजा यानि....

(काल सर्प या सर्पदोष अथवा विषयोग आदि) की मान्यता शास्त्रों में वर्णित है तथा इन योगों में जन्म लेने वालों को आशातीत लाभ अवस्य होता है।।

भैरव नाथ तीर्थ :-इस नगरी में 'काल-भैरव' का सबसे जाग्रत और चमत्कारी स्थान है... जिसका तांत्रिक अनुभव पूरे विस्व के साधक स्वयं.. शराब (मद्य) ... इस मूर्ती को दिनभर हजारों बोतल पिलाकर करते हैं। और आज तक कोई वैज्ञानिक इसका रहस्य नहीं खोज पाऐ है।

'काल-भैरव' के क्षेत्र में तंत्र साधना पूर्ण एवं तुरन्त सफल होती हैं..... प्रेत-बाधाओं से पीडित मनुष्यों को यहाँ पर तंत्र-पूजन विधि से साधक सहज ठीक कर सकते हैं।।

पितृ-तीर्थ(सिद्धवट) :-इस स्थान पर पितृदोष, पितृश्राप, पिंडदान, नागवली, काल सर्प, एवं पितरों के निमित्त किये गये श्राद्यकर्म ... शतप्रतिशत पितरों को स्वीकार होते हैं... और इन बाधाओं से मुक्त होकर उन्नति का मार्ग खुलता है।।

मंगलनाथ तीर्थ :-मंगल ग्रह का जन्म स्थान यही पर है (अंगारक महादेव)।। इस स्थान पर कुंडली के... मांगलिक दोष, अंगारक योग, शुक्र-मंगल जनित योग, अथवा वैवाहिक बाधाओं के लिऐ ... प्रति मंगलवार हजारों लोग... मंगल शान्ति, नवग्रह पूजन और देवी पूजन करने के बाद ... भात-लेपन विधी से 'भात पूजा' करते हैं और सभी को विवाह दोषों में शांन्ति मिलती है।। तथा जमीन (प्रापर्टी) से जुडी समस्या व मनोकामना पूर्ति होती है।।

मंगल का एकमात्र 'तीर्थ स्थान' उज्जैन में ही है।।

इसके अलावा इस नगरी में कई दुर्लभ महाशक्तियों के चमत्कारी स्थान हैं जैसे...महाकाल(ज्योतिर्लिंग), काल भैरव, हरिसिद्धी (शक्तीपीठ), चिन्ता-हरण गणेश , भर्तृहरि गुफा, ऋण मुक्तेश्वर व गढ़कालिका जैसे औघड़ पंथी साधकों के तांत्रिक स्थान भी है।

कुल मिलाकर जो भी कुंडली के दोष और तंत्र की बाधाऐं कहीं पर शांत ना हो रहीं हों.... वो महाकाल की नगरी में अवश्य शांत हो जाती हैं।

वैज्ञानिक आधार- इसीलिए भी क्योंकि यह नगरी... खगोल - भूगोल के अनुसार ठीक कर्क-रेखा पर है और पृथ्वी का केन्द्र भी माना जाता है यहाँ कुछ समय के लिऐ आपकी परछाँई भी गायव हो जाती है। यहाँ पर तंत्र के तो हजारों चमत्कार आज भी विज्ञान की पहुच से बाहर हैं।।

जय महाकाल, जय कालभैरव, जय काल भैरवी ।।

विशेष :- *अत: अवन्तिका (उज्जैन) नगरी में....काल सर्प दोष, पितृ दोष, पितृश्राप, मांगलिक दोष, अंगारक दोष, ग्रहण दोष, विष योग आदि कुंडली के दूषित योगों की शान्ति करने का सर्वाधिक फल प्राप्त होता है। तथा तंत्र क्रियाओं द्वारा पीडित लोगों को भी इस तंत्र नगरी में.... आसानी से उपचार किया जाता है.. विभिन्न सिद्धियों व साधनाओं के लिऐ हजारों औघड़ साधक इस नगरी का आसरा लेते है क्षिप्रा नदी के किनारे .... हर समय.... साधना-पूजन करते... हजारों औघड़ नजर आते हैं।

ज्योतिष एवं वास्तु परामर्श

ग्रहों के अरिष्ठ प्रभाव के निवारण हेतु ज्योतिष एवं वास्तु परामर्श के लिए

डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय

बी-14, सुरेन्द्र गार्डन, होशंगाबाद रोड, भोपाल
फोन : 0755-2418908, मो.: 9425008662
समय प्रात: 9:30 बजे से 11:30 बजे तक
ईमेल : hcp2002@gmail.com

परामर्श के लिए पूर्व समय लेना आवश्यक :

सुखमय दाम्पत्य जीवन और ज्योतिष

श्री एस.एस. लाल, आई.पी.एस
से.नि डायरेक्टर जनरल पुलिस

*आज के समय में पारिवारिक तनाव जिसमें पति-पत्नी के वैचारिक मतभेद बहुत बढ़ते जा रहे हैं। इसके दृष्टिगत रखते हुए हमारे विद्वान लेखक श्री एस.एस. लाल ने अपने अन्वेषणात्मक लेख से सुखमय दाम्पत्य जीवन के ग्रह योग स्पष्ट किए हैं। पाठकों की जानकारी के लिए अक्षरशः यहां प्रस्तुत किए जा रहे हैं:- **सम्पादक***

पतिव्रता योग- दांपत्य सुख में यह योग बड़ा दुर्लभ योग माना जाता है। पति के अनुकूल आचार व व्यवहार करने वाली स्त्री पतिव्रता कहलाती हैं। इस योग का विचार पुरुष एवं स्त्री दोनों की कुंडली से किया जाता है। पतिव्रता व शालीन स्वभाव की स्त्री चाणक्य के अनुसार घर को स्वर्ग बना देती है। यहां निम्नलिखित कुछ योग बताए जा रहे हैं जिनको देखकर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि कौन सी स्त्री पतिव्रता होगी। पाठकगण निम्न योगों के अतिरिक्त अन्य शुभ योगों को भी फलित करते वक्त ध्यान में रखें तो सटीक फलित संभव होगा-

1. जिसकी कुंडली में सप्तम स्थान में शुक्र के नवांश में मंगल हो तथा उसे शुभ ग्रह देखते हों तो इस योग में उत्पन्न स्त्री पति की सेवा में तत्पर रहती है।

2. जिसकी कुंडली में सप्तम स्थान में गुरु तथा चतुर्थ भाव में शुक्र हो वह स्त्री पतिव्रता होती है।

3. लग्नेश एवं शुक्र साथ-साथ हों तथा इन पर गुरु की दृष्टि हो तो इस योग में उत्पन्न स्त्री अपने पति की आज्ञाकारी होती है।

4. सप्तमेश बलवान होकर गुरु के साथ हो तथा चतुर्थेश दो शुभ ग्रहों के बीच में हो तो इस योग में उत्पन्न में स्त्री धार्मिक स्वभाव वाली होती है।

5. सप्तमेश गुरु के साथ हो तथा सप्तम स्थान में गुरु हो और इस पर बुध या शुक्र की दृष्टि हो तो इस योग में उत्पन्न होने वाली स्त्री पति परायण होती हैं।

निम्न स्थितियों में जातक को दांपत्य जीवन से संबंधित परेशानियों एवं संकट का सामना करना पड़ता है-

1. भाव 7, सप्तमेश एवं कारक ग्रह अशुभ एवं अकारक ग्रहों के प्रभाव में हो तथा पाप ग्रहों के मध्य में हो।

2. सप्तमेश एवं भाव 7 का कारक नीचस्थ, सूर्य से अस्त या राशि संधि में हो।

3. भाव 7 एवं भाव 7 का कारक 6, 8 या 12 वे भाव में अशुभ स्थिति में हो।

4. अष्टक वर्ग में सप्तमेश एवं 7 भाव कारक को न्यून शुभ बिंदु (1,2,या 3) प्राप्त हो।

5. सप्तमेश एवं सप्तम भाव कारक विपत नक्षत्र (3) प्रत्यरी नक्षत्र (5) एवं वध नक्षत्र (7) में स्थित हो।

6. सप्तमेश एवं सप्तम भाव कारक नीचाभिलाषी हो। अन्य वर्गों (नवमांश, द्रष्कोण, सप्तमांश, त्रिशांश आदि) में निर्मल अवस्था में हो। अन्य योगों में ग्रहों एवं भाव के पीड़ित होने के कारण वे निर्बल हो जाते हैं तथा दांपत्य जीवन संबंधी अशुभ फलों की प्राप्ति का संकेत करते हैं।

अविवाहित रहने का प्रमुख कारण एवं ग्रह योग

सन्यास, निर्धनता एवं बेरोजगारी, उच्चाभिलासिता, तारीख की प्रति पूर्ण समर्पण, प्रेम प्रसंगों में विफलता इत्यादि है। उक्त प्रत्यक्ष कारणों के मूल में ज्योतिषीय कारण होते हैं, जो जातक को अविवाहित बनाते हैं। जातक को अविवाहित रखने के प्रमुख ज्योतिषीय कारण निम्नानुसार है-

1. पंचमेश नीच राशिगत, शत्रुक्षेत्री, अस्त या 6,8 विकास 12 भाव में स्थित हो, अविवाहित रहने का योग होता है।

2. यदि क्रूर ग्रह पंचम, अष्टम और द्वादश भावों में स्थित हो तथा विवाह कारक अन्य योगों के न होने पर जातक अविवाहित जीवन व्यतीत करता है।

अविवाहित किस दिशा में सोए, जिससे शीघ्र विवाह हो

अविवाहित युवक हो या युवती जिसका विवाह नहीं हो रहा है और अनेक बाधाएं आ रही हैं, उन्हें घर के नेऋत्य कोण अर्थात दक्षिण पश्चिम दिशा वाले कौन में सोना चाहिए इससे शीघ्र विवाह योग बनेंगे। यदि किसी परिवार में अलग

से कमरा ना हो तो वह नेऋत्य कोण वाली जगह में सोए और लाभ उपाय। कुंवारे लड़के या लड़कियों के शयनकक्ष में हरे पौधे या फूलों का गुलदस्ता नहीं रखें। शयन कक्ष में घरे व लाल रंग के पुष्य कदापि न हो क्योंकि यह शुभ नहीं माने जाते। सफेद रंग के पर्दे यह सोने के बिस्तर सफेद रंग की चादर शुभ रहेगी। टीवी, टेलीफोन या कंप्यूटर भी शयनकक्ष में ना रखें, नहीं किताबों को रखें, क्योंकि इनके होने से सोने में बाधा रहेगी और नींद नहीं आएगी। अविवाहित युवक या युवती को कभी भी दरवाजे के सामने सिर या पांव नहीं रखना चाहिए। नैऋत्य कोण में क्रिस्टल का झाड़ रखे तो उत्तम रहेगा। नेऋत्य कोण वाले कमरे में प्रेमी युगल के चित्र लगाएं, मोर-मोरनी या लव बर्ड के चित्र भी लगा सकते हैं। शयन कक्ष में हल्के गुलाबी पर्दे लगा सकते हैं। इस प्रकार यदि अविवाहितों के लिए उपाय किए जाए तो विवाह से बाधा दूर होगी एवं उत्तम रिश्ते आने की संभावना अधिक बढ़ जाएगी।

तलाक क्यों? इस क्यों के अनेक कारण हैं। प्रथम कारण- आपसी मतभेद, वाद विवाद। दूसरा कारण- आर्थिक तंगी। तीसरा कारण- यौन दुर्बलता और संदिग्ध चरित्र माना जा सकता है। कभी-कभी संतान का ना होना भी तलाक का कारण हो सकता है। इन्हीं सब बातों को लेकर ग्रहों से संबंधित योग दिए जा रहे हैं जो तलाक का कारण बनते हैं। इसका प्रमुख कारण लग्न, सप्तम व सप्तमेश, भाव 11 एवं एकादशेश से जाना जा सकता है। स्वयं का चरित्र लग्न से जाना जा सकता है, वही आय भाव 11 से जाना जा सकता है एवं सप्तमेश से दांपत्य जीवन, जो दांपत्य जीवन का कारक भाव है। ग्रहों में शुक्र की अहम भूमिका होती है। क्योंकि यही ग्रह आय से संबंध भी रखता है, जो दांपत्य जीवन का कारक भी होता है और शुक्र की स्थिति से ही जाना जा सकता है कि तलाक होगा या नहीं। इस ग्रह पर किन-किन अशुभ ग्रहों

का प्रभाव है वह यदि कोई अशुभ ग्रह का प्रभाव है और उस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि पड़ रही हो, तो ऐसा जातक सत्चरित्र होता है। शुभ ग्रहों में गुरु अत्यंत प्रभावी माना गया है।

1. जन्म लग्न कोई भी हो, परंतु यदि दांपत्य कारक शुक्र, सिंह राशि का बैठ जाए तो तलाक का कारण प्रबल रूप से बनता है, क्योंकि शुक्र अग्नि तत्व प्रधान राशि में होगा। यदि इस पर गुरु की दृष्टि पड़ेगी तो दांपत्य जीवन तनावपूर्ण रहेगा, लेकिन तलाक की नौबत नहीं आएगी।

2. किसी भी लग्न में शुक्र यदि मिथुन राशि में हो एवं उसके साथ केतु, या मंगल की युति हो, तो जातक संदिग्ध चरित्र वाला होकर तलाक का कारण बनेगा।

3. मंगल, तुला या वृषभ राशि में हो और शुक्र मेष या वृश्चिक राशि में हो, तो चरित्र संदिग्ध होगा एवं दांपत्य जीवन तनावपूर्ण रहेगा।

4. जन्म लग्न में शुक्र, मंगल तथा चंद्र हो, तो उस जातक का चरित्र संदिग्ध होगा।

5. शुक्र राहु से पीड़ित होकर कहीं भी बैठा हूं तो उस जातक का तलाक संभव है।

6. शुक्र केतु मंगल की युति भी तलाक का कारण बनाती है।

7. धनु लग्न में राहु, मंगल शुक्र हो तो ऐसे जातक को दांपत्य सुख नहीं मिलता है। ऐसा जातक भोगी अवश्य होता है।

8. जिस जातक की पत्रिका में शुक्र नीच राशि का हो और उस पर शनि या राहु की दृष्टि पड़ती हो तब भी दांपत्य जीवन बाधित रहता है।

9. नवांश कुंडली में यदि शुक्र, शनि की राशि में हो और शनि, शुक्र की राशि में हो तब भी दांपत्य जीवन कष्टप्रद रहता है।

निम्न ज्योतिषीय योगों से जातक का दाम्पत्य जीवन सुखमय होता है-

1. भाव 7 सप्तमेश एवं ग्रहों से युति या दृष्टि संबंध बनाते हो।

2. सप्तमेश एवं सप्तम भाव कारक यदि स्वराशि, मूल त्रिकोण राशि या उच्च राशि, वर्गोत्तम में हो।

3. भाव 7 शुभ कर्तरी योग में हो अर्थात 6 एवं 8 भाव में शुभ ग्रह स्थित हो। इसी प्रकार सप्तमेश एवं सप्तम भाव का कारक शुभ ग्रहों के मध्य स्थित हो।

4. सप्तमेश एवं 7 भाव कारक केंद्र एवं त्रिकोण में शुभ स्थिति में हो।

5. भाव 7 एवं सप्तमेश के साथ 7 भाव कारक का शुभ संबंध हो।

6. अष्टक वर्ग में सप्तमेश एवं 7 भाव कारक अधिक शुभ बिंदु (6,7 या 8 रेखाएं) प्राप्त करते हो।

शनि की साढ़े साती और उपाय

श्रीमती पुष्पा चौहान

शनि की साढ़े साती में दान करने योग्य वस्तुएं- नीलम, लोहा, काला तिल, काली उड़द, सरसों का तेल, काला वस्त्र, काली गाय, काला जूता, लोहे से निर्मित पात्र आदि का दान अमावस्या, सोमवती अमावस्या, सूर्य चंद्र ग्रहण, संक्रांति, व्यतिपात के समय सुपात्र को ही करना उचित रहता है। शनि की साढ़े साती लगने पर सोने की अंगूठी में नीलम धारण करें या नाव की कील की अंगूठी अथवा काले घोड़े के नाल की अंगूठी मध्यमा उंगली में धारण करें।

जब गोचर का शनि जन्मकालीन चंद्रमा से भाव 12 चंद्र, राशि लग्न यानि भाव में तथा चंद्रमा से भाव 2 में संचरण करता है, उस अवधि को साढ़े साती कहते हैं। शनि एक राशि में ढाई साल तक रहता है। 3 भाव में शनि साढ़े सात साल तक परिभ्रमण करता है। इसलिए इसे शानी की साढ़े साती कहते हैं। जातक अपने जीवन में तीन बार शनि की साढ़ेसाती से पीड़ित होता है। अपवाद स्वरुप ही कोई दीर्घायु वाला जातक चौथी साढ़ेसाती को भोग पाता है।

प्रत्येक दशा में साढ़ेसाती का दुष्प्रभाव अलग-अलग प्रकार का होता है। प्रथम आवृत्ति अधिक शक्तिशाली होती है, और कष्ट, पीड़ाओं, अवरोधों के अंबार लगा देती है। द्वितीय आवृत्ति अपेक्षाकृत कुछ कम कष्टदायक रहती है। जातक सुविधाजनक मार्ग खोज लेता है। तृतीय आवृत्ति भीष्ण कष्ट पहुंचाती है। जातक चारों ओर से स्वयं को कष्ट से गिरा पाता है। जातक की बुद्धि-बल सभी निष्फल हो जाते हैं। यहां यह तथ्य भी विचारणीय है कि साढ़ेसाती हर स्थिति में हर जातक के लिए अत्यधिक दुखदायी नहीं होती है। यदि शनि जन्मांग में उच्च राशि में स्थित हो या मगर, कुंभ में हो या मित्र के घर में हो या मूल त्रिकोण राशि पर भ्रमण कर रहा हो तो प्रभाव अपेक्षाकृत शुभ ही रहता है। वृष और तुला लग्न के जातकों में साढ़े साती का दुष्प्रभाव, अन्यों की अपेक्षा कम पाया जाता है। साढ़े साती के तीन चरणों में शनि का दशा का फलित निम्न बिंदुओं में विचारणीय है।

प्रथम चरण : जब शनि गोचरवश चंद्र लग्न से भाव 12 में आता है तब यह साढ़े साती का प्रथम चरण कहलाता है। इसमें धन का अधिक अपव्यय होता है। परिवार से दूर रहने की विवशता भी कष्ट देती है। स्वास्थ्य, विशेष रूप से नेत्रों पर प्रतिकूल प्रभाव होता है। बुद्धि भ्रमित रहती है। संतान पक्ष की ओर से चिंता रहती है। पूर्व निर्धारित योजनाओं में सफलता नहीं मिलती।

द्वितीय चरण : जब शनि चंद्र लग्न में गोचर होता है, तो यह साढ़े साती का द्वितीय चरण कहलाता है। यह जातक को अनावश्यक विवादों में उलझाता है। लक्ष्य प्राप्ति अत्यंत कठिन तथा असंभव भी हो जाती है। सुख-शांति में अनेक व्यवधान आते हैं। गृहस्थी अव्यवस्थित हो जाती है, लंबी कष्ट कारक यात्राएं करनी पड़ती है। सामाजिक दृष्टि से अपयश हानि का सामना करना पड़ता है।

तृतीय चरण : जब शनि चंद्र लग्न से द्वितीय स्थान यानी भाव 2 में विचरण करता है तो यह स्थिति तृतीय चरण कहलाती है। तब सभी प्रकार के सुखों का नाश होता है। शारीरिक रूप से दुर्बलता प्रतीत होती है। कोई कलंक, या आरोप लगने की स्थिति बन सकती है। मित्रों और रिश्तेदारों से अनबन, नीच प्रवृत्ति के लोगों के कारण ठगी का शिकार होना तथा स्त्री और संतान कष्ट से पीड़ा होती है।

विशेष नोट : साढ़े साती का पहला चरण वृष, सिंह, कन्या और धनु राशि के लोगों के लिए अधिक कष्टकारी होता है। साढ़े साती का द्वितीय चरण मेष, वृश्चिक, धनु, मकर राशि वालों के लिए तथा साढ़े साती का तीसरा चरण मिथुन, कर्क, तुला, वृश्चिक और मीन राशियों के लिए कष्टकारी होता है।

कंटक शनि : गोचर शनि जब चंद्र लग्न से 4,7,10 भाव या स्थान में जाता है तो उसे कंटक शनि कहते हैं, तब साधारण रूप से कंटक शनि मानसिक

साढ़े साती के दौरान विभिन्न राशियों में भ्रमण पर शुभ या अशुभ जानने की तालिका

राशि	प्रथम चरण (पूर्वा)	द्वितीय चरण (मध्य)	अंतिम चरण (उत्तरार्थ)
मेष	अत्याधिक अशुभ	अत्याधिक अशुभ	सामान्य
वृष	शुभ	शुभ	शुभ
मिथुन	शुभ	शुभ	अत्याधिक अशुभ
कर्क	शुभ	अत्याधिक	शुभ अशुभ
सिंह	अशुभ	अशुभ	शुभ
कन्या	अशुभ	शुभ	अत्याधिक
तुला	शुभ	अत्याधिक	शुभ अशुभ
वृश्चिक	अत्याधिक	शुभ	अशुभ सामान्य
धनु	अशुभ	सामान्य	शुभ
मकर	सामान्य	शुभ	शुभ
कुंभ	शुभ	अत्याधिक	शुभ सामान्य
मीन	अत्याध्याक	शुभ सामान्य	अत्याधिक अशुभ

दुख की वृद्धि करता है वह जीवन का अव्यवस्थित बनाता है। जब यह गोचर में चंद्र लग्न से 4 भाव में हो तब जातक के निवास स्थान में अवश्य परिवर्तन होता है वह स्वास्थ्य भी बिगड़ जाता है। जब यह चंद्र लग्न से 7वें भाव में हो तो जातक का प्रदेश वास होता है और यदि भाव 7 के चर राशि में हो तो यह फल अवश्य ही होता है। चंद्र लग्न से शनि गोचर में भाव 10 में हो तो जातक के व्यवसाय आदि में गड़बड़ी होती है।

शनि की साढ़े साती में दान करने योग्य वस्तुएं- नीलम, लोहा, काला तिल, काली उड़द, सरसों का तेल, काला वस्त्र, काली गाय, काला जूता, लोहे से निर्मित पात्र आदि का दान अमावस्या, सोमवती अमावस्या, सूर्य चंद्र ग्रहण, संक्रांति, व्यतिपात के समय सुपात्र को ही करना उचित रहता है।

शनि की साढ़े साती के उपाय- शनि की साढ़े साती लगने पर निम्न उपाय करने से साढ़े साती के प्रभाव को कम किया जा सकता है।

1. सोने की अंगूठी में नीलम धारण करें या नाव की कील की अंगूठी अथवा काले घोड़े के नाल की अंगूठी मध्यमा उंगली में धारण करें।
2. घर में नीले रंग के परदे तथा नीले रंग की ही चादर तथा नीले वस्त्रों का उपयोग करें।
3. शनिवार की शाम को पीपल के पेड़ या वट के पेड़ के नीचे तिल के तेल का दीपक जलाएं। सफेद वस्त्र में काले तिल बांधकर पानी में प्रवाहित करें तथा गुड़ तिरकी बनी रेवड़ियां बांटे।
4. शनिवार को अपने हाथ की नाप की 19 हाथ काली रस्सी या धागे की माला बनाकर पहने। दो रोटी पहले वाली पर तेल और दूसरी पर घी लगाकर संभव हो तो काली दाल को ही खिलाएं या शनिवार के दिन बंदरों को केले और चने खिलाएं। काली गाय की सेवा करें उसके सींगों पर मोली और खुरो पर रोली लगाएं।
5. शनि की शांति के लिए महामृत्युंजय का जाप करें।
6. जिनके जन्म काल में, गोचर में, महादशा में 27 अंतर्दशाओं में या लग्न 2, 4, 8, 12 भाव में शनि हो तो वे पवित्र होकर प्रातः मध्यान्ह, सायंकाल यदि दशरथ रचित शनिस्त्रोत पढ़े तो शनि की पीड़ा कम होकर शुभ फलदायी होगा।

शनि को कल्याणकारी बनाने के लिए शनि शुभ होने पर निम्न उपाय-

1. चांदी की अंगूठी में नीलम मध्यमा अंगुली में शनिवार प्रातः पहिने नीले। रंग की वस्तुओं का उपयोग करें। लोहा, तेल, चमड़ा आदि का व्यापार करें शनिवार के दिन सरसों के तेल का तिलक करें और खाने में इसका उपयोग करें।
2. पांच शनिवार शनिदेव या भैरव मंदिर में सरसों के तेल का दीपक जलायें। शनिवार को घर में भैंस को खाद्यान्न या चारा डाले। शनिवार को उड़द की दाल खाएं। शनिवार को पूरा काला कुत्ता पालें। स्टील के बर्तनों का उपयोग करें। सिर और बदन पर सरसों का तेल लगाएं।
3. काले घोड़े की नाल का छल्ला मध्यमा अंगुली में पहिने या शनि के दिन लोहे का कड़ा हाथ में डालें।

शनि में पाया देखने की विधि- जन्म लग्न से चंद्रमा जिस भाव में हो उस भाव के अनुसार 'पाया' निर्धारण होता है जैसे-

1. **सोने का पाया-** चंद्रमा लग्न से 1,6,11 भाव में होने से सोने का पाया होता है।
2. **चांदी का पाया-** चंद्रमा लग्न से 2,5,9 भाव में हो तो चांदी का पाया होता है।
3. **तांबे का पाया-** लग्न से चंद्रमा यदि 3,7, 10 में हो तो तांबे का पाया होता है।
4. **लोहे का पाया-** चंद्रमा के लग्न से यदि 4, 8, 12 भाव में हो तो लोहे का पाया होता है।

चांदी का पाया सर्वोत्तम लाभकारी होता है सोने का पाया कुछ खराब होता है। इसको ठीक करने के लिए 9 प्रकार का अनाज व सोने का दान करने से कुछ राहत मिलती है। लोहे का पाया सबसे खराब माना जाता है। इसमें जन्मा बालक स्वयं व अन्य के लिए कष्टकारी होता है। शनि का दान करने से कुछ ठीक होता है। तांबे के बारे में जन्मा बालक श्रेष्ठ होता है पिता को सम्मान दिलाता है।

शनि की उपासना- शनि की उपासना के लिए निम्न में से किसी एक मंत्र अथवा सभी को श्रद्धानुसार नियमित एक निश्चित संख्या में जप करना चाहिए। जप का समय संध्याकाल तथा कुल जप संख्या 23 हजार होनी चाहिए।

बीज मंत्र- ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः
सामान्य मंत्र :ॐ शं शनैश्चराय नमः।

नवार्ण मंत्र महत्व

आचार्य अखिलेख कुमार पाण्डेय,
फतहपुर शिवहर (बिहार)

यह नवार्ण महामंत्र शक्ति साधना और माता भगवति की कृपा प्राप्ती में सर्वोपरि तथा सभी मंत्रों-स्तोत्रों में से एक महत्त्वपूर्ण महामंत्र है। यह माता भगवती दुर्गा जी के तीनों स्वरूपों माता महासरस्वती, माता महालक्ष्मी व माता महाकाली की एक साथ साधना का पूर्ण प्रभावक बीज मंत्र है और साथ ही माता दुर्गा के नौ रूपों का संयुक्त मंत्र है और इसी महामंत्र से नौ ग्रहों को भी शांत किया जा सकता है।

नवार्ण मंत्र

।। ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे ।।

नौ अक्षर वाले इस अद्भुत नवार्ण मंत्र में देवी दुर्गा की नौ शक्तियां समायी हुई है। जिसका सम्बन्ध नौ ग्रहों से भी है।

ऐं = सरस्वती का बीज मन्त्र है ।

ह्रीं = महालक्ष्मी का बीज मन्त्र है ।

क्लीं = महाकाली का बीज मन्त्र है ।

इसके साथ नवार्ण मंत्र के प्रथम बीज 'ऐं' से माता दुर्गा की प्रथम शक्ति माता शैलपुत्री की उपासना की जाती है, जिस में सूर्य ग्रह को नियंत्रित करने की शक्ति समायी हुई है।

नवार्ण मंत्र के द्वितीय बीज 'ह्रीं' से माता दुर्गा की द्वितीय शक्ति माता ब्रह्मचारिणी की उपासना की जाती है, जिस में चन्द्र ग्रह को नियंत्रित करने की शक्ति समायी हुई है।

नवार्ण मंत्र के तृतीय बीज 'क्लीं' से माता दुर्गा की तृतीय शक्ति माता चंद्रघंटा की उपासना की जाती है, जिस में मंगल ग्रह को नियंत्रित करने की शक्ति समायी हुई है।

नवार्ण मंत्र के चतुर्थ बीज 'चा' से माता दुर्गा की चतुर्थ शक्ति माता कुष्मांडा की उपासना की जाती है, जिस में बुध ग्रह को नियंत्रित करने की शक्ति समायी हुई है।

नवार्ण मंत्र के पंचम बीज 'मुं' से माता दुर्गा की पंचम शक्ति माँ स्कंदमाता की उपासना की जाती है, जिस में बृहस्पति ग्रह को नियंत्रित करने की शक्ति समायी हुई है।

नवार्ण मंत्र के षष्ठ बीज 'डा' से माता दुर्गा की षष्ठ शक्ति माता कात्यायनी की उपासना की जाती है, जिस में शुक्र ग्रह को नियंत्रित

करने की शक्ति समायी हुई है।

नवार्ण मंत्र के सप्तम बीज 'यै' से माता दुर्गा की सप्तम शक्ति माता कालरात्रि की उपासना की जाती है, जिस में शनि ग्रह को नियंत्रित करने की शक्ति समायी हुई है।

नवार्ण मंत्र के अष्टम बीज 'वि' से माता दुर्गा की अष्टम शक्ति माता महागौरी की उपासना की जाती है, जिस में राहु ग्रह को नियंत्रित करने की शक्ति समायी हुई है।

नवार्ण मंत्र के नवम बीज 'चै' से माता दुर्गा की नवम शक्ति माता सिद्धीदात्री की उपासना की जाती है, जिस में केतु ग्रह को नियंत्रित करने की शक्ति समायी हुई है।

विनियोगः

।। ॐ अस्य श्रीनवार्णमंत्रस्य ब्रम्हाविष्णुरुद्राऋषयः गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छंन्दांसी, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासर स्वत्यो देवताः, ऐं बीजम, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासर स्वत्यो प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।।

विलोम बीज न्यासः-

ॐ च्चै नमः गूदे ।
ॐ विं नमः मुखे ।
ॐ यै नमः वाम नासा पूटे ।
ॐ डां नमः दक्ष नासा पुटे ।
ॐ मुं नमः वाम कर्णे ।
ॐ चां नमः दक्ष कर्णे ।
ॐ क्लीं नमः वाम नेत्रे ।
ॐ ह्रीं नमः दक्ष नेत्रे ।
ॐ ऐं ह्रीं नमः शिखायाम ॥

(विलोम न्यास से सर्व दुखोकी नाश होता है,संबन्धित मंत्र उच्चारण की साथ दहीने हाथ की उँगलियो से संबन्धित स्थान पे स्पर्श कीजिये)

ब्रम्हारूप न्यासः-

ॐ ब्रम्हा सनातनः पादादी नाभि पर्यन्तं मां पातु॥
ॐ जनार्दनः नाभेर्विशुद्धी पर्यन्तं नित्यं मां पातु ॥
ॐ रुद्र स्त्रीलोचनः विशुद्धेर्वम्हरंध्रातं मां पातु ॥
ॐ हं सः पादद्वयं मे पातु ॥
ॐ वैनतेयः कर इयं मे पातु ॥
ॐ वृषभश्चक्षुषी मे पातु ॥
ॐ गजाननः सर्वाङ्गानी मे पातु ॥
ॐ सर्वानंन्द मयोहरीः परपरौ देहभागौ मे पातु ॥

(ब्रम्हारूपन्यास से सभी मनोकामनाये पूर्ण होती है, संबन्धित मंत्र उच्चारण की साथ

दोनों हाथो की उँगलियो से संबन्धित स्थान पे स्पर्श कीजिये)

ध्यान मंत्र:-

खड्गमं चक्रगदेशुषुचापपरिघार्त्छुलं
भूशुण्डीम शिर: शड्ख संदधतीं
करैस्त्रीनयना सर्वाड्ग भूषावृताम ।
नीलाश्मद्युतीमास्यपाददशकां सेवे
महाकालीकां यामस्तौत्स्वपिते हरौ
कमलजो हन्तुं मधु कैटभम ॥

माला पूजन:-जाप आरंभ करनेसे पूर्व ही इस मंत्र से माला का पूजा कीजिये,इस विधि से आपकी माला भी चैतन्य हो जाती है.

'ऐं ह्रीं अक्षमालिकायै नंम:''
ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिनी।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥
ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृहनामी
दक्षिणे करे। जपकाले च सिद्ध्यर्थ
प्रसीद मम सिद्धये ॥
ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिं देही देही
सर्वमन्त्रार्थसाधिनी साधय साधय
सर्वसिद्धिं परिकल्पय परिकल्पय
मे स्वाहा।

अब आप चैतन्य माला से नवार्ण मंत्र का जाप करे-

नवार्ण मंत्र :-

द्यद्य ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।।

नवार्ण मंत्र की सिद्धि 9 दिनो मे 1,25,000 मंत्र जाप से होती है,परंतु आप ऐसे नहीं कर सकते है तो रोज 1,3,5,7,11,21....इत्यादि माला मंत्र जाप भी कर सकते है, इस विधि से सारी इच्छाये पूर्ण होती है, दुख कम होते है और धन की वसूली भी सहज ही हो जाती है। हमे शास्त्र के हिसाब से यह सोलह प्रकार के न्यास देखने मिलती है जैसे ऋष्यादी, कर, हृदयादी, अक्षर, दिड्ग, सारस्वत, प्रथम मातृका, द्वितीय मातृका, तृतीय मातृका, षडदेवी, ब्रम्हरूप,बीज मंत्र ,विलोम बीज, षड, सप्तशती, शक्ति जाग्रण न्यास और बाकी के 8 न्यास गुप्त न्यास नाम से जाने जाते है,इन सारे न्यासो का अपना एक अलग ही महत्व होता है, उदाहरण के लिये शक्ति जागरण न्यास से माँ सूक्ष्म रूप से साधको के सामने शीघ्र ही महसूस हो जाती है और मंत्र जाप की प्रभाव से कुछ सिद्ध भक्त को प्रत्यक्ष होती है और जब माँ चाहे किसी भी रूप मे क्यू न आये इसका ध्यान नही देकर आरायना करनी चाहिए जिससे हमारे जीवनमें धनात्म क विचार की शक्ति प्राप्त होकर हमारा कल्याण तो निश्चित ही कर देती है। आप नवरात्री एवं अन्य दिनो मे भी इस मंत्र के जाप कर सकते है.मंत्र जाप रस्फटिक माला अथवा रुद्राक्ष माला से ही किया करे अत्यंत लाभकारी होती है।

अंगारक योग पर कुछ भ्रांतियां

श्री अरुण मित्तल
कोटा

ज्योतिष में एक योग है कि मंगल और राहु जब भी एक साथ कुंडली में कहीं भी युति बनाते हैं तो उसको अंगारक योग कहा जाता है। और उस जातक के लिए कहा जाता है कि वह बहुत गुस्से वाला होगा, बात-बात पर धमकी देने वाला होगा और यहां तक की लड़ाई होने पर किसी पर शस्त्र से हमला भी कर सकता है। जबकि यह पूर्णत: सत्य नहीं है।

यदि यह युति कुंडली के छठे भाव, सातवें भाव या दशम भाव में हो तो इसका प्रभाव ज्यादा होता है। क्योंकि इन भाव में स्थित होने के बाद मंगल राहु की संयुक्त दृष्टि लग्न पर पड़ती है। तो यहां पर जातक का गुस्सा अपने कंट्रोल में नहीं रहता और वह छोटी सी बात पर भी बहुत ज्यादा क्रोधित हो जाता है।

जबकि यही युति यदि अष्टम भाव द्वादश भाव या लग्न में बने तो यह इसके विपरीत काम करती है अर्थात जातक का स्वभाव बहुत शांत होता है और उसको उकसाने पर भी उसको क्रोध नहीं आता।

लग्न पर यह युति बनने पर जातक तार्किक और विस्तृत सोच वाला होता है।

अष्टम् भाव को मृत्यु भाव भी कहा जाता है इसलिए यहां पर आकर मंगल और राहु का प्रभाव लगभग खत्म हो जाता है इसी प्रकार द्वादश भाव में मंगल और राहु के गुण व्यव होने से जातक का गुस्सा शांत रहता है और उसको उकसाने पर भी गुस्सा नहीं आता।

इसके लिए दो कुंडली उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत की जा रही है जो 21मार्च,1963, 5.30 pm , Neemuch Madhya Pradesh में जन्म लेने वाली महिला की है एवं 13 मार्च 1997, 11:00 बजे रात्रि, कोटा जातक पुरुष की है इन दोनों की कुंडली में ही राहु मंगल की युति द्वादश भाव में स्थित है और दोनों ही बहुत ज्यादा शांत स्वभाव के हैं।

एक कुंडली पुरुष जातक 24 जुलाई 1937, जन्म समय रात्रि 8:55, कोटा का है इनकी कुंडली में राहु मंगल की युति दशम भाव में है इनका स्वभाव बहुत ज्यादा क्रोधी बात-बात में लड़ाई करने वाला हर किसको डांट कर बात करने वाला और शस्त्रों की धमकी देने वाला है।

फलित ज्योतिष में शकुन-अपशकुन का विचार

धर्मगुरूआचार्य
अजय कुमार श्यामानन्दी

प्राचीन काल से ही . परंपरा रही है।प्रकृति से प्राप्त संकेत ही शकुन का आधार हैं।अच्छी या बुरी किसी भी महत्वपूर्ण घटना से पूर्व प्रकृति में कुछ विकार उत्पन्न होता है। वैदिक मंत्र अन्वेषक अजय कुमार श्यामानंदी बताते हैं हमारे ऋषि मुनियों ने इन प्राकृतिक विकारों का अपने अनुभव के आधार पर शुभाशुभ वर्गों में वर्गीकरण किया वास्तव में शकुन स्वयं न तो शुभ हैं न अशुभ,ये केवल इष्ट अथवा अनिष्ट के सूचक मात्र हैं।किसी महत्वपूर्ण कार्य को आरम्भ करते समय या उसके लिए यात्रा पर जाते समय शकुन पर विचार किया जाता है।शुभ शकुन होने पर कार्यसिद्धि तथा अशुभ शकुन होने पर कार्य की हानि का संकेत मिलता है। प्राचीन राजा महाराजा भी अपने दरबार में विद्वान शकुनी शास्त्री को महत्वपूर्ण स्थान देते थे तथा प्रत्येक कार्य से पूर्व उसका परामर्श लेते थे।

पुराणों में शकुन विचार

वेदों, स्मृतियों,पुराणादि धर्मशास्त्रों एवं फलित ज्योतिष शास्त्रों तथा धर्मसिन्धु में शुभ-अशुभ शकुनों के विषय में विस्तार से जानकारी दी गई है। शकुन हेतु तुलसीकृत 'रामाज्ञा-प्रश्न' एवं 'रामशलाका' भी प्रसिद्ध हैं। शकुन के संबंध में प्रसिद्ध ग्रंथ वसंतराज शाकुन का कथन है- 'शुभाशुभज्ञानविनिर्णयाय हेतुर्नृणां यः शकुन अर्थात् जिन चिह्नों को देखने से 'शुभ-अशुभ' का ज्ञान हो-वह शकुन है। जिस चिह्न संकेत निमित्त द्वारा शुभ जानकारी मिले, वह शुभ शकुन और अशुभ जानकारी मिले, उसे अपशकुन कहते हैं।

भगवान् राम की बारात चढ़ने के समय शकुन होने से मंगल हुआ, ऐसा रामायण में उल्लेख मिलता है।

बनई न वरनत वनी बराता।
होइ सगुन सुन्दर शुभदाता।।
चारा चाषु वाम दिसि लेइ ।
मनहु सकल मंगल कहि देइ।।

दाहिन काग सुखेत सुहावा ।
नकुल दरसु सब काहू पावा ॥
सानुकूल बह त्रिबिध बयारी ।
सघट सबाल आव बर नारी ॥
लोवा फिरि फिरि दरसु देखावा ।
सुरभी सनमुख सिसुहि पिआवा ॥
मृगमाला फिरि दाहिनि आई ।
मंगल गन जनु दीन्हि देखाई ॥
छेमकरी कह छेम बिसेषी ।
स्यामा बाम सुतरु पर देखी ॥
सनमुख आयउ दधि अरु मीना।
कर पुस्तक दुइ बिप्र प्रबीना।।
-रामचरितमानसाबालकांड 302/24

अग्नि पुराण के अनुसार शकुन दो प्रकार के होते हैं।

1.दीप्त शकुन
2.शांत शकुन

दीप्त शकुन

काल की सूक्ष्म गति को जानने वाले ऋषि मुनियों ने दीप्त शकुन का फल अशुभ व कार्य नाशक कहा है। दीप्त शकुन के छह भेद कहे गए हैं।

1. वेला दीप्त शकुन शकुन का विचार करते समय दिन में विचरने वाले प्राणी रात्री को तथा रात्रिचर प्राणी दिन में शकुन कारक हों तो वेलादीप्त शकुन कहा जाता है। शकुनकालीन लग्न या नक्षत्र पाप ग्रह से पीड़ित हो तो भी वेला दीप्त शकुन होता है।

2. दिग्दीप्त शकुन सूर्य जिस दिशा में स्थित हो उसे ज्वलिता ,जिस दिशा से आये हों उसे धूमिता तथा जिस दिशा में जाने वाले हों उसे अग्नारिणी कहते हैं।ये तीनों दिशाएँ दीप्त कही गयी हैं। दीप्त दिशा में होने वाले शकुन को दिग्दीप्त कहा गया है जिसका फल अशुभ व कार्य नाशक होता है।

3. देश दीप्त शकुन जंगली पशु-पक्षी का गाँव व शहर में तथा शहर के पालतू पशु-पक्षियों का जंगल में दिखना देश दीप्त शकुन है। शकुन यदि अशुभ स्थान पर दिखाई दे तो भी देश दीप्त शकुन होता है जिस का फल अशुभ कहा गया है।

4. क्रिया दीप्तशकुन कोई पुरुष,स्त्री या पशु पक्षी अपने स्वभाव के विरुद्ध आचरण करता हुआ दिखाई दे तो क्रिया दीप्त शकुन कहलाता है।

5. रुतदीप्त शकुन फटी हुई ,कर्कश एवम रोने की आवाज का सुनाई देना रुतदीप्त शकुन कहलाता है।

6. जाति दीप्त शकुन मांसाहारी प्राणियों का दर्शन जाति दीप्त शकुन कहलाता है जिसका फल कार्य की असफलता का सूचक है।

शांत शकुन

उपरोक्त सभी दीप्त शकुनों से विपरीत शकुनों वाले सभी शकुन शांत शकुन होते हैं जिनका दर्शन या श्रवण कार्य में सफलता का संकेत देता है। दीप्त व शांत दोनों ही शकुन दिखाई दें तो कठिनता से कार्य सिद्धि समझनी चाहिए।

आगे हम शकुन अपशकुनो के विषय मे विस्तृत रूप से बता रहे है।

छींक संबंधित शकुन अपशकुन

1- यदि घर से निकलते समय कोई सामने से छींकता है तो कार्य में बाधा आती है।

अगर एक से अधिक बार छींकता है तो कार्य सरलता से संपन्न हो जाता है।

2- किसी मेहमान के जाते समय कोई उसके बाईं ओर छींकता है तो यह अशुभ संकेत है।

3- कोई वस्तु क्रय करते समय यदि छींक आ जाए तो खरीदी गई वस्तु से लाभ होता है।

4- सोने से पूर्व और जागने के तुरंत बाद छींक की ध्वनि सुनना अशुभ माना जाता है।

5- नए मकान में प्रवेश करते समय यदि छींक सुनाई दे तो प्रवेश स्थगित कर देना ही उचित होता है।

6- व्यावसायिक कार्य आरंभ करने से पूर्व छींक आना व्यापार वृद्धि का सूचक होती है।

7- कोई मरीज यदि दवा ले रहा हो और छींक आ जाए तो वह शीघ्र ही ठीक हो जाता है।

8- भोजन से पूर्व छींक की ध्वनि सुनना अशुभ मानी जाती है।

9- यदि कोई व्यक्ति दिन के प्रथम प्रहर में पूर्व दिशा की ओर छींक की ध्वनि सुनता है तो उसे अनेक कष्ट झेलने पड़ते हैं। दूसरे प्रहर में सुनता है तो देह कष्ट, तीसरे प्रहर में सुनता है तो दूसरे के द्वारा स्वादिष्ट भोजन की प्राप्ति और चौथे प्रहर में सुनता है तो किसी मित्र से मिलना होता है।

10- धार्मिक अनुष्ठान या यज्ञादि प्रारंभ करते समय कोई छींकता है तो अनुष्ठान संपूर्ण नहीं होता है।

कौवे से जुड़े शकुन अपशकुन

1- यदि किसी व्यक्ति के ऊपर कौआ आकर बैठ जाए तो उसेधन व सम्मान की हानि होती है। यदि किसी महिला के सिर पर कौआ बैठता है तो उसके पति को गंभीर संकट का सामना करना पड़ता है।

2- यदि बहुत से कौए किसी नगर या गांव में एकत्रित होकर शौर करें तो उस नगर या गांव पर भारी विपत्ति आती है।

3- किसी के भवन पर कौओं का झुण्ड आकर शौर मचाए तो भवन मालिक पर कई संकट एक साथ आ जाते हैं।

4- कौआ यदि यात्रा करने वाले व्यक्ति के सामने आकर सामान्य स्वर में कांव-कांव करें और चला जाए तो कार्य सिद्धि की सूचना देता है।

5- यदि कौआ पानी से भरे घड़े पर बैठा दिखाई दे तो धन-धान्य की वृद्धि करता है।

6- कौआ मुंह में रोटी, मांस आदि का टुकड़ा लाता दिखाई दे तो उसे अभिष्ट फल की प्राप्ति होती है।

7- पेड़ पर बैठा कौआ यदि शांत स्वर में बोलता है तो स्त्री सुख मिलता है।

8- यदि उड़ता हुआ कौआ किसी के सिर पर बीट करे तो उसे रोग व संताप होता है। और यदि हड्डी का टुकड़ा गिरा दे तो उस व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है।

9- यदि कौआ पंख फडफ़ड़ाता हुआ उग्र स्वर में बोलता है तो यह अशुभ संकेत है।

10- यदि कौआ ऊपर मुंह करके पंखों को फडफ़ड़ाता है और कर्कश स्वर में आवाज करता है तो वह मृत्यु की सूचना देता है।

छिपकली से जुड़े शकुन अपशकुन

घरों में आमतौर पर पाई जाने वाली छिपकली भी जीवन में होने वाली कई घटनाओं के बारे में संकेत करती है।

किसी भी कार्य के वक्त घटित होने वाले प्राकृतिक व अप्राकृतिक तथ्य अच्छे व बुरे फल की भविष्यवाणी करने में सक्षम होते हे।

1- अगर छिपकली समागम करती मिले तो किसी पुराने मित्र से मिलन होता है। लड़ती दिखे तो किसी दूसरे से झगड़ा होता है और अलग होती दिखे तो किसी प्रियजन से बिछुडऩे का दु:ख होता है।

2- भोजन करते समय छिपकली का बोलना शुभ फलकारक होता है।

3- नए घर में प्रवेश करते समय गृहस्वामी को छिपकली मरी हुई व मिट्टी लगी हुई दिखाई दे तो उसमें निवास करने वाले लोग रोगी रहेंगे।

4- छिपकली किसी व्यक्ति के सिर अथवा दाहिने हाथ पर गिरे तो सम्मान तो मिलता है किंतु बाएं हाथ पर गिरती है तो धन हानि होती है।

5- यदि छिपकली किसी व्यक्ति के दाई ओर से चढ़कर बाईं ओर उतरती है तो उसे पदोन्नति और धन लाभ मिलता है।

6- यदि छिपकली पेट पर गिरती है तो अनेक प्रकार के उत्पात और छाती पर गिरती है तो सुस्वादु भोजन मिलता है।

7- घुटने पर गिरकर सुख प्राप्ति की सूचना देती है छिपकली।

8- स्त्री की बाईं बांह पर छिपकली गिरे तो सौभाग्य में वृद्धि और दाहिनी बांह पर गिरे तो सौभाग्य की हानि होती है।

9- यदि किसी के दाहिने गाल पर छिपकली गिरे तो उसे भोग-विलास की प्राप्ति होती है। बाएं गाल पर गिरे तो स्वास्थ्य में विकार उत्पन्न होते हैं।

10- यदि छिपकली नाभि पर गिरे तो पुत्र रत्न की प्राप्ति होती है। गुप्त अंगों पर गिरे तो रोग की संभावना होती है।

वर्षा संबंधित शकुन अपशकुन

वैदिक मंत्र अन्वेषक अजय कुमार श्यामानंदी बताते हे,मेदिनीय ज्योतिष में भी शकुन अपना विशेष महत्व रखते हैं। वर्षा होगी या नहीं होगी, कम होगी या अधिक होगी इस प्रकार की भविष्य वाणियां भी शकुनों के आधार पर की जाती हैं कुछ उदाहरण निम्न हैं। यदि आसमान बादलों से घिरा हो व पालतू कुत्ता घर से बाहर न जाए, तो वर्षा का सूचक है। यदि आसमान में चील 400 फुट की ऊंचाई पर उड़ रही हो, तो भी वर्षा होने वाली होती है। यदि मकड़ी घर के बाहर जाला बनाए तो वर्षा ऋतु जाने का सूचक है। मेढकों की टर्रराहट वर्षा का संकेत है। मोर का नृत्य तथा शोर भी वर्षा का सूचक है।

कुत्ते के द्वारा शुभाशुभ शकुन विचारने का नियम

कुत्ता आज के जमाने में प्रत्येक घर में मिल जाता है,और सभी को पता है कि कुत्ता

की अतीन्द्रिय जागृत होती है,किसी भी होनी अनहोनी को वह जानता है,अदृर्श्य आत्मा को देखने और किसी भी बदलाव को सूंघ कर जान लेने की क्षमता कुत्ते के अन्दर होती है,कुत्ते को दरवेश का दर्जा दिया गया है,समय असमय को बताने में कुत्ता अपनी भाषा में इन्सान को बताने की कोशिश करता है,और जो कुत्ते की भाषा को समझते है,वे अनहोनियों से बचे रहते है,और जो मूर्ख होते है,और अपने को जबरदस्ती हानि की तरफ़ ले जाना चाहते है वे उसकी भाषा को बकवास कह कर टाल देते है,कुत्ता अगर यात्रा के शुरु करते ही किसी कचडे पर पेशाब करता है,तो जान लीजिये कि यात्रा या शुरु किया जाने वाला कार्य सफ़ल है,यदि किसी सूखी लकडी पर पेशाब करता है,तो भौतिक धन की प्राप्ति होती है,अगर कुत्ता कांटेदार झाड पर,पत्थर या राख पर पेशाब करने के बाद काम शुरु करने वाले के आगे चल दे तो वह कार्य खराब हो जाता है,यदि कुत्ता किसी कपडे को लाकर सामने खडा हो तो समझना चाहिये कि कार्य सफ़ल है,यदि कुत्ता कार्य शुरु करने वाले के पैर चाटे,कान फ़डफ़डाये,अथवा काटने को दौडे तो समझना चाहिये कि सामने काफ़ी बाधायें आ रही है,यदि कुत्ता यात्रा के समय या काम शुरु करने के समय अपने शरीर को खुजलाना चालू कर दे तो जान लेना चाहिये के वह कार्य करने अथवा यात्रा पर जाने से मना कर रहा है।यदि कुत्ता किसी कार्य को शुरु करते वक्त या यात्रा पर जाते वक्त चारों पैर ऊपर की तरफ़ करके सोये तो भी कार्य या यात्रा नही करनी चाहिये,यदि गली मोहल्ले के आवारा कुत्ते किसी भी समय ऊपर की तरफ़ मुंह करके रोना चालू करें तो समझना चाहिये कि उस गली या मोहल्ले के प्रमुख व्यक्ति पर कोई मुसीबत आने वाली है,यात्रा करने के साथ या काम करने के साथ कुत्ते आपस में लड पडें तो भी काम या यात्रा में विघ्न पैदा होता है,कुत्ते के कान फ़डफ़डाने का समय सभी कामों के लिये त्यागने में ही भलाई होती है,कुत्ता अगर बैचैन होकर इधर उधर भागना चालू करे,तो समझना चाहिये कि कोई आकस्मिक मुसीबत आ रही है, किसी बात को सोचने के पहले या धन खर्च करते वक्त अगर कुत्ता अपनी पूंछ को पकडने की कोशिश करता है,तो मान लेना चाहिये कि आपने अपने भविष्य के लिये नही सोचा है और खर्च करने के बाद पछताना पडेगा, कुत्ता अगर सुबह के समय लान या बगीचे में घास खा रहा हो तो समझ लेना चाहिये कि घर के अन्दर जो खाना बना है उसमे किसी प्रकार इन्फ़ेक्सन है, कुत्ता अगर जूता लेकर भाग रहा हो तो समझना चाहिये कि वह बाहर जाने से रोक रहा है, लडकी के अपने ससुराल जाने के वक्त अगर कुत्ता रोना चालू कर दे तो समझना चाहिये कि लडकी को ससुराल से वापस आने में संदेह है।

कुत्ता अगर मालिक के पैर के पास जाकर सोना चालू कर दे तो समझना चाहिये कि घर में किसी सदस्य के आने का संकेत है, कुत्ता अगर अपने खुद के पैर चाटना चालू करे तो यात्राओं की शुरुआत समझनी चाहिये, कुत्ता अगर एकान्त में बैठना चालू कर दे और बुलाने से आने में आनाकानी करे तो समझना चाहिये कि घर मे किसी सदस्य के लम्बी बीमारी में जाने का संकेत है, कुत्ता अगर पूंछ नीचे डालकर मुख्य दरवाजे के पास कुछ खोजने का प्रयत्न कर रहा हो तो समझना चाहिये कि कोई कर्जा मांगने वाला आ रहा है,कुत्ता अगर भोजन करते वक्त बार बार बाहर और अन्दर भाग रहा हो तो समझना चाहिये कि भोजन और कोई करने आने वाला है।कुछ अन्य 'शुभ शकुन' की विस्तृत व्याख्या,ब्राह्मण, घोड़ा, हाथी, न्योला, बाज, मोर। दूध, फल, फूल व वेद ध्वनि का सोर॥ अन्न, सिंहासन, जल, कलश, पशु एक बधन्त। न्योला चापा, मछली और अग्नि प्रज्वलंत॥ छाता, वैश्या, पगड़ी, अंजन, ऐना, शस्त्र। कन्या, रत्न, स्त्री, धोबी धोया वस्त्र॥ घृत मिट्टी अस्त्र शहद, मदिरा वस्त्र श्वेत। गोरोचन सरसों अमिष, गन्ना खञ्जन भेद॥ बिन रोदन मुर्दा मिले,पालकी भरदुल गीत।ध्वज अकुंश बकरा पड़े, सम्मुख अपना गीत॥ बालक संग स्त्री मिले, नौ बेटा बैल सफेद। साधु सुधा सुरतर-पड़े, सम्मुख चारों वेद ॥ कूड़ा से भरी टोकरी जो सम्मुख पडंत। पाछे घट खाली पड़े, निश्चय काज बनंत। । प्रिय वाणी कानों पड़े, सम्मुख वाहन भार। कह कवि ये शुभ शकुन यात्रा चलती बार॥

ब्राह्मण, घोड़ा, हाथी, न्योला, बाज, मोर, दूध, दही,फल,फूल,कमल,वेदध्वनि, अन्न, सिंहासन, जल से भरा कलश, बंधा हुआ एक पशु, न्योला,चापा (चाहा पक्ष) मछली, प्रज्वलित अग्नि,छाता, वैश्या, पनाली, अंजन, ऐना, शस्त्र, रत्न, स्त्री, कन्या, धुले हुए वस्त्र सहित धोबी, घी, मिट्टी, सरसों,मांस,गन्ना, खञ्जन पक्ष,रोदन रहित मुर्दा, पालकी, भारद्वाज पक्षी, ध्वजा, अंकुश, बकरा, अपना प्रिय मित्र, बच्चे के सहित स्त्री, गाय या गोह के सहित बछड़ा,सफेद बैल,साधु,अमृत, कल्पवृक्ष चारों वेद,शहद,शराब, गोरोचन आदि में से कुछ भी सम्मुख पड़े या कूड़े से भरी टोकरी,प्रिय वाणी या सामान से लदा वाहन यदि यात्रा के वक्त सम्मुख पड़ जाए तो निश्चय ही इच्छा पूर्ति का संकेत करते हैं। खाली घड़ा पीठ पीछे हो तो अच्छा हे ।

ये शुभ शकुन हैं

'नीलकण्ठ छिक्कर-पिक्कर वानर कौवी भालु। जै कुकर दाएं पड़े तो सिद्ध होय सब काजु॥नीलकण्ठ छिक्कर नामक विशेष मृग, पिक्कर पक्षी,कौवी (स्त्री संज्ञक) भालू व कुत्ता यदि दाएं हाथ पर पड़े तो कार्य सिद्ध होता है।मृग बाएं ते दाहिने जो आवे तत्काल।बाएं गर्दभ रेकंजा सिद्धि होय सब काज॥यदि हिरण बायीं तरफ से रास्ता काटकर दायीं तरफ आ जाए या बायीं तरफ गधा बोलना प्रारंभ कर दे तो शुभ शकुन है।

शुभ और अशुभ शुकुन

खड़ा कोबरा,सूकरा,जाहक,कछुआ, गोह। ये शब्द कानों पड़े निश्चय कारज होय॥ पर दर्शन हो जाएं तो महाअशुभ होय।अतिहि कु शकुन जानिये काट सके ना कोय॥ अर्थात् यदि खरगोश, सर्प, सूअर, जाहक, पशु, कछुआ व गोह के शब्द कानों में पड़े तो अत्यंत शुभ शकुन समझें। परंतु यदि ये प्रत्यक्ष सामने पड़ जाएं तो महा अशुभ हैं। बानर, भालु दर्शन भले,नाम के सुनते हानि।कह कवि विचार के तब आगे करौ पदान,

यदि वानर भालू यात्रा आरंभ वक्त आगे जाए तो उत्तम शकुन है, परंतु यदि इनका नाम कानों में पड़े तो अपशकुन का द्योतक है।

अपशकुन विचार दांए गर्दभ शब्द हो, सम्मुख काला धान्य। टूटी खाट आगे मिले तो बहुत हानि॥ कूकूर लोटे भुम्म पर, अथवा मारे कान। पांच भैंस सम्मुख पड़ें, निश्चय होवे धन॥ एक अजा: नौ स्त्री, बिल्ली दो लड़न्त। छह कुत्ता आगे पड़ें, नहीं बात में तंत॥ तीन गाय दो बानिया, एक बछड़ा एक शूद्र। हाथी सात सम्मुख पड़ें, निश्चय बिगड़े बुद्धि॥ भैंसा पर बैठा हुआ, मनुष्य सम्मुख होय। निश्चय हानि होयेगी, बचा सके ना कोय ॥ जननी का तिरस्कार होय या हो अकाल वृष्टि। क्षत्री चार सम्मुख पडे, निश्चय महाअनिष्ट ॥ तीन विप्र बैरागिया, सन्यासी केश खुलंत। भगवा व स्त्री सम्मुख पड़े, निश्चय कारण अंत॥ बंध्या, रज:, रजस्वला, भूसा हड्डी चामं। अंधा, बहरा, कूबड़ा विधवा लगड़ा पांव ॥ ईंधन लक्कड़ उन्मादिया, भैंसा दो लड़ंत। गुंड, मट्ठा, कीचड़ पड़े सम्मुख छींक हुवंत ॥ हिजड़ा विष्ठा तेल जो, मालिश तेल मनुष्य। अंग भंग नंगा पतित रोगी पूरा सुस्त॥ गंजा भिजे वस्त्र सों, चर्बी शत्रु सांप। नमक औषधि गिरगिरा कुटंबी झगड़े आप ॥ कटु बचन सम्मुख पड़े, जौ यात्रा चलती बार। कह कवि हानि महा बिगड़े सारे काज॥

यदि यात्रा के समय गधा दायीं तरफ बोले या कोई सामने से टूटी खाट लाता हुआ मिले कारज भंग होता है।यदि कुत्ता भूमि पर लेटे या कान फड़फड़ाये, पांच भैंस सामने आये,एक बकरी नौ स्त्री,दो बिल्ली लड़ती हुई, छः कुत्ते,तीन गाय,दो वैश्य, एक बैल एक शूद्र, सात हाथी, या भैंसे पर बैठा हुआ व्यक्ति यदि सम्मुख पड़े तो अपशकुन का सूचक है।यात्रा में चलते समय जननी का तिरस्कार करे या अकाल वर्षा हो, चार क्षत्रिय, तीन ब्राह्मण बैरागी, सन्यासी, खुले केशों वाला गेरूरा वस्त्र धारण करने वाला सम्मुख पड़ जाए तो अपशकुन है।इसी प्रकार बांझ औरत, स्त्री का रज, रजोवती स्त्रीभूसा,हड्डी, चमड़ा, अंधा, बहरा, कूबड़ा,विधवा स्त्री, जलाने वाली लकड़ी, उपला,पागल,गुड़,मट्ठा कीचड़ सामने आये, दो भैंसे लड़ते हुए, नपुसंक,विष्ठा,तेल मालिश किये आदमी,अंग भंग,नंगा नीच पुरुष, दीर्घ रोगी,गंजा भीगे वस्त्रों में,चर्बी, सर्प, शत्रु, नमक, औषधि,गिरगिट सामने आ जाए,अपने ही कुटुंबी सामने लड़ते हों,सामने कोई छींक दे या यात्रा के वक्त अप्रिय बचन सुनाई पड़ें तो अपशकुन कुछ अन्य शकुन अपशकुन जो पशु पक्षियों द्वारा होते हैं शकुनों में कौवा, छिपकली व अन्य पशु पक्षियों का विचार किया जाता है। काक स्पर्श व छिपकली के गिरने को अशुभ समझा गया है।यदि कौआ अचानक शोरगुल करे या किसी के सिर पर बैठे तो आर्थिक हानि दर्शाता है।यदि स्त्री के सिर पर बैठे तो पति को वित्तीय कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है।संध्या के समय मुर्गों की ध्वनियां महामारी दर्शाती हैं। जब मछलियां जल की सतह पर छलांग मारें,मेढक टर्र-टर्र करे,बिल्ली भूमि खोदे, चीटियां अपने अंडों को स्थानांतरित करें, सांपों का जोड़ा व पशु आकाश की ओर देखे,पालतू पशु बाहर जाने से घबराएं तो तुरंत ही वर्षा होती है,यदि रात्रि में दीपकीट दिखाई दे,कीड़े या सरीसृप घास के ऊपर बैठें तो भी तत्काल वर्षा होती है। यदि वर्षा ऋतु के दौरान सायंकाल में गीदड़ों की चिल्लाहट सुनाई दे तो बिल्कुल वर्षा नहीं होती।मांस भक्षी पशु-पक्षी,का दिखाई देना अशुभ व शाकाहारी पशु, पक्षी प्राय: शुभ शकुन का संकेत देते हैं। ज्योतिष में शकुनों अपशकुनों का विशेष विचार प्रश्न आदि में किया जाता है।

उल्लेखनीय है कि किसी काम की सफलता के लिए मन में उत्साह, आशा, धैर्य और पूर्ण आत्मविश्वास होना ही चाहिए।इसमें कमी आने से अपेक्षित एकाग्रता,श्रमशीलता एवं तत्परता घट जाएगी परिणामस्वरूप सफलता की संभावना में भी कमी आएगी।शुभ-अशुभ शकुनों में विश्वास करने से हाने जीवन मे हिने वाली घटनाओं का पूर्वाभास हो जाता है वही मन मे वहम होना एक नुकसान भी है मन अकारण ही आशंकित और आतंकित हो जाता है, जिससे असफलता के बीज पनपने लगते हैं और भली प्रकार प्रयास न कर पाने के कारण सफलता नहीं मिलती। स्मरणीय है कि अपशकुन हमें तभी याद आते हैं, जब हमको किसी कार्य में असफलता मिलती है। यदि पहले ही उस विषय मे विचार किया जाए तो शायद कार्य असफलता हो ही ना सफलता या असफलता का मिलना हमारी योग्यता या अयोग्यता का भी परिचायक है। हिन्दुओं में आज तक पुरुष के दाहिने और स्त्रियों के बाएं अंग फड़कने को शुभ शकुन मानते हैं और पुरुष के बाएं और स्त्रियों के दाएं अंग फड़कने को अपशकुन समझते हैं। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह नाड़ियों में रक्तप्रवाह के कारण ही अंगों में फड़कन महसूस होती है, जिसका किसी शकुन अपशकुन के साथ कोई संबंध नहीं होता।छींक आना शरीर-विज्ञान के मतानुसार एक सहज और स्वाभाविक प्रक्रिया है, जो श्वास नली में अवरोध आने पर उत्पन्न होती है,जिसके परिणामस्वरूप आया अवरोध एकाएक दूर हो जाता है। इसके अलावा हानिकारक वायुमंडल के कण जब नाक के अंदर और श्वास नली में जमा होकर अवरोध पैदा करते हैं तो छींक रूपी प्राकृतिक उपाय से शरीर की रक्षा ही होती है। यदि यह हानिकारक गंदगी छींक के माध्यम से बाहर न हो तो मानसिक तनाव, चक्कर आना जैसे बुरे प्रभाव शरीर पर पड़ते हैं। इसलिए छींक आना स्वास्थ्य की दृष्टि से लाभप्रद ही है। इसी प्रकार आंख का फड़कना शुभ या अशुभ माना जाता है, जो शरीर विज्ञान के अनुसार रक्त की अनियमितता के परिणामस्वरूप उत्पन्न होता है । रक्त प्रवाह में रुकावट और उसका दूर होना ही फड़कन का अनुभव देता है। इसलिए विज्ञान को मानने वाले जहां तक हो सके, इन अपशकुनों के चक्कर में पड़ने से बचने और कर्म में विश्वास करने की सलाह देते है जबकि कुछ ज्योतिष एवं शकुन शास्त्र के ग्रंथो और हमारी पौराणिक धार्मिक मान्यताओं अनुसार व्यक्ति के जीवन मे हर छोटी से बड़ी घटना भविष्य में होने वाली किसी न किसी अन्य घटना से जुड़ी है वैज्ञानिक मान्यता से चलने वाले लोग इन्हें भले ही पाखंड या अंध विश्वास कहे लेकिन हमारी निजी सोच एव अनुभव के आधार पर ये सभी शकुन अपशकुन किसी विशेष परिस्थिति में ही क्यो घटित होते है हर समय क्यो नही ये सबसे बड़ा विचारणीय विषय है।

ज्योतिषी के लिये स्वर ज्ञान की आवश्यकता

एस. बी. स्वर्णकार

स्वरविज्ञान ज्योतिष की एक अत्यन्त प्राचीन लुप्तप्राय विधा है, इसका ज्ञान होने पर हम अपनी गणना द्वारा ज्ञात भविष्य ज्ञान के साथ तालमेल कर सकते हैं, ज्योतिषी को केवल इशारे मिलते हैं, ज्योतिषी उन इशारों की व्याख्या कैसे करता है, यह उसकी योग्यता होती है। ज्योतिष शास्त्र गलत नहीं होता ज्योतिषी की व्याख्या गलत हो सकती है।

स्वरज्ञान होने पर ज्योतिषी योगी हो जाता है, स्वर पर सभी समय ध्यान रहने के कारण ज्योतिषी सदैव ध्यानस्थ अवस्था में रहता है, इससे उसकी एकाग्रता बढ़ती है, दैवकृपा की राह आसान हो जाती है,ज्योतिषी की भविष्यवाणी सटीक हो उसके लिये दैवकृपा होना बहुत आवश्यक है। स्वयं के भविष्य का सदैव बोध रहता है, स्वर बदल कर समय को अपने अनुकूल किया जा सकता है। अनिष्ट को टाला जा सकता है।

स्वरज्ञान के आधार पर भविष्यवाणी करने के लिए जटिल गणितीय गणना करने की आवश्यकता नहीं होती है। यह बहुत सरल है।

तिथि, नक्षत्र, ग्रह, वार, देवता, भद्रा, व्यतिपातवैधृति इत्यादि दोष इस शास्त्र में नहीं हैं।

शुक्ल पक्ष में पहिले तीन दिन चन्द्र और कृष्ण पक्ष में पहिले तीन दिन सूर्य स्वर चलता है, यह सूर्योदय से क्रम से चलते हैं और हर घंटे में बदल जाते हैं।

एक स्वर में वायु, अग्नि, पृथ्वी, जल, आकाश क्रम से 12–12 मिनिट रहते हैं ।

दिन – रात में 12 संक्रांति होती हैं, वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन चन्द्र स्वर की राशियाँ हैं। मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु, कुम्भ यह सूर्य स्वर की राशियाँ हैं।

चन्द्र स्वर चलते समय ऊपर की तरफ, बायीं तरफ और आगे बैठा हुआ दूत शुभ है सूर्य स्वर चलते समय पीठ पीछे, दाहिने या नीचे बैठा हुआ दूत शुभ है

कोई यदि घर से बाहर गया है, उसका प्रश्न आपसे किया जाय, तब प्रश्न के समय सूर्य स्वर में यदि राहू हो तो वह व्यक्ति पहिले स्थान से चल दिया है, औरदूसरे स्थान की तरफ जा रहा है अर्थात वह स्थान बदल रहा है।

जलतत्व के चलते समय प्रश्न करे तो वह व्यक्ति शीघ्र लौट आएगा, पृथ्वी तत्व है तब वह व्यक्ति खुश है, वायु तत्व है तो वह व्यक्ति दूर गया है, अग्नि तत्त्व या वायु तत्व है तो व्यक्ति को शारीरिक समस्या है।

पूर्व, पश्चिम, दक्षिण, उत्तर इन दिशाओ में पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश क्रम से बलिष्ठ होते हैं।

व्यापार के विषय में प्रश्न होने पर पृथ्वी तत्व में बहुत समय में लाभ, जल तत्त्व में तत्काल लाभ, वायु तत्व में स्वल्प लाभ, अग्नि तत्व में बना हुआ कार्य भी बिगड़ जाता है । धनिष्ठा, रोहिणी, ज्येष्ठा, अनुराधा, श्रवण, अभिजित, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र पृथ्वी तत्त्व हैं, पूर्वाषाढ़ा अश्लेषा, मूल, आद्रा, रेवती, उत्तराभाद्रपद, शतभिषा, जल तत्त्व हैं, भरणी, कृत्तिका, पुष्य, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपद, स्वाति अग्नितत्व हैं, विशाखा, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, पुनर्वसु, अश्वनि, मृगशिरा वायु तत्त्व हैं।

जो शुभाशुभ फल पूछने व्यक्ति जिस तरफ आये वह स्वर यदि चलता हो, तो वह सम्पूर्ण सिद्ध होता है, शुन्य स्वर की तरफ बैठे तो वह कार्य नहीं होता है

संतान विषयक प्रश्न में चन्द्र स्वर चलते समय कन्या, सूर्य स्वर चलते समय पुत्र, सुषुम्ना स्वर चलते समय नपुंसक संतान होती है, प्रश्न पूछते समय व्यक्ति यदि पूर्ण स्वर की तरफ आकर बैठे तो पुत्र, और विपरीत बैठे तो कन्या पृथ्वी तत्त्व और वायु तत्व में पुत्री, जलतत्व में पुत्र अग्नि तत्व में गर्भपात, आकाश तत्व में नपुंसक संतान होती है।

रोगी विषयक प्रश्न में व्यक्ति पहले शून्य स्वर में तत्पश्चात पूर्ण स्वर की तरफ बैठे तब असाध्य रोगी भी ठीक होता है, प्रश्न काल में यदि स्वर भीतर की तरफ प्रवेश कर रहा है, तब रोगी स्वस्थ होता है, यदि पिंगला स्वर चल रहा हो और प्रश्नकर्ता बायीं तरफ बैठे तो रोगी नहीं बचता, स्वर साधन से सजगता बढ़ती है, इष्ट साधन सुलभ हो जाता है, बिना इष्टदेव की कृपा के ज्योतिषी सफल नहीं हो सकता है ।ज्योतिषी को चाहिएकि ज्योतिष की जितनी विधाओं का उन्हें ज्ञान है उन सबका उपयोग कर प्राप्त परिणामों के मध्य सामंजस्य कर भविष्यवाणी करें, ताकि भविष्यवाणी की सत्यता का अधिक प्रतिशत हो और ज्योतिष शास्त्र बदनाम होने से बचे।

शुक्र ग्रह प्रकृति, स्वभाव एवं बारह भावों में महत्व

डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय
संपादक, जीवन वैभव

वैदिक ज्योतिष में शुक्र ग्रह को एक शुभ ग्रह माना गया है। इसके प्रभाव से व्यक्ति को भौतिक, शारीरिक और वैवाहिक सुखों की प्राप्ति होती है। इसलिए ज्योतिष में शुक्र ग्रह को भौतिक सुख, वैवाहिक सुख, भोग-विलास, शौहरत, कला, प्रतिभा, सौन्दर्य, रोमांस, काम-वासना और फैशन-डिजाइनिंग आदि का कारक माना जाता है। शुक्र वृषभ और तुला राशि का स्वामी होता है और मीन इसकी उच्च राशि है, जबकि कन्या इसकी नीच राशि कहलाती है। शुक्र जल तत्व ग्रह है, शुक्र ग्रह का रंग श्वेत यानि सफेद है। इसकी दिशा - दक्षिण-पूर्व यानि आग्नेय कोण है। शुक्र को 27 नक्षत्रों में से भरणी, पूर्वा फाल्गुनी और पूर्वाषाढ़ा नक्षत्रों का स्वामित्व प्राप्त है। ग्रहों में बुध और शनि ग्रह शुक्र के मित्र ग्रह हैं और तथा सूर्य और चंद्रमा इसके शत्रु ग्रह माने जाते हैं। शुक्र एक राशि में क़रीब 23 दिन तक रहता है और शुक्र ग्रह की महादशा 20 साल तक चलती है।

ज्योतिष शास्त्र में शुक्र ग्रह को अत्यंत प्रभावशाली, शुभ एवं सौन्दर्य का कारक माना गया है। यह ग्रह जीवन में भोग-विलास, कला, संगीत, सौंदर्य, प्रेम, दाम्पत्य सुख, ऐश्वर्य और धन-संपत्ति का कारक है। शुक्र को 'दैत्यों का गुरु' भी कहा जाता है।

शुक्र का प्रभाव जब दानवगुरु शुक्र लग्न भाव में बैठे हो :

शुक्र प्रथम भाव में

ज्योतिष में, शुक्र ग्रह को सौंदर्य, विवाह और जीवन के सभी भौतिक सुख सविधाओ का कारक माना जाता है। इस ग्रह के कुंडली के पहले यानी प्रथम भाव में मौजूद होने से जातक दीर्घायु, सुंदर, जीवन के सभी सुख-सुविधाओं वाला और एक शानदार वक्ता होता है। ऐसे जातक स्वच्छता के साथ रहने वाले और अच्छे वस्त्रों के शौकीन होते हैं। इसके साथ ही शुक्र के प्रभाव इन जातकों की रुचि गायन, वादन और चित्रकला या कला के क्षेत्र में हो सकती है। ऐसे जातक राजाओं के समान- प्रतापी और पराक्रमी होते हैं। इसके अलावा इन जातकों की रुचि, काम क्रीड़ा और विलासिता में भी हो सकती है। ऐसे व्यक्तियों को अपनी वाणी पर ध्यान देना होता है , यह बहुत वाचाल होते है इन्हे इस पर ध्यान देना होगा। ऐसे जातक अपने जीवन में प्रेम को अधिक महत्व देते हैं कि जब ये अकेले होते हैं तब किसी रिश्ते को शुरू करने के लिए या विपरीत लिंग के साथ जुडने हेतु पहल करने से पीछे नहीं हटते है । बली शुक्र व्यक्ति के वैवाहिक जीवन को सुखी बनाता है। यह पति-पत्नी और विवाह पूर्व प्रेम सम्बन्धो के बीच प्रेम की भावना को बढ़ाता है, ऐसे जातक भौतिक सुखों का आनंद लेते है एवं साहित्य एवं कला में रुचि लेते है। जिनका शुक्र निर्बल होता है उनके वैवाहिक जीवन में परेशानियाँ आती हैं। पती-पत्नि के बीच मतभेद उत्पन्न हो जाते हैं, व्यक्ति के जीवन में दरिद्रता आती है और वह भौतिक सुखों के अभाव में रहता है।

द्वितीय भाव में शुक्र

दूसरे भाव में शुक्र होने के कारण आप का मुँह एक तारे की तरह चकता रहेगा। यह बुद्धिमान और मृदुभाषी होंगे , स्वभाव से मिलनसार और नीतिपूर्ण बातें करने वाले हो सकते हैं। इनकी बुध्दि बहुत अच्छी यानि यह कुशाग्रबुद्धि वाले होंगे। यह कई प्रकार की गुड़ विद्याओं को जानने वाले होंगे। ऐसे जातक अपने सपनों को सच करने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं। कुंडली के दूसरे घर में शुक्र जातक को कला, संगीत और सौंदर्य से संबंधित वस्तुओ पर खर्च करने की लिए प्रेरित करता है। ऐसे जातक शानदार, सुविधा संपन्न और आरामदायक घर में रहना पसंद करते हैं, क्योंकि वे ऐसा घर अफ़्फोर्ड कर सकते है मतलब ऐसे जातक संपन्न होंगे। इसी विलासी प्रवृति की वजह से यह स्त्रियों में अधिक लोकप्रिय होंगे। आपके कपडे और आपके चेहरे पर सिलवते कभी कभार ही मिल पाएंगी , यानि यह हमेशा जवान ही रहेंगे इन्हे बुढ़ापा नहीं आ पायेगा आ भी गया तो किसी को दिखाई नहीं देगा। इनकी दान पुण्य आदि कार्यों में गहरी रुचि होगी, खाने पिने के भी यह शौकीन रहेंगे। लग्न में शुक्र व्यक्ति को गायन, वादन, नृत्य, चित्र कला के प्रति रूचि पैदा कराता है। शुक्र के प्रभाव से व्यक्ति काम-वासना, भोग विलास को अधिक प्राथमिकता देता है। बली शुक्र व्यक्ति के वैवाहिक जीवन को सुखी बनाता है। यह पति-पत्नी के बीच प्रेम की भावना को बढ़ाता है और प्रेम करने वाले जातकों के जीवन में रोमांस में वृद्धि करता है , पीड़ित शुक्र के कारण व्यक्ति के वैवाहिक जीवन में परेशानियाँ आती हैं। पती-पत्नि के बीच मतभेद होते हैं। व्यक्ति के जीवन में दरिद्रता आती है और वह भौतिक सुखों के अभाव में जीवन जीने को मजबूर रहता है।

तृतीय भाव में शुक्र

जन्म कुंडली में तीसरे भाव में शुक्र का होना व्यक्ति के जीवन में खास प्रभाव डालता

है। तीसरा भाव पराक्रम, संचार, छोटे भाई-बहन, कला, यात्रा, और प्रयासों का कारक है। शुक्र प्रेम, सौंदर्य, विलासिता, और कला का ग्रह है। शुक्र के प्रभाव से व्यक्ति में स्वाभाविक आकर्षण और सौंदर्य होता है। वे अपने संचार कौशल और व्यवहार से दूसरों को आसानी से प्रभावित कर सकते हैं। तीसरे भाव का संबंध संचार से है। शुक्र की उपस्थिति व्यक्ति को सुंदर और प्रभावशाली बोलने वाला बनाती है। ऐसे लोग लेखन, गायन, नृत्य, या कला से जुड़े क्षेत्रों में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। शुक्र यहां रिश्तों को मधुर और सौहार्दपूर्ण बनाता है। छोटे भाई-बहनों के साथ अच्छे संबंध बने रहते हैं। वे भाई-बहनों के प्रति सहायक होते हैं और उनसे सहयोग प्राप्त कर सकते हैं। तीसरे भाव में शुक्र वाले लोग यात्रा का आनंद लेते हैं, विशेष रूप से आरामदायक और विलासिता से भरी यात्राएं। वे अपने जीवन में सुख-सुविधाओं पर अधिक ध्यान देते हैं। यह स्थिति व्यक्ति को साहसी और रचनात्मक बनाती है। वे अपने विचारों को प्रभावशाली तरीके से व्यक्त कर सकते हैं और नए प्रोजेक्ट्स में आगे बढ़ने का उत्साह रखते हैं। व्यक्ति के रिश्ते में स्थिरता और प्रेम होता है। वे रोमांटिक और अपने साथी के प्रति वफादार होते हैं। वे कला, संगीत, फैशन, या मनोरंजन से संबंधित क्षेत्रों में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। अगर शुक्र अशुभ हो या पाप ग्रहों से प्रभावित हो, तो भाई-बहनों से मतभेद हो सकते हैं। रिश्तों में अस्थिरता आ सकती है। विलासिता की अति से समस्याएं हो सकती हैं, जैसे आर्थिक अस्थिरता। ऐसे में जातकों को शुक्र ग्रह से संबंधित उपाय करना चाहिए।

चतुर्थ भाव में शुक्र

शुक्र यानि Venus एक सुख, प्रेम, विलासिता और भौतिक समृद्धि देने वाला ग्रह है। जब शुक्र चौथे भाव में स्थित होता है, तो शुक्र अधिकतर मामलों में अच्छे परिणाम देता है। ऐसा माना जाता है की इसके कारण आपका शरीर सुंदर एवं हस्त पुष्ट होगा और आप परोपकारी व्यक्ति रहेंगे। व्यवहारिक रूप से यह कुशल, पराक्रमी और प्रसन्न रहने वाले व्यक्ति बनेंगे। ऐसे जातक थोड़े वाचाल रहते है यानि बोलते अधिक है। यह ह्रदय से उदार और दूसरों का हित चाहने वाले होंगे। धार्मिक कार्यों में भी इनकी काफी रुचि रहेगी, इनका मन पूजा और उत्सवों के दौरान होने वाले कामों में खूब लगता है, जातक को भव्य

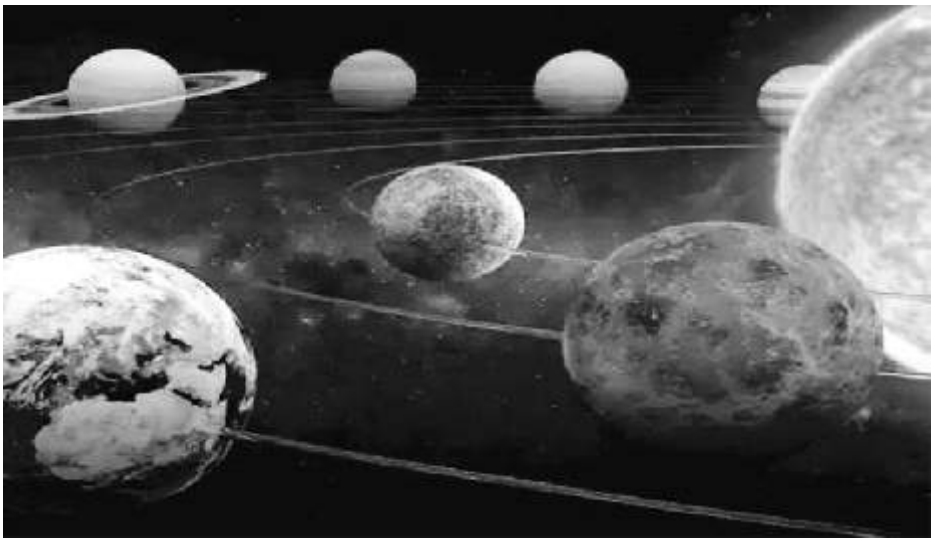

मकान, वाहन, और भौतिक सुख की प्राप्ति होती है, माँ के साथ भावनात्मक जुड़ाव होता है, घर में सौंदर्य, प्रेम, और शांति का वातावरण बना रहता है। जातक कला के क्षेत्र से जुड़ा होता है, उन्हें संगीत, कला, फैशन, डिजाइनिंग, फिल्म, या अभिनय में सफलता मिल सकती है। शुक्र प्रेम का कारक ग्रह है, इसलिए जातक को रोमांटिक और आकर्षक जीवनसाथी मिलता है। और उनकी बॉन्डिंग भी बहुत अच्छी रहती है परस्पर प्रेम भी रहता है। जातक धनवान होता है और अपनी कमाई का थोड़ा अंश अपने मित्रो और अपने ऐशो-आराम में खर्च करता है। यदि चौथे भाव में बैठा शुक्र पीड़ित हो तब माता के स्वास्थ्य में दिक्कतें आ सकती हैं।, विलासिता में अत्यधिक लिप्त होने से आर्थिक एवं शारीरिक हानि हो सकती है, वह आलसी भी होता जाता है और भोग-विलास में डूबा रह सकता है, जिससे सफलता में देरी हो सकती है। प्रेम सम्बन्ध और वैवाहिक सम्बन्ध में दिक्क़ते आती रहती है।

पंचम भाव में शुक्र

जब शुक्र पंचम भाव में स्थित होता है, तो यह व्यक्ति को प्रेमी, रचनात्मक, कलात्मक और आकर्षक व्यक्तित्व प्रदान करता है। यहां स्थित शुक्र व्यक्ति के लिए शुभ फलदायी रहता है। यह सौंदर्य सम्पन्न और सद्गुणी व्यक्ति होते हैं। यह ईश्वर पर विश्वास करने वाले और उदार होते हैं। यह दान पुण्य के कार्यों में विश्वास रखते हैं। यह प्रेम-प्रसंगों में सफल होता है, इनका विपरीत लिंग के प्रति सहज आकर्षण रहता है। प्रेम विवाह और सही जीवनसाथी के योग बनते हैं। संतान सुंदर, रचनात्मक और बुद्धिमान होती है, बच्चे विलासिता और सुशिक्षित परिवार में पलते है। उच्च शिक्षा, विशेषकर फैशन, म्यूजिक, फिल्म, आर्ट्स और डिज़ाइनिंग में सफलता मिलती है। इन्हे अभिनय, लेखन, संगीत, और कला में रुचि होती है। ललितकलाओं में भी इनकी रुचि होगी। नाटक सिनेमा आदि से भी इनका गहरा लगाव होगा। इन्हे गुरु भी अच्छे मिलते है जो इन्हे एक सही शिक्षा देकर इनका भविष्य संवार देते है। इन्हे भाग्य का साथ मिलता है और धन प्राप्ति के सुअवसर मिलते रहते हैं। इन्हे सामान्य प्रयास से भी धन प्राप्ति होती रहेगी। इनके ऐसे योग भी बनते है की इन्हे अचानक ही कहीं से प्रचुर धन मिल सकता है। यदि पंचम भाव में शुक्र निर्बल है पीड़ित है तब प्रेम संबंधों में धोखा या असफलता मिल

सकती है , संतान से जुड़ी समस्याएं रहेंगी वे शिक्षित नहीं रहेंगी या उनका मन पढ़ाई में नहीं लगेगा। आलस्य और विलासिता की अधिकता से केरियर और स्वस्थ्य पीड़ित रहेगा, ऐसे जातको का अधिक व्यय विलासिता पर होगा जिससे इन पर क़र्ज़ बढ़ सकता है। अनैतिक संबंध भी रह सकते है जो की पारिवारिक जीवन में भूचाल ला सकती है। विवाह से पूर्व कई प्रेम संबंध असफल हो सकते हैं या प्रेम संबंधों में विवाद उत्पन्न हो सकते हैं।

षट् भाव में शुक्र

जन्म कुंडली के छठे भाव में शुक्र होने पर व्यक्ति के जीवन में कुछ विशेष प्रभाव देखे जा सकते हैं। जहाँ छठा भाव रोग, ऋण, शत्रु, सेवा, संघर्ष, प्रतिस्पर्धा, क़ानूनी मामले और दैनिक कार्यों का भाव माना जाता है, वही शुक्र सौंदर्य, प्रेम, भोग-विलास, विवाह, कला, संगीत, वाहन, वस्त्र और ऐश्वर्य का कारक है। जब इनका मिलन होता है तब परिणाम शुभ अशुभ मिल सकते है। ऐसे जातक सुशिक्षित और विवेकवान रहेंगे। लेकिन यहां स्थित शुक्र आपको डरपोक बना सकता है अथवा आपको स्त्रियों से भय लग सकता है, लेकिन स्त्रिया आपका साथ नहीं छोड़ती है, कही आपकी बॉस बनकर कही आपकी कलीग बनकर या किसी और रूप में आपको परेशान अवश्य करेगी, लेकिन लाभ भी आपको उन्ही की वजह से मिलेगा। यद्यपि ऐसे जातक की जीवनसाथी आकर्षक और सुंदर होती है लेकिन वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। आपको शत्रुओं से पीडा भी मिल सकती है, यद्यपि कोर्ट-कचहरी या कानूनी मामलों में विजय मिल सकती है, लेकिन परेशानी अवश्य रहेगी। आपके खर्चे आपकी आमदनी से कही अधिक हो सकते हैं। आपको अपने खर्चो पर लगाम लगाने की आवश्यकता रहेगी। यदि शुक्र ग्रह कुंडली में कमज़ोर अथवा पीड़ित हो तो वैवाहिक जीवन में कलह या असंतोष की स्थिति हो सकती है, आप दोनों के बीच बनेगी नहीं, बीच में अहम् आ जायेगा। ऐसे जातको को प्रेम संबंधों में धोखा या दुख की संभावना रहती है। व्यक्ति अधिक पैसा, अधिक भोग-विलास या ऐशोआराम के पीछे स्वास्थ्य की उपेक्षा कर सकता है, जातक मेहनती रहता है लेकिन जितना कमाता है ऐसो आराम पर अधिक खर्च करता है सेविंग्स ना के बराबर होती है, लेकिन फिर भी व्यक्ति के जीवन में पैसो की कमी लगातार बानी रहती है और वह अपनी इस कमी को दूर करने में जीता जाता है। जातक के मूत्राशय, प्रजनन अंगों में रोग हो सकते हैं। कमज़ोर शुक्र के कारण जातक की कामुक शक्ति कमज़ोर हो सकती है। ऐसे में जातकों को शुक्र ग्रह से संबंधित उपाय करना चाहिए।

सप्तम भाव में शुक्र

जन्म कुंडली के सप्तम भाव को पति-पत्नी संबंध, विवाह, साझेदारी, व्यापारिक साझेदारी, सार्वजनिक जीवन और सामाजिक संबंधों का भाव माना जाता है। शुक्र स्वाभाविक रूप से प्रेम, सौंदर्य, आकर्षण, भोग-विलास, कला और दांपत्य सुख का कारक ग्रह है। जब शुक्र सप्तम भाव में स्थित होता है, तो यह व्यक्ति के विवाह, रिश्तों और साझेदारी के मामलों में विशेष प्रभाव डालता है। सबसे पहले शुक्र के सप्तम भाव में होने के सकारात्मक पहलुओं को देखते है। पहला है दांपत्य जीवन में सुख - देखने में आप बडे ही आकर्षक व्यक्तित्त्व के स्वामी होंगे। इस स्थिति में जातक को सुंदर, आकर्षक, और समझदार जीवनसाथी की प्राप्ति हो सकती है। दूसरा है आकर्षक व्यक्तित्व - व्यक्ति का स्वभाव मिलनसार, विनम्र और कलात्मक हो सकता है, जिससे लोग उसकी ओर खिंचते हैं। तीसरा है व्यापार में सफलता - साझेदारी वाले कार्य, कला, फैशन, डिजाइन, होटल, इवेंट मैनेजमेंट आदि क्षेत्रों में लाभ मिल सकता है। चौथा है सामाजिक लोकप्रियता - ऐसे लोग सामाजिक आयोजनों में आकर्षण का केंद्र होते हैं। और पांचवा है कूटनीतिक क्षमता - रिश्तों में संतुलन बनाए रखने और विवाद सुलझाने की क्षमता अधिक होती है। अब बात करते है नकारात्मक पहलुओं की यानि शुक्र सप्तम भाव में हो लेकिन पीड़ित हो निर्बल हो तब वैवाहिक कलह होने लगता है यानि जीवनसाथी के साथ मनमुटाव, गलतफहमियां या अलगाव की स्थिति बन सकती है। दूसरा नकारात्मक प्रभाव अत्यधिक भोग-विलास - यानि भौतिक सुखों में अत्यधिक लिप्तता से स्वास्थ्य और आर्थिक स्थिति प्रभावित हो सकती है। तीसरा पहलू है अस्थिर संबंध - विवाह या प्रेम संबंधों में स्थिरता की कमी, एक से अधिक संबंधों की संभावना। और पांचवा है आलस्य और विलासिता इसका मतलब मेहनत से बचने की प्रवृत्ति और विलासी जीवनशैली। विवाह के पश्चात भाग्योदय होता है। स्त्रियों के माध्यम से सुख मिलता है। लेकिन अधिक विलासिता और व्यभिचार से बचाव जरूरी होगा।

अष्टम भाव में शुक्र

जन्म कुंडली का अष्टम भाव रहस्यों, आयु, अचानक घटने वाली घटनाओं, गुप्त विद्या, दुर्घटनाओं, पैतृक संपत्ति, वैवाहिक संबंधों की गहराई और जीवन में परिवर्तन का भाव माना जाता है। शुक्र प्रेम, सौंदर्य, भोग-विलास, कला और दांपत्य सुख का कारक है। जब शुक्र अष्टम भाव में स्थित होता है, तो यह विवाह, दांपत्य, आर्थिक स्थिति और मानसिक प्रवृत्तियों पर गहरा असर डालता है। आठवें भाव में शुक्र होने के कारण जातक देखने में सुंदर होंगे। इनकी आंखें बडी होंगी और यह गर्वीले स्वभाव के होंगे। यह साहसी और हमेशा प्रसन्नचित्त रहने वाले होंगे । यह विद्वान, मनस्वी, धर्मात्मा और सदाचारी हो सकते हैं। और यह एक अच्छे ज्योतिषी भी हो सकते हैं और इन्हे तंत्र, शोध, मनोविज्ञान आदि विषयों में रुचि और सफलता मिल सकती है । शारीरिक, आर्थिक अथवा स्त्रीविषय सुखों में से कोई एक सुख आपको पर्याप्त मात्रा में मिलता है। ऐसे जातको को जीवनसाथी के माध्यम से या पैतृक धन, संपत्ति या प्रतिष्ठा प्राप्त हो सकती

है। इनमे प्रेम और विवाह में गहरी भावनात्मक जुड़ाव की प्रवृत्ति देखने को मिल सकती है। जातक के व्यक्तित्व में चुंबकीय और रहस्यमय आभा होती है, जातक का व्यक्तित्व लोगो को आकर्षित करता है और वे इनकी और खींचे चले आते है . यदि शुक्र अशुभ या पाप ग्रहों से प्रभावित हो तो कामों में भी कठिनाइयां या व्यवधान आते हैं। शत्रुओं पर कठिनाई से विजय मिलती है। वैवाहिक जीवन में तनाव बना रहता है - जीवनसाथी के साथ मानसिक दूरी, गलतफहमियां या विवाद हो सकते है । ऐसे जातको को जननांग, प्रजनन तंत्र, त्वचा या हार्मोन संबंधी स्वास्थ्य समस्याएं घेर लेती है। इसका समय समय पर उपचार जरूरीहै। अचानक हानि - धोखा, दुर्घटना या अचानक आर्थिक नुकसान संभव है । ऐसे जातको को मानसिक अशांति रहेगी ,रिश्तों में असुरक्षा और अविश्वास की भावना रहेगी ।

नवम भाव में शुक्र

जन्म कुंडली का नवम भाव भाग्य, धर्म, उच्च शिक्षा, गुरु, यात्रा, आध्यात्मिकता, परंपरा और जीवन दर्शन का भाव माना जाता है। शुक्र प्रेम, सौंदर्य, भोग-विलास, कला और दांपत्य सुख का कारक ग्रह है। जब शुक्र नवम भाव में स्थित होता है, तो यह व्यक्ति के भाग्य, धार्मिक दृष्टिकोण, और जीवन की दिशा को प्रभावित करता है। नवम भाव में शुक्र स्थित होने के कारण जातक शारीरिक रूप से बलिष्ठ होंगे। यह धार्मिक, शुद्धचित्त, परोपकारी और गुणवान व्यक्ति होंगे। यह ईश्वर पर विश्वास करने वाले धार्मिक व्यक्ति होंगे । यह पवित्र तीर्थों की यात्रा करने वाले, जप आदि कार्य करने वाले होंगे। ऐसे जातकों को भाग्य का साथ भरपूर मिलेगा, जीवन में अच्छे अवसर और सौभाग्य की प्राप्ति होगी । इन्हे विदेश यात्रा के सुअवसर मिलेंगे , सुख-सुविधा और विलास के उद्देश्य से लम्बी यात्राएं करेंगे। कलात्मक और सांस्कृतिक झुकाव रहेगा, संगीत, नृत्य, पेंटिंग, फैशन या साहित्य में रुचि रहेगी। जीवनसाथी से भाग्य वृद्धि मिलेगी यानि विवाह के बाद जीवन में समृद्धि और सफलता आएगी । यदि शुक्र अशुभ या पाप ग्रहों से प्रभावित हो तो धर्म में दिखावा रहेगा , धार्मिकता केवल बाहरी आडंबर तक सीमित रहेगी। भोग-विलास में अति हो जाएगी, विलासिता और सुख-सुविधाओं में जरूरत से ज्यादा लिप्त हो जाने से अपने लक्ष्य से भ्रमित हो सकते है। अपने गुरु या बड़े-बुजुर्गों से मतभेद रह सकता है , उनकी सलाह मानने में कठिनाई हो सकती है जबकि वो आपके हितेषी रहेंगे लेकिन फिर भी आपके द्वारा उनका सम्मान नहीं किया जायेगा। अत्यधिक रोमांटिक दृष्टिकोण आपके जीवन को मोड़ सकता है ,रिश्तों में भावनाओं की अधिकता से निर्णय में कमी रहेगी। आपके निर्णय कमजोर रहेंगे।

दशम भाव में शुक्र

दशम भाव में शुक्र यानि Venus की स्थिति को ज्योतिष शास्त्र में बहुत खास माना गया है, क्योंकि दशम भाव को कर्मभाव कहा जाता है। यह भाव व्यक्ति के करियर, समाज में प्रतिष्ठा, कार्यक्षेत्र, व्यवसाय, अधिकार, सफलता और यश को दर्शाता है। दशम भाव में स्थित शुक्र आपके शरीर को सुंदर बनाता है और आकर्षक व्यक्तित्त्व देता है। शुक्र की कृपा से व्यक्ति को समाज में आकर्षक और लोकप्रिय छवि मिलती है। समाज में नाम, प्रसिद्धि और मान-सम्मान की प्राप्ति होती है। इनका स्वभाव शांत और मिलनसार होता है। जातक धार्मिक और श्रद्धालु स्वभाव के होंगे। यज्ञ और पूजा पाठ में इनकी अच्छी रुचि रहेगी । दान पुण्य जैसे कार्यों में इनकी पूरी श्रद्धा होगी। जातक को कला, सौंदर्य, फैशन, डिजाइनिंग, फिल्म, संगीत, नृत्य, अभिनय, आभूषण, होटल, सजावट, मीडिया और क्रिएटिव क्षेत्रों में सफलता मिलती है। दशम भाव का शुक्र व्यक्ति को वाहन, मकान, आभूषण और भोग-विलास की वस्तुएँ दिलाता है। जीवन में धन और वैभव का योग मजबूत होता है। आपको अनेक शास्त्रों का ज्ञान होगा और यह एक अच्छे वक्ता होंगे। यदि शुक्र शुभ है तो जीवनसाथी से सहयोग और करियर में मदद मिलती है। लेकिन अशुभ होने पर प्रेम संबंधों में कलह, करियर में बाधाएँ और विवाहिक जीवन में अस्थिरता हो सकती है। ऐसे जातक विपरीत लिंगियों के चहेते होते है इनका विवाह उच्चकुल में होना चाहिए अथवा इनका ससुराल धन सम्पदा से संपन्न होता है। विवाह के पश्चात भाग्योन्नति और धनलाभ के योग बनते है। यदि शुक्र निर्बल है तब कार्यक्षेत्र में बार-बार परिवर्तन होता है, प्रेम संबंधों या विवाह के कारण करियर में बाधाएँ, आलस्य, विलासप्रियता और गलत संगति से नुकसान संभव है।

एकादश भाव में शुक्र

एकादश भाव यानि 11th House में शुक्र की स्थिति को ज्योतिष में बहुत शुभ माना गया है। यहां स्थित शुक्र कुंडली में विभिन्न शुभ परिणाम देता है। एकादश भाव को लाभ भाव कहा जाता है। यह भाव धन-लाभ, इच्छाओं की पूर्ति, बड़े मित्र वर्ग, नेटवर्क, समाज में सहयोग और आकांक्षाओं से जुड़ा होता है। इनका स्वरूप आकर्षक और शरीर निरोगी होगा। यह गुणवान और अच्छे स्वाभाव वाले व्यक्ति होते हैं, सुशील और परोपकारी भी होते हैं। यह स्वभाव से उदार और सदाचार सम्पन्न व्यक्ति होते हैं। यह उत्तम गुणों से सम्पन्न, हंसमुख और सत्यवादी होते हैं। यह समाज के हित में कर्म करने वाले व्यक्ति होते हैं। यह स्वभाव से धार्मिक और शास्त्रोचित आचरण करने वाले होते हैं। यह ज्ञानी और ईश्वर भक्त होते हैंइनकी रुचि नृत्य और गायन विद्या में हो सकती है। यह संगीत पसंद करते हैं इनके घर-परिवार के लोंगों भी संगीत पसंद हो सकता है। जातक को मित्रों और समाज से धन का लाभ होता है। स्त्रियों के सहयोग से भी आर्थिक वृद्धि होती है, वह स्त्री या तो जातक की माँ , पत्नी या बॉस हो सकती है । भोग-विलास, सुंदर वस्तुएँ और कला-संबंधी सुख मिलते हैं, जीवन की अधिकांश इच्छाएँ और आकांक्षाएँ पूरी होती हैं। अच्छे मित्रों का साथ मिलता है, बड़े लोगों, अधिकारियों और समाज के

प्रभावशाली व्यक्तियों से संबंध बनते हैं। यदि शुक्र शुभ है तो जीवनसाथी से लाभ और सहयोग मिलता है। प्रेम संबंधों से भी लाभ और करियर में उन्नति हो सकती है। ऐसे जातक कला, संगीत, फैशन, फिल्म, मीडिया, डिजाइन, होटल, आभूषण या ग्लैमर से जुड़े क्षेत्रों में प्रगति करते है। यदि शुक्र पीड़ित या नीच का हो तब गलत या असंगत मित्रता या स्त्री संबंधों के कारण हानि हो सकती है, ऐसी स्तिथि में मित्रता सावधानी से करें। विलासिता और ऐश्वर्य में अति खर्च होगा। प्रेम संबंधों के कारण सामाजिक बदनामी हो सकती है।

द्वादश भाव में शुक्र

द्वादश भाव यानि 12th House में शुक्र की स्थिति ज्योतिष में बहुत रोचक मानी जाती है। द्वादश भाव को व्यय भाव, मोक्ष भाव और परदेश भाव कहा गया है। यह भाव खर्च, विदेश यात्रा, दान-पुण्य, ध्यान-भक्ति, अस्पताल-कारागार जैसे स्थान, और अंतर्मन की गुप्त इच्छाओं का सूचक है। जब शुक्र यहां स्थित होता है, तो जातक के जीवन में भोग-विलास, प्रेम-संबंध और आध्यात्मिक झुकाव मिलते हैं। यहां शुक्र के स्थित होने से व्यक्ति वैभवयुक्त और तेजस्वी होते है। यह गुणवान लोगों का आदर करते हैं और श्रेष्ठकर्म करने वाले व्यक्ति होते हैं। इन्हे जीवन में धन सम्पत्ति का अभाव देखने को नहीं मिलेगा। ये व्यर्थ के कामों में धन खर्च करने से बचते हैं लेकिन अपने सुख-सुविधा के लिए खर्च करने में संकोच नहीं करते। इन्हे विलासिता सुख, आरामदायक जीवन और भौतिक सुविधाएँ प्राप्त होती हैं। सुंदर वस्त्र, आभूषण, वाहन और सुन्दर घर का आनंद लेते है। व्यक्ति को विदेश यात्रा या विदेश में धन-लाभ और सफलता मिल सकती है, या फिर देश में रहते हुए भी विदेशी पृष्ठभूमि वाला काम करके धन सम्पदा कमा सकते है। यह अध्यातिक होते है और इनकी दान-पुण्य में रुचि रहती है। इनका विवाह अपेक्षाकृत जल्दी

हो सकता है। यह विपरीतलिंगियों के आपकर्षण का केन्द्र होते हैं। यह अपने आचरण से सबको प्रसन्न रखने की कोशिश करते हैं और बहुत हद तक कामयाब भी होते हैं। इनके मित्रों की संख्या अधिक होती है। यदि शुक्र नीच का हो या पीड़ित हो तब अत्यधिक खर्च और आर्थिक हानि उठानी पड़ सकती है . ऐसे जातक गलत संगति में पड़ कर, गलत व्यसन, या अनैतिक संबंधों में पड़ जाते है जिससे बदनामी का डर लगा रहेगा। प्रेम-संबंधों के कारण विवाद या धन का नुकसान हो सकता है।

ज्योतिष शास्त्र में शुक्र को सौंदर्य, भोग-विलास, कला, स्त्रियों, प्रेम, वाहन, आभूषण, सुख-सुविधा और दांपत्य सुख का कारक माना गया है। जब शुक्र अशुभ या पीड़ित होता है तो जीवन में वैवाहिक कलह, प्रेम-संबंधों में बाधा, आर्थिक नुकसान, विलासिता में अति खर्च, स्वास्थ्य समस्याएँ (विशेषकर प्रजनन तंत्र / त्वचा संबंधी रोग) देखने को मिलते हैं। यदि बारहवो भाव में बताये गए प्रभावों के अनुसार शुक्र फल नहीं दे रहा है तो आप समझ सकते है की शुक्र की स्तिथि कमजोर है वह निर्बल है नीच का होकर बैठा है तब बताये जा रहे उपायों को करना है आपका शुक्र निरंतर शुभ होता जायेगा .

पहला उपाय है-

दान-पुण्य- शुक्रवार के दिन सफेद वस्त्र, चावल, दूध, दही, शक्कर, चांदी या सुहाग सामग्री दान करें, इससे शुक्र को थोड़ा बल मिलेगा।

2. **पूजा-पाठ व मंत्र**- शुक्र के बीज मंत्र की एक माला प्रतिदिन अवश्य करना चाहिए वह मंत्र है ॐ द्रां द्रीं द्रौं स: शुक्राय नम:। देवी लक्ष्मी और माता दुर्गा की नियमित पूजा करें इससे भी लाभ अवश्य मिलेगा।
3. **स्त्रियों का सम्मान :** व्यसन (शराब, नशा, वासना आदि) से दूर रहे। स्त्रियों का सम्मान करें, उनका अपमान कभी न करें। त्नी या जीवनसाथी को प्रसन्न रखना भी शुक्र को मजबूत करता है।
4. **हीरा रत्न :** हिरा भी पहना जा सकता है लेकिन किसी ज्योतिषी से परामर्श के पश्चात ही पहने तो ही श्रेयस्कर होगा।
5. **चांदी का आभूषण :** चांदी का आभूषण धारण करने से शुक्र गृह प्रभावित होता है, खासकर अंगूठे में. पहन ले।

क्रिस्टलः ऊर्जा को संतुलित करने का प्राकृतिक तरीका

डॉ. प्रीति वाघमारे

क्रिस्टल प्राकृतिक रूप से बने खनिज होते हैं जिनकी एक विशिष्ट आंतरिक संरचना होती है। ये ऊर्जा को अवशोषित, संचारित और परिवर्तित कर सकते हैं। क्रिस्टल का उपयोग ज्योतिष, वास्तु, और मेडिटेशन में सकारात्मक ऊर्जा को आकर्षित करने और नकारात्मक ऊर्जा को दूर करने के लिए किया जाता है।

क्रिस्टल क्यों पहनना चाहिए?

1. ऊर्जा संतुलनः क्रिस्टल हमारी ऊर्जा को संतुलित करते हैं और सकारात्मकता बढ़ाते हैं।

2. नकारात्मक ऊर्जा से बचावः क्रिस्टल नकारात्मक ऊर्जा को अवशोषित कर लेते हैं और हमें सुरक्षित रखते हैं।

3. आध्यात्मिक विकासः क्रिस्टल आध्यात्मिक विकास में मदद करते हैं और हमारी अन्तर्ज्ञान को बढ़ाते हैं।

4. स्वास्थ्य लाभः कुछ क्रिस्टल स्वास्थ्य लाभ भी प्रदान करते हैं, जैसे कि तनाव कम करना और नींद को बेहतर बनाना।

5. सकारात्मकता बढ़ानाः क्रिस्टल सकारात्मकता बढ़ाते हैं और हमारे जीवन में खुशी और समृद्धि लाते हैं।

क्रिस्टल और ज्योतिष

क्रिस्टल का उपयोग ज्योतिष में ग्रहों के प्रभाव को संतुलित करने के लिए किया जाता है। हर ग्रह के लिए एक विशिष्ट क्रिस्टल होता है जो उसके प्रभाव को बढ़ाता है या कम करता है।

– **अमेथिस्ट :** शनि और गुरु के प्रभाव को संतुलित करता है, आध्यात्मिक विकास और मानसिक शांति प्रदान करता है।

– **रोज क्वार्ट्ज :** शुक्र के प्रभाव को बढ़ाता है, प्रेम और संबंधों में सकारात्मकता लाता है।

– **सिट्रीन** : गुरु के प्रभाव को मजबूत करता है, सफलता और समृद्धि प्रदान करता है।

– **ब्लैक टूरमलाइन :** शनि और राहु के नकारात्मक प्रभाव को दूर करता है, सुरक्षा और स्थिरता प्रदान करता है।

– **क्लेयर क्वार्ट्जः** सभी ग्रहों के प्रभाव को संतुलित करता है, सकारात्मकता और ऊर्जा बढ़ाता है।

– **लैवेंडर क्वार्ट्ज** : शनि के प्रभाव को संतुलित करता है, मानसिक शांति और आध्यात्मिक विकास प्रदान करता है।

– **ग्रीन एवेन्ट्यूरिन :** शुक्र के प्रभाव को बढ़ाता है, प्रेम और संबंधों में सकारात्मकता लाता है।

– **रेड जास्पर :** मंगल के प्रभाव को संतुलित करता है, ऊर्जा और आत्मविश्वास बढ़ाता है।

– **मूनस्टोन :** चंद्रमा के प्रभाव को संतुलित करता है, भावनात्मक स्थिरता और अंर्तज्ञान बढ़ाता है।

– **गार्नेट :** मंगल के प्रभाव को मजबूत करता है, ऊर्जा और आत्मविश्वास बढ़ाता है।

क्रिस्टल के रूप

क्रिस्टल को विभिन्न रूपों में उपयोग किया जा सकता है, जैसे किः

1. रॉ क्रिस्टलः प्राकृतिक रूप से बने क्रिस्टल जिन्हें किसी भी प्रकार की प्रक्रिया से नहीं गुजरना पड़ा होता है।

2. ब्रेसलेटः क्रिस्टल को धागे या धातु में पिरोकर बनाया गया एक आहार्य।

3. पेंडेंटः क्रिस्टल को धातु में जड़कर बनाया गया एक आहार्य।

4. क्लस्टरः कई क्रिस्टल एक साथ जुड़े हुए होते हैं।

5. पॉइंटः क्रिस्टल का एक नुकीला टुकड़ा जो ऊर्जा को केंद्रित करने के लिए उपयोग किया जाता है।

क्रिस्टल की देखभाल कैसे करें?

1. साफ करेंः क्रिस्टल को नियमित रूप से साफ करें ताकि नकारात्मक ऊर्जा दूर हो।

2. चार्ज करेंः क्रिस्टल को सूर्य की रोशनी या चांदनी में रखें ताकि उनकी ऊर्जा बढ़े।

3. सावधानी से रखेंः क्रिस्टल को सावधानी से रखें ताकि वे टूट न जाएं।

4. प्रोग्राम करेंः क्रिस्टल को अपनी इच्छाओं के अनुसार प्रोग्राम करें ताकि वे आपकी मदद कर सकें।

क्रिस्टल के प्रकार

1. हीलिंग क्रिस्टलः स्वास्थ्य और आध्यात्मिक विकास के लिए उपयोग किया जाता है।

2. प्रोटेक्शन क्रिस्टलः नकारात्मक ऊर्जा से बचाव के लिए उपयोग किया जाता है।

3. लव क्रिस्टलः प्रेम और संबंधों में सकारात्मकता लाने के लिए उपयोग किया जाता है।

4. सक्सेस क्रिस्टल: सफलता और समृद्धि के लिए उपयोग किया जाता है।

5. स्पिरिचुअल क्रिस्टल: आध्यात्मिक विकास और मानसिक शांति के लिए उपयोग किया जाता है।

क्रिस्टल के विकल्प

1. रूबी : माणिक की जगह रूबी का उपयोग कर सकते हैं।

2. एमराल्ड : पन्ना की जगह एमराल्ड का उपयोग कर सकते हैं।

3. सफायर : नीलम की जगह सफायर का उपयोग कर सकते हैं।

4. डायमंड : हीरे की जगह डायमंड का उपयोग कर सकते हैं।

5. टोपाज : पुखराज की जगह टोपाज का उपयोग कर सकते हैं।

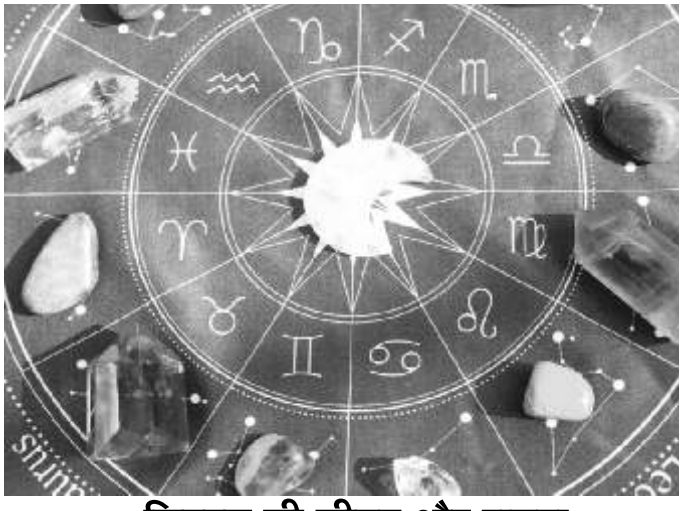

क्रिस्टल की कीमत और शुद्धता

क्रिस्टल आमतौर पर ज्यादा महंगे नहीं होते, लेकिन उनकी शुद्धता और गुणवत्ता बहुत महत्वपूर्ण होती है। शुद्ध और उच्च गुणवत्ता वाले क्रिस्टल ही अच्छे परिणाम देते हैं। इसलिए, क्रिस्टल खरीदते समय उनकी शुद्धता की जांच करना जरूरी है।

क्रिस्टलॉजिस्ट की सलाह

क्रिस्टल के बारे में सही जानकारी केवल एक क्रिस्टलॉजिस्ट ही दे सकता है। क्रिस्टलॉजिस्ट क्रिस्टल की पहचान, उनकी शुद्धता, और उपयोग के तरीके के बारे में विस्तार से बताते हैं। इसलिए, बिना जानकारी के क्रिस्टल खरीदने और उपयोग करने से बचना चाहिए। हमेशा एक योग्य क्रिस्टलॉजिस्ट से सलाह लें और सही जानकारी के साथ ही क्रिस्टल का उपयोग करें। क्रिस्टल का उपयोग करते समय अपनी अंर्तज्ञान और भावनाओं पर ध्यान दें, और हमेशा एक सकारात्मक दृष्टिकोण रखें।

घोषणा-पत्र

जीवन वैभव त्रैमासिक पत्रिका के स्वामित्व तथा अन्य बातों का ब्यौरा जो प्रतिवर्ष फरवरी के अंतिम दिन के बाद वाले अंक में प्रकाशित होता है।

प्रपत्र–चतुर्थ (देखें नियम–8)

1. प्रकाशन	– जीवन-वैभव 15-ए, महाराणा प्रताप नगर,जोन-1, प्रेस कॉम्पलेक्स, भोपाल।
2. प्रकाशन की अवधि	– त्रैमासिक
3. मुद्रक का नाम	– मेश प्रिन्ट्स
नागरिकता	– भारतीय
पता	– 105-ए, सेक्टर-एफ-गोविंदपुरा भोपाल-462023 (म.प्र.)
4. प्रकाशक का नाम	– प्रेमलता पाण्डेय स्वत्वाधिकारी, जीवन वैभव त्रैमासिकी
नागरिकता	– भारतीय
पता	– 15-ए, महाराणा प्रताप नगर, जोन–1, एम.पी. नगर, भोपाल
5. प्रधान संपादक का नाम	– श्रीमती प्रेमलता पाण्डेय
नागरिकता	– भारतीय
पता	– 15-ए, महाराणा प्रताप नगर, जोन–1, एम.पी. नगर, भोपाल
6. पत्र का स्वामित्व	– श्रीमती प्रेमलता पाण्डेय
नागरिकता	– भारतीय
निवास स्थान	– बी-14, सुरेन्द्र गार्डन, होशंगाबाद रोड, भोपाल

मैं प्रेमलता पाण्डेय, घोषणा करती हूँ, कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सही हैं।

प्रेमलता पाण्डेय

दिनाँकः 01-03-2026 **प्रकाशक के हस्ताक्षर**

ज्योतिर्विद प्रभा पाराशर

ज्योतिष में तलाक के कारण और निवारण

मानव जीवन की यात्रा का मुख्य चरण गृहस्थ जीवन ही है। जिसका यह अनुच्छेद सफल है तो उसका पूर्ण जीवन सफल समझिए।

वर्तमान समय की परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में भारतीय समाज में विवाह विच्छेद के घटनाक्रम विगत कुछ वर्षों में अत्यधिक दृष्टिगोचर हो रहे हैं।तलाक संक्रमण का रुप लेकर चारों ओर फैला दिखाई दे रहा है।

आज हर इंसान अपनी हैसियत के अनुसार लाखों करोड़ों रुपए अपने बच्चों की शादी पर खर्च करते हैं। लेकिन कुछ माह या वर्षों के बाद ही शादी शुदा जोड़े हाथ में तलाक की अर्जी लिए कोर्ट पहुंच जाते हैं।जबकि अधिकांश जोड़े शिक्षित एवं आत्मनिर्भर होते हैं। यहां प्रश्न उठता है कि क्या कारण है कि इन्हें अपने वैवाहिक जीवन को तलाक की राह पर ले जाने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है।

व्यावहारिक रूप से देखें तो आज आर्थिक लक्ष्य ने समाज में अपना विशेष स्थान ग्रहण कर लिया है। इसलिए संपन्नता की वृद्धि हेतु महिलाओं को घर से बाहर जाकर भी काम करना पड़ता है। परिणाम स्वरूप वे घर एवं बच्चों पर अपना अधिक समय नहीं दे पा रही हैं और यहीं से विवाद की स्थिति निर्मित हो चुकी होती है।

आइए हम ज्योतिष के दर्पण में तलाक के कारणों को देखने का प्रयास करें।जिस तरह मंदिर में भोग, अस्पताल में रोग का महत्व होता है उसी तरह ज्योतिष में योग का महत्वपूर्ण स्थान है। ज्योतिष की अनेकानेक विधाएं हैं। यदि हम वैदिक पद्धति से देखें तो प्रथम सप्तम भाव, सप्तमेश एवं सप्तम भाव में स्थित पाप ग्रहों की स्थिति प्रमुख हैं।

जन्म कुंडली में लग्न और लग्नेश , कर्क राशि और चंद्रमा, तथा बुध की स्थिति सुदृढ़ नहीं अथवा इनका संबंध छठे, आठवें भाव से हैं तो स्वास्थ्य, मन और विवेक के कमजोर होने के संकेत मिलते हैं।जातक या जातिका बीमारी, दूषित विचार या पीड़ित मन, तथा विवेक की कमी के कारण सही निर्णय लेने में असमर्थ होता है इसलिए अपने विवाह को लंबी आयु नहीं दे पाता है।

विवाह कारक ग्रह शुक्र, मंगल, गुरु और चंद्र जन्मकुंडली या नवांश कुण्डली में पाप ग्रहों से पीड़ित, द्विस्वभाव राशि में या पापकर्तरी योग में हो। तब भी विवाह सुख बिगड़ता है।

पति-पत्नी में से किसी एक की कुंडली में मंगल दोष हो और दूसरे की कुंडली में उसके कार्य ग्रह नहीं हो या साथ में खंड योग, वज्र योग या व्यतिपात योग हो।

यदि सप्तमेश 0डिग्री से 15डिग्री तक का हो और उस पर कोई शुभ प्रभाव न हो ।तब परिणाम स्वरूप विवादित स्थिति बनती देखी गई है।

लग्न से सप्तम तक बाईं ओर या दायीं ओर बनने वाले कालसर्प योग भी वैवाहिक जीवन को तलाक की ओर ले जाते देखें गए हैं।

पति पत्नी की कुंडली में किसी एक की कुंडली धुव्रसंज्ञक नक्षत्र, मृदुसंज्ञक जैसे अपरिवर्तनशील, स्थिर शांत नक्षत्र की हो तथा दूसरे की कुंडली घर, तीक्ष्ण या क्रूर संज्ञक जैसे परिवर्तनशील, अस्थिर, उग्र नक्षत्र हों तो आपस में सामंजस्य की कमी के कारण भी तलाक होते हैं।

स्त्री में बांझ योग या पति की कुंडली में नपुंसक योग भी तलाक का कारण बन सकता है।

मंगल, शुक्र जैसे ग्रह की युति केतु, सूर्य, राहू, शनि से हो जाए तथा यह स्थिति सप्तम भाव के अलावा चतुर्थ, अष्टम, दशम या बारहवें भाव में हो तो वैवाहिक जीवन में कलह बढ़ता ही है।

यदि हम अंक शास्त्र पर नजर डालें तो मूलांक/भाग्यांक में 5,7,9और उर्जाभेद जैसे 2-6,4-8भी तलाक के कारण हैं।

मूलांक 5,7,9 परिवर्तनशील और स्वतंत्रता प्रिय माने जाते हैं।यदि वर-वधू के मूलांक और भाग्यांक में इन अंकों की प्रमुखता है तो संबंध में स्थिरता में कमी आ जाती है। भाग्यांक में 5नंबर कभी कभी जीवन में अचानक बदलाव, नई दिशा की तलाश और यात्रा का कारण बनती है।

यदि दोनों के नामांक 4-8हैं तो क्रमश: स्थिरता और शक्ति के बीच अलग-अलग ऊर्जा के कारण सामंजस्य नहीं बैठ पाता है। फलस्वरूप विवादात्मक स्थिति बन जाती है।

लव अंक 3के कारण से अधिक रोमांटिक साथी को सामने वाले से प्रतिक्रिया की प्राप्ति नहीं होती है दूसरे अर्थों में रोमांटिक चाह पूर्ण न होने पर निराशा के कारण भी अलगाव की ओर कदम उठ जाते हैं।इसी तरह अंक 2-सहयोग गति और अंक 6वाले की परिवार कुटुम्ब अनुरक्ति का विरोधाभास हो जाता है।एक दूसरे की आवश्यकता को पूर्ण करने में कुछ अंतर आ जाता है।

इस तरह अनेक कारण मिलते हैं।यदि कारण है तो निराकरण भी हमारे मनीषियों ने बतलाएं है।वैसे तो जन्मकुंडलियां केवल संभावनाएं दिखाती हैं परंतु कर्म ही ग्रहों की दशा और फल बदलने में सक्षम है। विच्छेदात्मक स्थिति को बदलने के लिए निम्नांकित कुछ प्रयास किए जा सकते हैं।

कुंडली में मंगली दोष समाप्त करने हेतु विवाह पूर्व लड़की के लिए घट विवाह तथा लड़के के लिए कर्क विवाह का प्रवधान है।

कुंडली में बनने वाले विवाह विच्छेदक ग्रहों की शांति लाभकारी रहती है।

सबसे प्रमुख कुंडली में यदि चंद्रमा भावनाओं, संवेदना और मानसिक शांति का कारक तथा बुध विवेक का कारक कमजोर है तो चंद्र और बुध को बल देना आवश्यक है। क्योंकि बलवान चंद्रमा मन को शांत तथा भीतर से संतुलित बनाता है। बुध बलवान होगा तो विवेक ठीक होगा। फलस्वरूप पति -पत्नी धैर्यतापूर्वक अपनी समस्याओं का आपस में बैठकर स्वयं समाधान कर लेंगे तथा तलाक की नौबत नहीं आने देंगे।

किसी विद्वान ज्योतिषी या पंडित के मार्गदर्शन में ही कुंडली मिलान और शुभमुहुर्त देखकर विवाह करवाना चाहिए।

'ज्योतिषीय उपायों की प्रभावशीलता: कब और कैसे?'

भागवताचार्य निलिम्फ त्रिपाठी
मीनाल रेसीडेंसी भोपाल

1. भूमिका: भारतीय ज्योतिष परंपरा में उपाय (Remedial Measures) को केवल ग्रहदोष-शमन की यांत्रिक विधि नहीं, बल्कि कर्म-संशोधन, चित्त-शुद्धि और दैव-पुरुषार्थ-संयोजन का साधन माना गया है। आधुनिक काल में उपायों की असफलता पर प्रश्नचिह्न लगाया जाता है, किंतु शास्त्रीय दृष्टि से यह प्रश्न उपायों पर नहीं, उनके प्रयोग के समय, पात्रता और विधि पर उठता है।

शास्त्र स्पष्ट करते हैं कि सभी कुंडलियों में सभी उपाय समान रूप से प्रभावी नहीं होते। उपाय तभी फलित होते हैं जब वे देश-काल-पात्र, दशा-गोचर, तथा कर्म-स्तर के अनुकूल हों।

2. उपायों का शास्त्रीय आधार

2.1 वैदिक मूल: ऋग्वेद, अथर्ववेद तथा ब्राह्मण ग्रंथों में ग्रहों को दैवी शक्तियों के रूप में स्वीकार किया गया है। अथर्ववेद में शांति, आयु, आरोग्य तथा ग्रह-शमन हेतु मंत्रात्मक उपाय वर्णित हैं।

'ॐ शं नो मित्रः शं वरुणः।
शं नो भवत्वर्यमा।
शं न इन्द्रो बृहस्पतिः।
शं नो विष्णुरुरुक्रमः।
नमो ब्रह्मणे । नमस्ते वायो।
त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि ।
त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि।
ऋतं वदिष्यामि।
सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु।
तद्वक्तारमवतु ।
अवतु माम् । अवतु वक्तारम् ।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ 1॥
(तैत्तिरीयोपनिषत् ,प्रथमा शीक्षावल्ली/प्रथमोऽनुवाकः)

यह स्पष्ट करता है कि ग्रह-शांति का मूल आधार मंत्र है, न कि केवल बाह्य कर्मकांड।

2.2 होरा-ग्रंथों में उपाय: बृहत् पराशर होरा शास्त्र में महर्षि पराशर ग्रहदोषों के लिए दान, जप, व्रत, तप और देव-उपासना को प्रमुख उपाय मानते हैं।

'दानैर्जपैस्तपोभिश्च ग्रहाः शान्तिमवाप्नुयुः।
(बृहत् पराशर होरा, अध्याय ग्रहशान्ति)
अर्थात् -ग्रह दान, जप और तप से शांत होते हैं।

3. उपायों के प्रकार और उनकी प्रभावशीलता

3.1 मंत्र उपाय: मंत्र उपाय सूक्ष्मतम और सर्वाधिक प्रभावी माने गए हैं, क्योंकि वे सीधे ग्रह-तत्व की चेतना से संबद्ध होते हैं।

बीज मंत्र ॐ शीघ्र प्रभाव, किंतु उच्च पात्रता आवश्यक
वैदिक मंत्र ॐ स्थायी और सात्त्विक प्रभाव
तांत्रिक मंत्र ॐ तीव्र प्रभाव, किंतु अनुशासन अनिवार्य
मन्त्रमूलं बलं देवानाम्।
(तंत्रशास्त्र)

कब प्रभावी होते हैं?
जब ग्रह जाग्रत अवस्था में हो
जब दशा/अंतरदशा सक्रिय हो
जब साधक का चित्त सात्त्विक हो

3.2 दान उपाय: दान का संबंध कर्म-क्षय से है। शास्त्रों में दान को ऋण-शोधन माना गया है।
फलदीपिका में कहा गया है—
दानं तु पापकर्मणां क्षयकारणम्।

कब निष्फल होता है?
जब दान अहंकारपूर्वक हो
जब दान ग्रह-तत्व के विपरीत हो
जब दान बिना श्रद्धा हो

3.3 रत्न उपाय: रत्न उपाय सबसे विवादास्पद माने जाते हैं। शास्त्रों में रत्न को ग्रह-ऊर्जा का संवाहक कहा गया है, परंतु—
बलहीने ग्रहें रत्नं न धारयेत्।
अर्थात्—निर्बल या पापग्रह के लिए रत्न धारण वर्जित है।

प्रभावी कब
जब ग्रह शुभ, स्वामी या योगकारक हो
जब ग्रह शड्बलयुक्त हो
जब कुंडली में पापकर्तरी न हो

4. दशा-गोचर और उपाय: 4.1 दशा की भूमिका: यदि किसी ग्रह की महादशा या अंतरदशा नहीं चल रही, तो उसके उपाय सीमित फल देंगे।

दशायां फलदं सर्वं...
(ज्योतिष सूत्र)
अतः—दशा में - उपाय तीव्र फलदायक
गोचर में - सहायक फल
निष्क्रिय ग्रह - अल्प प्रभाव

5. कर्म-सिद्धांत और उपाय

5.1 संचित, प्रारब्ध और क्रियमाण कर्म: शास्त्रों के अनुसार—
संचित कर्म - उपायों से परिवर्तनीय
प्रारब्ध कर्म - केवल तीव्रता में कमी
क्रियमाण कर्म - पूर्णतः परिवर्तनीय
प्रारब्धं भुज्यते एव।
इसलिए उपाय भाग्य को मिटाते नहीं, बल्कि दुःख की तीव्रता घटाते हैं।

6. उपायों की असफलता के मुख्य कारण

1. अशुद्ध कुंडली विश्लेषण
2. ग्रह-बल की अनदेखी
3. दशा-काल का अज्ञान
4. अपात्र साधक
5. श्रद्धा का अभाव
6. उपायों का व्यापारिकरण

7. शास्त्रसम्मत उपाय-पद्धति

1. पहले ग्रह-बल परीक्षण
2. दशा-अंतरदशा निर्धारण
3. कर्म-स्तर का विश्लेषण
4. न्यूनतम उपाय से आरंभ
5. मंत्र को प्राथमिकता
6. आचार-विचार की शुद्धि

8. दार्शनिक निष्कर्ष

ज्योतिषीय उपाय चमत्कार नहीं, बल्कि चेतना-संशोधन की प्रक्रिया हैं। वे तभी कार्य करते हैं जब—

उपाय शास्त्रसम्मत हो
साधक पात्र हो
काल अनुकूल हो
कर्म परिवर्तनीय हो
दैवं च पुरुषकारं च यः पश्यति स पण्डितः।

9. **उपसंहार:** ज्योतिषीय उपायों की प्रभावशीलता पर संदेह नहीं, बल्कि उनके विवेकपूर्ण प्रयोग की आवश्यकता है। उपाय भाग्य के विरुद्ध नहीं, बल्कि भाग्य के भीतर परिवर्तन का साधन हैं। शास्त्र स्पष्ट करते हैं कि—

उपाय अंधविश्वास नहीं
उपाय कर्म-शोधन की वैज्ञानिक पद्धति हैं
उपाय तभी फलित होते हैं जब कब और कैसे का ज्ञान हो।

गृहस्थ जीवन के लिए जरूरी है पंचमहायज्ञ

आशुतोष पाण्डेय
भोपाल

गृहस्थ आश्रम हमारे भारतीय संस्कार में सबसे उत्तम आश्रम है इसमें रहकर जीवन का उत्तम समय और ईश्वर कृपा प्राप्त की जा सकती है इसके लिए 5 प्रकार के दैनिक यज्ञ करना हमारे भारतीय संस्कृति मे उत्तम माना गया है।

हमारे भारतीय संस्कार पर आधारित धर्मशास्त्रों में एक गृहस्थ (परिवार में रहने वाले व्यक्ति) के लिए प्रतिदिन पाँच प्रकार के कर्तव्य को अनिवार्य पालन करना बताया गया हैं, जिन्हें 'पंचमहायज्ञ' कहा जाता है। इन पंच महायज्ञ के करते रहने पर ही गृहस्थ जीवन सफल और दोषमुक्त माना गया है।

ये 5 महायज्ञ केवल धार्मिक कर्मकाण्ड ही नहीं, बल्कि सुखी, शांन्तिपूर्ण और समृद्ध जीवन जीने का सूत्र हैं।

ये 5 महायज्ञ निम्न प्रकार से हैं?

ब्रह्मयज्ञ (ऋषि ऋण का प्रदाय करते हुए संतुष्टी)- वेदों, धार्मिक ग्रंथों का नियमित अध्ययन करना, मंत्र जप (जैसे गायत्री मंत्र) करना और दूसरों को ज्ञान देना।

इससे लाभ यह है कि परिवार के सदस्यों में बुद्धि तीव्र होती है, मन में पवित्रता और विचार स्थिर और शुद्ध होते हैं तथा मानसिक शांति प्रतीत होती है। पितृयज्ञ (पितृ देवताओं के ऋण से मुक्ति)

पितृयज्ञ करने से अपने पूर्वजों का स्मरण करना, उनके निमित्त तर्पण, पिंडदान या श्राद्ध कर्म करने से परिवार के पितृ देवताओं को आत्म शांति प्राप्त होती है

धार्मिक ग्रंथ याज्ञवल्क्य स्मृति के अनुसार, इससे पितृ देवताओं की तृप्ती होकर पितृ यज्ञ करने वाले की लंबी आयु, संतान सुख, धन-धान्य और सुख-समृद्धि का पितृ देवताओं के आशीर्वाद से प्राप्त होता हैं।

देवयज्ञ(देवताओं क पूर्व जन्म के ऋण से मुक्ति)- प्रतिदिन घर में स्थापित भगवान के पूजा मंदिर में देवी-देवताओं का पूजन करना और पर्व त्यौहारों के अवसर पर यथा शक्ति हवन (अग्निहोत्र) करना हवन करने से हवन की अग्नि और शुद्धहवन सामग्री की वायु से घर का वातावरण शुद्ध होता है, स्वास्थ्य सुधरता है और ईश्वरीय कृपा से विघ्न दूर होते हैं।

भूतयज्ञ (प्राणियों के प्रति कर्तव्य)- क्या है: अपने भोजन में से अन्य प्राणियों (जैसे- गाय, कुत्ता, कौवा, चींटी आदि) के लिए अन्न का कुछ भाग निकालना (गो-ग्रास आदि)।

इससे यह लाभ होता है कि अन्न दान करने से प्राणियों के प्रति करुणा और परोपकार का भाव उपस्थित होत है। जिससे समस्त जीवों की सेवा का पुण्य मिलता है।

अतिथियज्ञ (मनुष्यता का कर्तव्य)- 'अतिथि देवो भव' की भावना से घर आए मेहमान का आदर-सत्कार करना और उन्हें यथा शक्ति भोजन / सहयोग करना।

शास्त्रों के अनुसार, जिस घर से अतिथि का स्वागत सत्कार होता है, उस घर में पुण्य की प्राप्त होती है। अतिथि देवो भव अर्थात अतिथि के वारेमें वेदों में देव तुल्य माना गया है और उनके सत्कार से गृहस्थ सुख में वृद्धि होकर सुख समद्धि की निरंतरता बनी रहती है ऐसा मत प्राचीन समय

से महर्षि विश्वामित्र का हैं कि जो गृहस्थ इन कर्मों को नियत समय पर श्रद्धापूर्वक करता है, वह इस लोक में परम सुख और अंत में विष्णुभगवान का की कृपा प्राप्त करता है। इन पाँचों यज्ञों को सुख की आकांक्षा वाले गृहस्थ को जरूर शामिल करने का प्रयास करना चाहिए।

वास्तु में ब्रह्मस्थान का महत्व

मधुकर श्रीवास्तव
वास्तु सलाहकार

वास्तु शास्त्र, वास्तुकला और डिज़ाइन की एक प्राचीन भारतीय प्रणाली है जो प्रकृति के पाँच तत्वों पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश के सामंजस्यपूर्ण संरेखण के आधार पर भवनों के निर्माण का मार्गदर्शन करती है।

वास्तु शास्त्र का उद्देश्य रहने या काम करने के स्थान में सामंजस्य और संतुलन बनाना है। समृद्धि, स्वास्थ्य और सफलता को बढ़ावा देने के लिए नकारात्मक ऊर्जाओं को कम करते हुए सकारात्मक सार्वभौमिक ऊर्जाओं को बढ़ाना ही वास्तु शास्त्र का उद्देश्य है। यह सोलह दिशाओं, पाँच तत्वों एवं 45 देवता के अनुसार स्थानों/संरचनाओं की ऊर्जाओं का संतुलन एवं सामंजस्य / समरसता को व्यवस्थित करके काम करता है, जहाँ अलग-अलग क्षेत्रों में विशिष्ट ऊजाएँ होती हैं।

वास्तु शास्त्र के अनुसार, जब हम किसी भी घर, कार्यालय, दुकान का वास्तु करते हैं, तो सबसे पहला कदम (महत्वपूर्ण काम) करते हैं, वह है 'पद-विन्यास '। घर, कार्यालयों/दुकानों के लिए, हम 81 पदों का पद-विन्यास करते हैं, जिनमें 45 देवताओं को स्थान दिया जाता है। ब्रह्म देवता को 81 पदों में से 9 पद प्राप्त होते हैं और 9 पदों के इस मध्य स्थान को ब्रह्मस्थान कहते हैं।

ब्रह्मस्थान, किसी भी संपत्ति / भवन का केंद्रीय और सबसे महत्वपूर्ण और पवित्र भाग होता है, जो इसके मध्य बिंदु पर स्थित होता है। यह स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है और ऊर्जा प्रवाह, संतुलन और सद्भाव बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसे घर का 'हृदय' माना जाता है, जो सकारात्मक ऊर्जा का स्रोत है जो अन्य सभी क्षेत्रों में फैलती है। यह क्षेत्र वह स्रोत है जहाँ से संपूर्ण संपत्ति / भवन में सकारात्मक ऊर्जा प्रवाहित होती है। इसे संरचना का हृदय या 'ऊर्जा केंद्र' माना जाता है, जो पाँच प्राकृतिक तत्वों या पंचतत्वों के संतुलन को नियंत्रित करता है।

ब्रह्मस्थान को, आध्यात्मिक और ऊर्जा का केंद्र माना जाता है। सकारात्मक ऊर्जा बनाए रखने के लिए, ब्रह्मस्थान को खुला, अव्यवस्था मुक्त और दीवारों, खंभों या रसोई जैसी भारी संरचनाओं से मुक्त रखना चाहिए।

ब्रह्मा जी एवं ब्रह्मस्थान

(क) ब्रह्मा जी का वाहन हंस है, जिसका एक विशेष गुण 'नीर छीर विवेक कहा जाता है। हंस का यह गुण, दूध से जल और दूध को अलग कर देता है, तथा केवल दूध को ग्रहण कर लेता है। इससे हम कह सकते हैं कि यदि ब्रह्मस्थान सकारात्मक है, तो व्यक्ति में प्रबल विवेक और ज्ञान शक्ति होगी। यानि व्यक्ति गलत या सही में अंतर कर सकता है और उचित सही निर्णय ले सकता है।

(ख) ब्रह्मा जी के हाथ में **जल से भरा कमंडल** है, जल यहाँ संसाधनों को प्रदर्शित करता है। पद शुभ होने पर संसाधन की उपलब्धता और दोष हुआ तो संसाधन की कमी रहेगी।

(ग) ब्रह्मा जी की अक्षमाला गणना को प्रदर्शित करता है। पद शुभ होने पर व्यक्ति समय, धन, ऊर्जा का सही उपयोग करता है, और दोष हुआ तो व्यर्थ गवायेंगा।

(घ) ब्रह्मा जी के वस्त्र श्वेत या सफ़ेद है, जो शांति, कीर्ति, सौभाग्य को प्रदर्शित करता है। पद शुभ होने पर व्यक्ति शांत व शील स्वभाव वाला, ज्ञानवान और सभी विषयों पर सटीक निर्णय लेने वाला होगा, सीखने में तत्पर, उत्साह से पूर्ण और श्रेष्ठ होगा। व्यक्ति विद्वान और अपने विषय का ज्ञान और उत्तम चरित्र वाल होगा।

(ङ) ब्रह्मा के चार मुख वेदों के चार विभागों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो सृष्टि के विभिन्न पहलुओं और ज्ञान को समाहित करते हैं। जहाँ सभी दिशाओं से सकारात्मक ऊर्जाएं आकर मिलती हैं और पूरे घर में फैलती हैं। यह स्थान मानव शरीर की नाभि के समान है और घर के ऊर्जा प्रवाह को संतुलित और स्वस्थ रखता है।

प्रतिमा विज्ञान के अनुसार ब्रह्मा जी के चार मुख हैं- ब्रह्मा को सृष्टि के रचयिता के रूप में माना जाता है, और पारंपरिक मान्यता के अनुसार, वे चार मुखों से चार वेदों ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद की रचना के लिए जाने जाते हैं। इसलिए, 'ब्रह्मा स्थान' का संबंध, जो सृष्टि की ऊर्जा और शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है, सीधे तौर पर वेदों से जुड़ा है

पूर्व दिशा का मुख ऋग्वेद कहा है, जो मूल, नींव, सिद्धांतों को प्रदर्शित करता है

दक्षिण दिशा का मुख यजुर्वेद कहा है, जो क्रिया को प्रदर्शित करता है

पश्चिम दिशा का मुख सामवेद कहा है, जो लय, ताल, छंद और क्रम (तारतम्य) को प्रदर्शित करता है

उत्तर दिशा का मुख अथर्वेद कहा है, जो व्यवहारिक रूप (तैय्यार माल, उत्पादन) को प्रदर्शित करता है

यदि ब्रह्मस्थान में चारों दिशाएं शुभ हों, तब व्यक्ति सभी पहलुओं का अध्ययन कर सकता है और निर्णय लेने में सक्षम, समर्थ होता है। यदि दोष हुआ तो नकारात्मक परिणाम होगा, जैसे-

पूर्व में दोष हो तो कार्य के आधार, सिद्धांत में कमजोर होगा, अपरिपक्कता होगी

दक्षिण में दोष हो तो कार्य के कार्य के क्रियांवयन में कठिनाई होगी

पश्चिम में दोष हो तो क्रम बार बार भंग होगी. कार्य में बाधा होगी

उत्तर में दोष हो तो तैयार उत्पाद में कमी होगी, वितरण, भुगतान में बाधा/रुकावट होगी

ब्रह्मस्थान, किसी भी संपत्ति का आध्यात्मिक केंद्र, घर का हृदय है, जो पवित्रता, संतुलन और सृजन का प्रतीक है। सबसे शक्तिशाली और पवित्र स्थान होता है, जो पूरे भवन में सकारात्मक ऊर्जा के वितरण केंद्र के रूप में कार्य करता है। इसे घर में समस्त सृजन और संतुलन का स्रोत माना जाता है। ऊर्जा के उचित प्रवाह के लिए, इस केंद्रीय क्षेत्र को दीवारों, खंभों, भारी फर्नीचर या रसोई, शौचालय या शयनकक्ष जैसी वस्तुओं से बाधित नहीं होना चाहिए।

संक्षेप में कहा जाये तो, ब्रह्मस्थान घर का हृदय है, जो पवित्रता, संतुलन और सृजन का प्रतीक है।

भवन के ब्रह्मस्थान (मध्य 9 पद) का उपयोग

इस स्थान का उपयोग हॉल, ड्राइंग रूम, लिविंग रूम, मंडप या आंगन के लिए किया जा सकता है। यदि यह खुली जगह है, तो हम सकारात्मकता लाने के लिए, तुलसी का पौधा लगा सकते हैं। कार्यालय में योजना कक्ष, चर्चा कक्ष हो सकते हैं। यह स्थान यथासंभव जितना हो सके, इसे खुला रखें, साफ-सुथरा रखें, हल्का रखें- सकारात्मक ऊर्जा प्रवाह को प्रोत्साहित करने के लिए इस केंद्रीय क्षेत्र में स्वच्छता बनाए रखें।

ब्रह्मस्थान क्षेत्र को खुला, स्वच्छ और अव्यवस्था मुक्त रखने से सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह होता है, जिससे निवासियों के स्वास्थ्य, समृद्धि और सद्भाव को बढ़ावा मिलता है। इसके विपरीत, यहाँ शौचालय या खंभों जैसी भारी संरचनाओं की वजह से नकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न हो सकती है और घर में असंतुलन और असामंजस्य जैसी समस्याएँ पैदा हो सकती हैं।

भवन के ब्रह्मस्थान में दोष और लक्षण

यदि दोष है, तो व्यक्ति सही निर्णय लेने में सक्षम नहीं होगा, और कार्य प्रगति भी अनिर्णय की स्थिति में प्रभावित होगी। योजनाएँ रुक जाती हैं या शुरू नहीं हो पातीं। यदि दोष है, तो शरीर में हृदय, नाभि, पेट से संबंधित गंभीर रोग की संभावना होती हैं।

भवन के ब्रह्मस्थान में क्या ना हो (अनुमति नहीं है)

भारी निर्माण: ब्रह्मस्थान में दीवारें, खंभे या सीढ़ियाँ जैसी स्थायी संरचनाएँ न बनाएँ, क्योंकि ये ऊर्जा के प्रवाह को अवरुद्ध करती हैं।

विशिष्ट कमरे: मध्य क्षेत्र में रसोई, शौचालय या शयनकक्ष बनाना अत्यंत अशुभ होता है। रसोई स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ पैदा कर सकती है, जबकि शयनकक्ष भ्रम पैदा कर सकता है।

भारी वस्तुएँ और इलेक्ट्रॉनिक उपकरण: इस क्षेत्र में भारी फर्नीचर, अलमारियाँ या जनरेटर और एयर हैंडलिंग यूनिट जैसे विद्युत उपकरण रखने से बचें। ब्रह्मस्थान का उपयोग भंडारण के लिए न करें या इसे अव्यवस्थित न रखें।

भूमिगत तत्व: ब्रह्मस्थान में भूमिगत जल टैंक, कुएँ या सेप्टिक टैंक रखना सख्त वर्जित है।

सेप्टिक टैंक, गंदे पानी का गड्ढा या पाइपलाइन, नकारात्मक ऊर्जा वाली वस्तुएं जैसे जूते, चप्पल, धूल भरे कूड़े के ढेर, भारी वस्तुएं, लोहे के फर्नीचर आदि की अनुमति नहीं है और रखना अत्यन्त अशुभ हैं।

6. ब्रह्मस्थान का प्रभाव

सकारात्मक प्रभाव: जब ब्रह्मस्थान को साफ़ रखा जाता है, तो यह सकारात्मक ऊर्जाओं को बढ़ाता है और पूरे घर में उनका उचित वितरण सुनिश्चित करता है। इससे घर में रहने वालों को बेहतर मानसिक शांति, खुशी, सफलता अच्छे स्वास्थ्य और समृद्धि और समग्र कल्याण में योगदान मिलता है।

नकारात्मक प्रभाव: जब ब्रह्मस्थान अवरुद्ध या उपेक्षित होता है, तो यह सकारात्मक ऊर्जा के प्रवाह को बाधित कर सकता है और घर में नकारात्मक ऊर्जा का प्रवेश करा सकता है। इस मध्य क्षेत्र में सीढ़ियाँ, शौचालय, रसोई या भारी फर्नीचर रखने से प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकते हैं। बहुत बुरा प्रभाव पड़ता हैं।

ब्रह्मस्थान में दोष के उपाय

जो भी दोष हो या जो वस्तुये अनुमति की नहीं है, पहले उन्हें हटाओ, जगह को पूरी तरह साफ़-सुथरा करना और भारी सामान हटा दें।

ब्रह्मा जी से संबंधित वस्तुएं, प्रतीक (चिहन), ब्रह्मस्थान क्षेत्र में या वहां भूमि के अंदर लगवायें।

वास्तु विशेषज्ञ की मदद से आप घर में सोना, रत्न, औषधि, प्रतीक (चिहन) आदि ब्रह्मस्थान में रख सकते हैं।

वास्तु पूजा-हवन करें। और जो ब्रह्मा जी को पसंद है, जैसे श्वेत कमल, खीर, गाय का दूध, घी और शहद पसंद है, का हवन करे।

ब्रह्मस्थान क्षेत्र में और उसके आस-पास के स्थान का रंग सफेद (ऑफ-व्हाइट रंग) या हल्का रंग होना चाहिए।

अंत में, मैं संक्षेप में बताना चाहूँगा कि ब्रह्मस्थान किस प्रकार मदद करता है या प्रभाव डालता है

ब्रह्मस्थान, ऊर्जा के संतुलित प्रवाह को सुगम बनाकर शारीरिक और मानसिक तौर पर स्वस्थता और कल्याण को बढ़ावा देता है। दोष/अवरुद्ध होने पर भ्रम या स्वास्थ्य समस्याएं, शारीरिक/मानसिक समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं।

एक स्वच्छ, जीवंत ब्रह्मस्थान, धन, सफलता और व्यावसायिक विकास को आकर्षित करने वाला माना जाता है। यथोचित समृद्धि और सफलता मिलती है।

सकारात्मक ब्रह्मांडीय ऊर्जा वितरित करके, एक सामंजस्यपूर्ण और शांतिपूर्ण वातावरण बनाता है, जो पारिवारिक कलह को कम करता है और संबंधों को मजबूती देता है। शांति और सद्भाव प्राप्त होती है।

यह स्थान, ध्यान और आध्यात्मिक अभ्यासों के लिए अनुकूल है, आध्यात्मिक विकास, आंतरिक शांति और आध्यात्मिक जागृति को बढ़ावा देता है।

नवग्रहो में गुरू ग्रह की स्थिति का आकलन

श्रीमती रेखा माथुर
ज्योतिषाचार्य

भारतीय ज्योतिष शास्त्र में महर्षि पाराशर अनुसार नौ ग्रहों का अत्यंत गूढ और महत्वपूर्ण स्थान है। प्रत्येक ग्रह मनुष्य के जीवन में अपना अच्छा और बुरा प्रभाव दिखाते ही है। प्रत्येक ग्रह का अपना बल, तत्व, स्वामी, दृष्टियाँ, मित्रता और शत्रुता आदि विद्यमान रहती हैं। ग्रहों से मनुष्य का जीवन स्थिर और अस्थिर रहता है। ग्रहों की स्थिति को ठीक करने के लिये उपाय भी बताये गये हैं। वेदों में भी ग्रहों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। ऋग्वेद के अधिपति गुरू ग्रह हैं, यजुर्वेद के अधिपति शुक्र ग्रह है, सामवेद के अधिपति मंगल ग्रह हैं. अथर्ववेद के अधिपति बुद्ध ग्रह है।

ग्रहों को स्वर्ग लोक, पितृलोक, मृर्त्यलोक का स्वामी भी कहा गया है। गुरू ग्रह स्वर्ग लोक के स्वामी है, चन्द्र और शुक्र ग्रह पितृलोक, सूर्य, मंगल और मृत्यु लोकवासियों के स्वामी, बुध, तथा शनि होते है।

ग्रहों को पांच तत्वों में भी विभक्त किया गया हें सूर्य, मंगल को अग्नि तत्व, चन्द्र, शुक्र को जल तत्व, बुध को भूमि तत्व, गुरू को आकाश तत्व और शनि, राहु को वायु तत्व इत्यादि स्थान दिया गया है। ग्रहों को दृष्टियाँ भी प्राप्त है साधारण दृष्टि, विशेष दृष्टि, पूर्ण दृष्टि। ग्रह जिस स्थान पर रहता है वहाँ से 3, 10 स्थान को 1 चरण से 5, 9 को 2 चरण से 4,8 को 3 चरण से और 7 को 4 चरण से देखता है और तदनुसार फल देता है। शनि 3, 10 को, गुरु- 5. 9 को मंगल- 4,8 को पूर्ण दृष्टि से देखता है तथा सप्तम भाव को सभी ग्रह पूर्ण दृष्टि से देखते है। ग्रहों को चार प्रकार के बल भी प्राप्त है दिग्बल, स्थानबल, कालबल और चेष्टाबल। बलों से हीनबल, निर्बल होते है। उत्तरायाण में शुक्र, मंगल, गुरू, रवि तथा दक्षिणायन में चन्द्र, शनि बली होते हैं। बुद्ध दोनों अयन में अपने वर्ग में हो तो बली होता है।

ग्रहों की दिशाऐं, अवस्थाएँ भी होती है, इसलिए ग्रहों का ज्योतिष शासत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। ग्रहो का नक्षत्रों और राशियों से पारस्परिक गहरा संबंध होता है।

गुरू ग्रह की स्थिति, लक्षण एवं उपाय

1. गुरू ग्रह का संबंध भाग्य, पिता, आध्यात्म, शिक्षा से होता है यदि गुरु अच्छा हे तो जातक समाज के लिये बहुत कार्य करते है। ज्ञान के माध्यम से पुस्तकों के लेखन, उनका वितरण करना, ब्राह्मणों का आदर करना आदि।
2. जन्म कुण्डली में 2,5,9,12 भाव में राहू, बुध, शुक्र ये तीनों ग्रह गुरू ग्रह के शत्रु होते है, इनमें से कोई भी ग्रह उक्त भावों में हो तो गुरु ग्रह कमजोर हो जाता है।
3. डी-9 (नवांश कुंडली) में 9-12 में राहू, बुध, शुक्र हो तो भी गुरू कमजोर होता है। 6 8. 12 भाव में गुरू हो तो गुरू कमजोर होता है।
4. अवस्था मकर राशि में गुरू नीच का और यदि किसी जातक का मकर राशि में गुरू, शनि हो तो गुरू ग्रह के दोष में कमी आ जाती है।
5. युति गुरु राहु युति 'गुरू चांडाल योग बनाती है, जो अत्यंत अशुभ योग है गुरू शनि या बुध जैसे शत्रु ग्रहों के साथ ये कमजोर होते हैं।
6. गुरू का अस्त होना गुरू ग्रह जब सूर्य के बहुत करीब होते है, तो वह अपनी शक्ति खो देते है और अस्त माने जाते है।
7. गुरू ग्रह कमजोर होने का कारण शिक्षकों, गुरूओं और बड़ों का अपमान करना झूठ बोलना, अहंकार और कपट करना घर के पूर्व/उत्तर दिशा में गंदगी या शौचालय का होना यह गुरू ग्रह को कमजोर बनाते है।
8. रोग- यकृत (लीवर) संबंधी रोग, पीलिया, मोटापा, मधुमेह, दमा, सिर के चोटी वाले स्थान से बालो का झड़ना इत्यादि।
9. भौतिक और सांसारिक स्थिति वित्तीय अस्थिरता, धन का न टिकना, कर्ज, शिक्षा में रूकावट और कैरियर में बाधाएँ एवं सम्मान की हानि और झूठे आरोप लगना आदि।

1. निर्णय लेने में कठिनाई, भ्रम की स्थिति।
2. विवाह में देरी या वैवाहिक जीवन में कलह।
3. संतान प्राप्ति में बाधा या संतान से कष्ट।
4. पिता और गुरूओं से तनावपूर्ण संबंध ।

यह सब उपरोक्त लक्षण गुरु के कमजोर होना दर्शाते है।

गुरू ग्रह को मजबूत करने के उपाय

1. पिता, शिक्षको और बड़ों का सम्मान करे।
2. शाकाहारी भोजन करें।
3. गुरुवार को पीले वस्त्र पहने, माथे पर केसर, हल्दी का तिलक लगाऐं।

व्रत और पूजा

1. गुरुवार का व्रत रखे।
2. विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ करे।
3. पीपल, केला वृक्ष की पूजा करे।
4. गुड, चने का भोग लगाये और धी का दीपक जलाएँ।

मंत्र जाप-बीज मंत्र 'ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं स: गुरूवे नम:'।

तांत्रिक मंत्र- 'ॐ बृं बृहस्पत्यै नम:'। गुरूवार को 108 बार (एक माला) जाप करें।

दान-पीली वस्तुएँ, चने की दाल, गुड, पीले वस्त्र, हल्दी, केसर और धार्मिक पुस्तके गुरूवार के दिन ब्राह्मण, शिक्षक या छात्रों को देवें।

रत्न- पीला पुखराज सोने की अंगुठी में, दाहिने हाथ की तर्जनी अंगुली में गुरुवार को पहने। गुरु 6, 8, 12 भाव में हो तो ज्योतिषी से परार्मश करके पहनना चाहिए।

उपरोक्तानुसार ग्रहों में गुरू ग्रह के कमजोर होने के लक्षण और ग्रह को प्रबल करने के उपायों को स्पष्ट किया गया है।

आचार्य सुरेश शर्मा

ज्योतिषी कैसा होना चाहिए-एक विश्लेषण

ज्योतिषी कैसा होना चाहिए ? यह प्रश्न चिरकाल से ही ज्योतिष जगत में गंभीरतापूर्वक विचारणीय एवं विश्लेषण का विषय रहा है। हालाँकि इस सम्बंध में अनेक ग्रंथों में ज्योतिषियों एवं जनसाधारण के लिए कई आवश्यक मापदंड भी निर्धारित किए गए हैं। मैं स्वयं भी समय-समय पर अपने कई ज्योतिषीय लेखों के माध्यम से ज्योतिषियों एवं जनसाधारण का ध्यान अपनी बेबाक टिप्पणियों के द्वारा ज्योतिष में आ रही विसंगतियों की ओर आकर्षित कर चुका हूँ। परंतु खेद है कि आज तक इस ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया गया है। परिणाम स्वरूप आज जो ईमानदार एवं कुशल ज्योतिषियों तथा ज्योतिष की दयनीय स्थिति उत्पन्न हुई है, वह शायद नहीं होती । इसके पीछे ज्योतिष के नाम पर अपना नकली कारोबार चलाने वाले और छलकपट तथा भ्रामक प्रचार-प्रसार करने वाले झोला छाप ज्योतिषियों तथा इन्हें अनावश्यक प्रश्रय देने वाले चंद स्वार्थी लोगों की भी बहुत बड़ी भूमिका है। ऐसे ही कुछ भोले-भाले लोग इन जालसाजों के चंगुल में आसानी से फंस जाते हैं। ऐसे नकली तथा अधूरे ज्योतिष का ज्ञान रखने वाले अथवा ज्योतिष सम्मलेनों या ज्योतिष के नाम पर आए दिन अपनी दुकानदारी चलाकर तथा नकली प्रमाण पत्र बेचने वाले संस्थानों को भारी भरकम फीस देकर वहां से एकत्रित किए गए फर्जी प्रमाण पत्रों तथा डिग्रियों आदि के बल पर भोले-भाले लोगों का खूब शोषण करते हैं । उन्हें इस बात का तनिक भी ज्ञान, शर्म अथवा भय नहीं है कि हम जनसाधारण की आँखों में धूल झोंककर ऐसी घिनौनी हरकतें क्यों कर रहे हैं? जबकि ऐसा कृत्य करना घोर महापाप है ।

अब इससे कुछ आगे बढ़ते हैं तथा यह जानने का प्रयास करते हैं कि वास्तव में ज्योतिषी कैसा होना चाहिए ? मैंने अपने ज्योतिष के अध्ययन काल तथा एक ज्योतिष के विद्यार्थी के रूप में इस विषय को विस्तारपूर्वक पढ़ा है। महर्षि पाराशर ने जो कलियुगी ज्योतिषियों के अग्रणी प्रकाश स्तंभ के रूप में माने जाते हैं, वृहत पाराशर होरा शास्त्र में प्रत्येक ज्योतिषी के गुण व उनसे सम्बंधित जो योग्यताएं निर्धारित की हैं, वे निम्न प्रकार हैं :-

गणितेषु प्रवीणों यः शब्दशास्त्रे कृतश्रमः।
न्यायविद बुद्धिमान देशदिक्कालज्ञो
जितेन्द्रियः ।।
ऊहो पोह-पटु होरा स्कन्ध श्रवण सम्मतः
मैत्रेय। सत्यतां यानि तस्य वाक्यं
न संशयः ।।

इस श्लोक का भावार्थ है कि एक अच्छे ज्योतिषी की गणित में प्रवीणता होनी चाहिए। प्रत्येक ज्योतिषी को कम से कम कुण्डली बनाना, इसके वर्ग चार्ट बनाना, दशा तथा अष्टक वर्ग बनाना भी आना चाहिए । क्योंकि वर्तमान कम्प्यूटर युग में यह और भी आवश्यक हो गया है। बाज़ार में कम्प्यूटर के माध्यम से बने बनाए सभी प्रकार के चार्ट्स आदि उपलब्ध हैं। परंतु उनमें अनेक प्रकार की त्रुटियाँ पाई जाती हैं। उन्हें ठीक करना भी आवश्यक होता है। इसलिए जिन्हें गणित का पर्याप्त ज्ञान होगा और गोचर में ग्रहों की गति का ज्ञान भी होगा वही लोग इस प्रकार की त्रुटियों को जान सकते हैं और उन्हें सही कर सकते हैं। क्योंकि सभी स्थानों पर कम्प्यूटर आदि उपलब्ध नहीं होते हैं। अत: ऐसी स्थिति में एक कुशल ज्योतिषी को गणित तथा खगोल आदि के ज्ञान की आवश्यकता होती है। तभी उसकी भविष्यवाणियों में सटीकता आती है। एक कुशल ज्योतिषी के भीतर शब्द शास्त्र की भी अच्छी पैठ होनी चाहिए। उसके पास जो लोग परामर्श हेतु आते है, उसे उन सबकी बातों को ध्यानपूर्वक सुनना होता है। तत्पश्चात् उन्हें अपनी राय भी स्पष्ट करनी होती है। वह एक कुशल वक्ता भी होना चाहिए । उसके पास शब्दों का भंडार होना चाहिए। ऐसा सतत परिश्रम तथा अभ्यास करने वाला ज्योतिषी ही कर सकता है। ज्योतिष के शौकीन ज्योतिषी

भीतरी ज्ञान से खोखले होते है तथा उनमें आत्म विश्वास की भी कमी होती है। यदि किसी ज्योतिषी के पास इतनी योग्यता होगी कि वह प्रमाणिक ज्योतिषीय सूत्रों के विभिन्न भावों के सूक्ष्म अंतरों की पहचान कर सकता है, तभी उसे शब्द शास्त्र में पारंगत कहा जा सकता है।

प्रत्येक ज्योतिषी का अपने आप में न्यायविद् होना भी आवश्यक है, जिससे वह ग्रहों के परस्पर विरोधी लक्षणों का समुचित विश्लेषण कर सके तथा एक सही निर्णय पर पहुँच सके। किसी भी ज्योतिषी को न्याय के तराजू में संतुलित दृष्टिकोण अपनाने हेतु उसे किसी गुरू की आवश्यकता होती है। क्योंकि मूल पाठों में कहीं-कहीं परस्पर विरोधी अर्थ दिए होते है। यहां बुद्धिमान ज्योतिषी का अर्थ है, वह परीक्षण तथा समीक्षा करने वाला हो, उसकी बुद्धि तीव्र ही बड़ा होने की चेष्टा से स्पर्धा कर सकता है और लगातार उन्नति कर सकता है। ऐसा व्यक्ति ही बुद्धिमान होता है, जो अपनी त्रुटियों का अनुभव करके उन्हें सुधारने तथा सतत ज्ञानवर्धन करता जाए। देश दिक्कालज्ञो प्रत्येक ज्योतिषी को अपने कार्यक्षेत्र के भूगोल, परम्पराओं, सभ्यता तथा सामाजिक परिस्थितियों आदि का भी पर्याप्त ज्ञान होना आवश्यक है। क्योंकि इसके बिना उसकी ओर से की गई भविष्यवाणियों गलत तथा विनाशकारी सिद्ध हो सकती है। जितेन्द्रिय ज्योतिषी प्रत्येक सलाह लेने वाले व्यक्ति के अत्यंत गोपनीय प्रकृति के विचारों का रहस्य जानता है। अत: वह उस व्यक्ति से पैसा ऐंठने, उसे भावुक बनाने तथा अन्य प्रकार के लाभकमाने के लिए उसे भयभीत कर अवैध रूप से उपहार आदि ले सकता है । परंतु ज्योतिषी का नैतिक आचरण सही होना चाहिए और उसे संतुलित विचारों से ओतप्रोत होना चाहिए । ज्योतिषी में किसी भी घटना को विभिन्न दृष्टिकोण से देखने और उसे उजागर करने की योग्यता के साथ-साथ क्षमता भी होनी चाहिए। साथ ही परस्पर विपरीत फल आदि दृष्टिगोचर होने पर उनका सही विश्लेषण करने की क्षमता तथा स्पष्ट रूप से किसी बात को कहकर उसे अच्छी तरह समझाने और आवश्यक निदान/ उपाय की योग्यता भी होनी चाहिए।

होरा स्कंध श्रवण सम्मत: ऐसे ज्योतिषी को होरा स्कंध का भी पूर्ण ज्ञान होना चाहिए।

उपर्युक्त सभी प्रकार के गुणों से सम्पन्न एवं गुणवान ज्योतिषी ही वास्तव में सत्य और सटीक भविष्यवाणी करने में पूर्ण रूप से सक्षम तथा समर्थवान हो सकता है। उसकी पवित्र वाणी में माँ सरस्वती का वास होगा ।

अब मैं इसी सम्बंध में श्री वाराह मिहिर द्वारा ज्योतिषियों के लिए बताई गई कुछ महत्वपूर्ण योग्यताओं का भी वर्णन करना चाहूँगा जो निम्न प्रकार से हैं:-

1. **पवित्रता :-** ज्योतिषी के हृदय की पवित्रता ही केवल ग्रहों के प्रभाव को आत्मसात कर सकती है तथा अन्तर्ज्ञान द्वारा जन्म कुण्डली को पढ़कर विनम्रतापूर्वक स्पष्ट भविष्य-वाणी करने के समर्थ बनाती है।
2. **वाक्‌शक्ति :-** प्रत्येक ज्योतिषी को अपनी भाषा एवं वाक्शक्ति को अभिव्यक्त करने की पूरी क्षमता एवं अधिकार होना चाहिए, ताकि वह अपने पास आए हुए यजमान का सही प्रकार से मार्गदर्शन कर सके।
3. **कार्यक्षमता :-** ज्योतिषी का ज्ञान एक प्रकार से दैवीय विज्ञान है। अत: इसके लिए उसके पास तकनीकी जानकारी भी होनी चाहिए ।
4. **मेधावी :-** ज्योतिषी को बहुत बड़ी संख्या में कुण्डलियों का विश्लेषण करके उनकी व्याख्या भी करनी होती है। इसके लिए उसे अपने पास मौजूद ठोस सूत्रों का उपयोग करना चाहिए ।
5. **निर्भीकता:** उसे किसी भी कुण्डली के बारे में गहन अध्ययन करने के बाद ही निर्भीकता सहित प्रभावशाली ढंग से अपनी वाणी का प्रयोग करना चाहिए।
6. **दृढ़ संकल्प :-** यदि कभी ऐसा भी अवसर आता है कि किसी भी ज्योतिषी को अन्य विद्वान ज्योतिषियों के समक्ष अपने विचार रखने हों, तो वह किसी भी प्रकार से अपने को असहाय या लाचार न समझे, बल्कि उसे दृढ़तापूर्वक तथा आत्म विश्वास सहित अपने विचार रखने चाहिए।
7. **व्यसनी नही हो:-** प्रत्येक ज्योतिषी को व्यसन या किसी भी प्रकार की नशीली वस्तुओं का उपयोग नहीं करना चाहिए। इस प्रकार की वस्तुओं के सेवन से कोई भी मनुष्य स्वयं को मानसिक रूप से संतुलित नहीं रख पाता है और इसका दुष्प्रभाव उसके जीवन तथा चरित्र दोनों पर पड़ता है।
8. **ग्रहों को शांत करने वाले मंत्रों की जानकारी :-** जैसा कि आप सभी को ज्ञात है कि ज्योतिष शास्त्र का आध्यात्मिक और उसके उपायों से घनिष्ठ सम्बंध है। ये उपाय मंत्रों के आधार पर ही विधि विधान द्वारा किए जाते हैं। अत: ज्योतिषियों से यह अपेक्षा की जाती है कि उन्हें इन मंत्रों का पर्याप्त ज्ञान होना चाहिए तथा साथ ही इन मंत्रों का आवश्यकतानुसार प्रयोग करना भी आना चाहिए।
9. **आध्यात्मिक गुण:-** प्रत्येक ज्योतिषी में आध्यात्मिक गुण होने चाहिए। उसे पवित्र एवं अनुशासित जीवन व्यतीत करना चाहिए। उसमें सभी प्रकार की चारित्रिक विशेषताएं होनी चाहिए। समाज में सभी लोग उसे प्रतिष्ठा से देखते हों। उसका चरित्र बेदाग होना चाहिए अर्थात् वह चरित्रवान होना चाहिए। तभी उसके पास यजमान आदर भाव के साथ आएंगे, अन्यथा कोई नहीं आएगा।
10. **ज्योतिषीय सूत्रों का गहरा ज्ञान:-** सभी ज्योतिषियों को ज्योतिषीय सूत्रों तथा इसके सिद्धांतों आदि की पर्याप्त जानकारी होनी चाहिए, जिससे वह सही एवं सटीक फलादेश की भविष्यवाणी कर सकें। ये शब्द महर्षि पाराशर एवं वाराह मिहिर के हैं, उनके द्वारा बताई गई योग्यताएं प्राप्त करने की इच्छा तथा लालसा प्रत्येक ज्योतिषी में होनी चाहिए। अगर हम उपरोक्त बताए गए गुणों में से केवल 4-5 गुणों को भी अपना लें, तो भी हम वास्तव में एक ज्योतिषी कहलाने के अधिकारी हो जाएंगे। इसलिए हम सबका यह हर संभव प्रयास होना चाहिए कि इनमें से अधिक से अधिक गुणों को अपनाने का सतत प्रयास करें, जिससे हम निज हित अथवा उन्नति के साथ-साथ अपने समाज का भी सही अर्थों में हित कर सकें। तभी हम समाज में एक कुशल एवं प्रतिष्ठित ज्योतिषी कहला पाएंगे ।

रुद्राक्ष का महत्व और धारण करने के लाभ

अरविंद पाण्डेय
सहायक सम्पादक

रुद्राक्ष का अर्थ है – रूद्र का अक्ष , माना जाता है कि रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के रौद्र स्वरूपअश्रुओं से हुई है. रुद्राक्ष को प्राचीन काल से आभूषण के रूप में,सुरक्षा के लिए,ग्रह शांति के लिए और आध्यात्मिक लाभ के लिए प्रयोग किया जाता रहा है. कुल मिलाकर मुख्य रूप से सत्तरह प्रकार के रुद्राक्ष पाए जाते हैं, परन्तु बारह प्रकार के रुद्राक्ष विशेष रूप से प्रयोग में आते हैं. रुद्राक्ष का लाभ अदभुत होता है और प्रभाव अचूक, परन्तु यह तभी सम्भव है जब सोच समझकर नियमों का पालन करके रुद्राक्ष धारण किया जाय. बिना नियमों को जाने रुद्राक्ष को धारण करने से कोई नुकसान नहीं होता है. लाभ ही होता है।

रुद्राक्ष को भगवान शिव का अंश माना जाता है। इस वजह से इसका धार्मिक महत्व तो है ही साथ ही ज्योतिष में भी इसे बहुत खास माना जाता है। आज हम बात करने जा रहे हैं एकमुखी रुद्राक्ष के बारे में। वैसे तो असली एकमुखी रुद्राक्ष का मिल पाना बहुत ही मुश्किल होता है। एक मुखी रुद्राक्ष को बेहद पवित्र माना जाता है। यह गोलाकार और अर्ध चंद्र जैसा होता है। गोलाकार एक मुखी रुद्राक्ष में उभरी हुई एक धार होती है। रुद्राक्ष की उत्पत्ति को लेकर पुराणों में एक कथा बताई गई है। इसके अनुसार एक बार तप करते वक्त महादेव जब क्षुब्द हो गए तो उनके नेत्रों से कुछ बूंदें धरती पर गिरी जिनसे रुद्राक्ष की उत्पत्ति हुई। माना जाता है कि रुद्राक्ष को पहनने से जातक को असीम शक्ति प्राप्त होती है। ऐसा माना जाता है कि एक मुखी रुद्राक्ष शक्ति, ऊर्जा, सत्य और मोक्ष का प्रबल स्रोत होता है। इस रुद्राक्ष का स्वामी सूर्य ग्रह होता है और भगवान शिव इसके स्वामी देव हैं। इस रुद्राक्ष को धारण करने वाला व्यक्ति स्वयं को भगवान शिव और पारलौकिक जीवन से जुड़ा हुआ पाता है।जिस घर में यह होता है उस घर में लक्ष्मी विशेष रूप से विराजती हैं। यह धारणकर्ता को सभी प्रकार के नुकसान तथा भय से दूर रखता है, जिसके साथ स्वयं भगवान शिव रहते हों उसे भला क्या प्राप्त नहीं हो सकता है। एक मुखी रुद्राक्ष सर्वोत्तम, सर्वमनोकामना सिद्धि, फलदायक और मोक्षदाता है।

जिसके गले में या पूजन में एक मुखी रुद्राक्ष है उस व्यक्ति के शत्रु खुद ही परास्त हो जाते हैं। एक मुखी रुद्राक्ष धारण करने से अवश्य ही पुण्य उदय होता है। एक मुखी रुद्राक्ष मानसिक शांति देकर मानव के समस्त पाप तथा संकट हर लेता है। इसमें यह प्रमाणित है।

एक मुखी रुद्राक्ष को बेहद पवित्र माना जाता है। यह गोलाकार और अर्ध चंद्र जैसा होता है। गोलाकार एक मुखी रुद्राक्ष में उभरी हुई एक धार होती है। धर्म-शास्त्रों के अनुसार ऐसा माना जाता है एक मुखी रुद्राक्ष साक्षात भगवान शिव का अवतार है। इसके धारण करने से व्यक्ति जीवन के सभी कष्ट व संकट दूर हो जाते हैं। इसके साथ ही एक मुखी रुद्राक्ष व्यक्ति जीवन के अंधकार को दूर कर उसमें प्रकाश पुंज भरता है। मात्र इतना ही नहीं इस रुद्राक्ष को पहनने से पूर्व जन्म के पापों से भी मुक्ति मिलती है और व्यक्ति मोह माया के जाल से ऊपर उठ जाता है।

वैदिक ज्योतिष के अनुसार एक मुखी रुद्राक्ष का स्वामी सूर्य है। इस कारण 1 मुखी रुद्राक्ष को धारण करने वाले जातक के

अंदर ऊर्जा शक्ति और नेतृत्व क्षमता का निर्माण होता है। इसके अलावा इसे पहनने से व्यक्ति के भाग्य के द्वार खुलते हैं और उसे समाज में प्रसिद्धि मिलती है। यदि कुंडली में सूर्य कमज़ोर हो अथवा अस्त तो एक मुखी रुद्राक्ष का धारण करना चाहिए। इसके अतिरिक्त यदि किसी क्रूर ग्रह की दशा या अंतर्दशा चल रही है तो भी 1 मुखी रुद्राक्ष को पहना जा सकता है। इसको धारण करने से सूर्य के नकारात्मक प्रभाव दूर हो जाते हैं।

सूर्य का संबंध हृदय के स्वास्थ्य से होता है। एकमुखी रुद्राक्ष को धारण करने से सूर्य की दुर्बलता की वजह से होने वाली हृदय की बीमारियां दूर रहती हैं। इसके साथ ही एकमुखी रुद्राक्ष को पहनने से सिरदर्द, मानसिक रोग, हड्डियों की कमजोरी और आंख की रोशनी से जुड़ी समस्याएं भी दूर रहती हैं।

रुद्राक्ष के बारे में माना जाता है कि यह जातक को बेहतरीन लीडरशिप क्षमता प्रदान करता है। इसलिए अधिकांश नेता एकमुखी रुद्राक्ष पहनना पसंद करते हैं। एकमुखी रुद्राक्ष के बारे में यह भी माना जाता है कि इसको पहनने वाले पर मां लक्ष्मी भी विशेष कृपा होती है। जो कि पहनने वाले को धन और समृद्धि प्रदान करती हैं। इस रुद्राक्ष को पहनने से व्यक्ति का आत्मविश्वास बढ़ता है।

सूर्य का संबंध हृदय के स्वास्थ्य से होता है। एकमुखी रुद्राक्ष को धारण करने से सूर्य की दुर्बलता की वजह से होने वाली हृदय की बीमारियां दूर रहती हैं। इसके साथ ही एकमुखी रुद्राक्ष को पहनने से सिरदर्द, मानसिक रोग, हड्डियों की कमजोरी और आंख की रोशनी से जुड़ी समस्याएं भी दूर रहती हैं।

अब बात करते है एक मुखी रुद्राक्ष के पहचान की, कैसे पहचाने के यह एक मुखी रुद्राक्ष है :- एक मुखी रुद्राक्ष की पहचान अच्छे से करनी हो तो इसे गर्म पानी में उबाले अगर यह रुद्राक्ष अपना रंग छोड़ने लग जाये तो समझ ले की यह एक मुखी रुद्राक्ष असली नहीं है। एक और उपाय यह है की इसे सरसो के तेल में डाले अगर यह पहले से अधिक गहरा रंग का प्रतीत हो रहा है तो यह असली है अन्यथा नकली।

एकमुखी रुद्राक्ष के लाभ

एकमुखी रुद्राक्ष के प्रभाव से धारणकर्ता को कामकाज में बढ़िया धन लाभ होता है तथा मान-सम्मान के साथ साथ उसकी आर्थिक स्थिति में भी सुधार होता है।

इसे धारण करने के बाद व्यक्ति का भाग्योदय

होता है। समाज में प्रसिद्धि मिलती है।

अगर किसी जातक की कुंडली में किसी क्रूर ग्रह की दशा या अन्तर्दशा चल रही है तो भी एकमुखी रुद्राक्ष को पहनना उचित होता है।

इसके धारण करने से जातक चिंतामुक्त और साहसी, निडर हो जाता है। शत्रु भय से मुक्त हो जाता है।

एकमुखी रुद्राक्ष व्यक्ति के जीवन के अन्धकार को दूर कर उसमे प्रकाश भरता है।

एकमुखी रुद्राक्ष के प्रभाव से धारणकर्ता को कामकाज में बढ़िया धन लाभ होता है तथा मान-सम्मान के साथ साथ उसकी आर्थिक स्थिति में भी सुधार होता है।

एकमुखी रुद्राक्ष में दैवीय शक्ति समाहित है जिसका लाभ मनुष्य को मिलता है, इसलिए बिना संकोच किये इस रुद्राक्ष को अवश्य धारण करना चाहिए।

एकमुखी रुद्राक्ष धारण करने के नियम तथा विधि

एकमुखी रुद्राक्ष धारण करनेवाला व्यक्ति सदाचार का पालन करनेवाला होना चाहिए।

एकमुखी रुद्राक्ष धारण करने वाले व्यक्ति की भगवान शिव के प्रति गहरी आस्था होनी चाहिए।

धारण करने वाले को मांस-मदीरा या अन्य नशे की वस्तुओं से दूर रहना चाहिए।

रविवार, सोमवार अथवा शिवरात्रि के दिन रुद्राक्ष को धारण करना शुभ होता है।

रुद्राक्ष धारण करने से पूर्व गंगाजल या कच्चे दूध से शुद्ध करें।

रुद्राक्ष को जागृत करने के लिए 'ॐ ह्रीं नमः' मंत्र का उच्चारण 108 बार करें।

रुद्राक्ष के कुल उपज 1% से भी कम एक मुखी रुद्राक्ष पाए जाते हैं। यह रुद्राक्ष हल्का सफेद काला लाल या पीले रंग में देखने को मिलता है। कहते हैं इसके रंगों के हिसाब से अलग-अलग वर्ण के लोग इसे धारण करते हैं। पीला रुद्राक्ष क्षत्रिय लोग धारण करते हैं वहीं लाल वेश्य एवं काला शुद्र धारण करते हैं। दुनिया के सबसे उत्तम श्रेणी का एक मुखी रुद्राक्ष नेपाल में पाया जाता है। इसके अतिरिक्त भारत, मलेशिया और इंडोनेशिया में भी पाए जाते हैं।

संयोगवश यदि एक मुखी रुद्राक्ष नहीं हो तो पंचमुखी, अष्टमुखी, एकादशमुखी, द्वादशमुखी भी धारण करना चाहिए। रुद्राक्ष धारण करने से भगवान शिवजी की कृपा तथा नवग्रहों के अरिष्ट फल निवारण होते हैं।

संतोष श्रीवास्तव, भोपाल

जीवन में अध्यात्म और रिश्तों का महत्व

रिश्तों का जीवन में बहुत महत्व है मानव जीवन रिश्तों से ही आरम्भ होता है । जन्म के समय माता–पिता के लिए बेटे या बेटी का रिश्ता, जो आगे चल कर भाई–बहन, पति–पत्नी आदि रिश्तों में बदलते जाते हैं ।

रिश्तों की परिभाषा और उनके निर्वहन के योगदान को हमारे धार्मिक ग्रंथों में बहुत अच्छे तरीके से विश्लेषित किया गया है

रामचरित मानस, महाभारत में रिश्तों के हर पहलू को दर्शाया गया है जिसमें सकारात्मक और नकारात्मक दोनों हैं । जरूरत इस बात की है कि हमें रिश्तों के नाजुक दौर से गुजरते हुए सकारात्मक पक्ष को अपनाना चाहिए।

रामचरित मानस में गुरू, माता,पिता,भाई,पता, पत्नी, सखा जैसे रिश्तों को सकारात्मक पहलू के परिप्रेक्ष्य में बताया गया है ।

इसी तरह महाभारत में बिगड़ते रिश्तों के दुष्परिणाम को बताया गया है, जिसे श्री कृष्ण जी ने अपने उपदेशों के माध्यम से मानव को सत्य पथ पर चलने, कर्मठ बनने, की शिक्षा दी है ।

वास्तव में रामचरित मानस में रिश्तों की मजबूती श्रीराम और हनुमान के प्रसंगों से मिलते हैं ।

हनुमान जी ने पग पग पर श्रीराम को अपने ईष्ट के रूप मन में धारण करते हुए , संवेदनशील रिश्तों की गरिमा को जीवन्त रखा है ।

' सूक्ष्म धरी सियई दिखावा
विकट रूप धरी लंक जलावा
भीम धरी असुर संहारे
राम चन्द्र के काज संवारे ।'

अगर हम रामचरित मानस के परिप्रेक्ष्य में देंखे तो भगवान राम का चरित्र सर्वोपरि हैं उनमें क्षमा, त्याग और समझौता—ये तीनों गुण हैं ।

मानव जीवन में रिश्तों का महत्वः मानव जीवन में रिश्ते सभी के लिए आवश्यक हैं और इन सब के महत्वपूर्ण आधार हैं ,वो स्तंभ जो इन्हें मजबूत और टिकाऊ बनते हैं इनमें प्रेम, विश्वास और आपसी समझ विशेष हैं ।

और इन सबके बीच में दो ऐसे गुण हैं जो हर संबंध को सहज बनाते हैं, वह हैं — अपेक्षाओं को छोड़ना भी है। जब हम अपने प्रियजनों की खुशी के लिए अपनी इच्छाओं को पीछे रखते हैं, तब रिश्तों में गहराई आती है। त्याग हमें रिश्तों को सही तरीके से जीना सिखाता है ।

जीवन में हर व्यक्ति की सोच, आदतें और प्राथमिकताएँ अलग अलग होती हैं। ऐसे में टकराव होना स्वाभाविक है। समझौता हमें यह सिखाता है कि हर परिस्थिति में जीत–हार नहीं होती, बल्कि संतुलन ही स्थायी समाधान है। थोड़ा लचीलापन और

क्षमाः क्षमा, त्याग और इनका विश्लेषण करने पर हम पाते हैं कि क्षमा मन की शांति का मार्ग है रिश्तों में गलतियाँ होना स्वाभाविक है। कोई भी अपने आप में पूर्ण नहीं होता। ऐसे में क्षमा का भाव हमें न केवल दूसरों की त्रुटियों को स्वीकार करने में मदद करता है, बल्कि हमारे मन को भी हल्का करता है। क्षमा करने से कटुता मिटती है और प्रेम का प्रवाह फिर से शुरू होता है। यह अहंकार को कम करके रिश्तों में मधुरता लाता है।

त्यागः निस्वार्थ प्रेम की पहचान – त्याग का अर्थ केवल भौतिक वस्तुओं का त्याग नहीं है, बल्कि अपने स्वार्थ, अहंकार और समायोजन रिश्तों को टूटने से बचाता है और उन्हें मजबूत करता है।

किसी भी संबंध को सहज बनाए रखने के लिए अनिवार्य है कि ये न केवल रिश्तों को टिकाऊ बनाते हैं, बल्कि जीवन को भी सुखमय और संतुलित करते हैं। जब हम इन मूल्यों को अपनाते हैं, तो हमारे रिश्ते प्रेम, विश्वास और सम्मान से भर जाते हैं।

इस तरह से हम पाते हैं आध्यात्मिकता के परिप्रेक्ष्य में और सामाजिक जीवन में रिश्तों को जीवन्त रखना जरूरी है और यहीं जीवन के कठिन दौर में भी सहायक होते है।

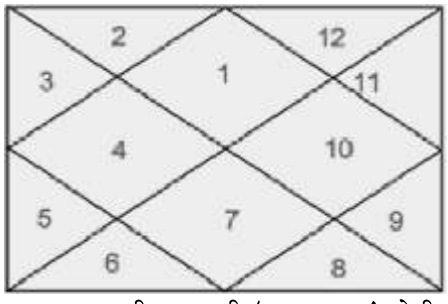

जातक की कुण्डली 'त्रयम्बकम्' होती है। प्रथम अम्बक भाव 1, 2, 3, 4। द्वितीय अम्बक भाव 5. 6, 7, 8। तृतीय अम्बक भाव 9, 10, 11, 12। प्रत्येक अम्बक चतुरात्मक है। इस प्रकार त्रयम्बक चतुर्मुख है अथवा चतुर्मुख त्रयम्बक है।

1. त्रयम्बक 1, 5, 91
2. त्रयम्बक 2, 6, 101
3. त्रयम्बक 3, 7, 111
4. त्रयम्बक 4, 8, 121

ये चार त्रयम्बक ही चतुर्मुख/ चतुर्भुज / चतुर्वाहु/ चर्तुव्यूह है।

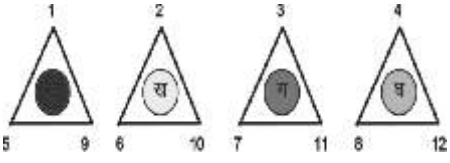

ऊपर की चार आकृतियाँ त्रयम्बक हैं। आकृति 'क' में 1, 5, 9 संख्याएँ हैं। ये परस्पर मित्र हैं। 1= मेष मंगल, 5= सिंह सूर्य, 9 धनु बृहस्पति। मंगल-सूर्य-बृहस्पति परस्पर नैसर्गिक मित्र हैं। अत: 1.5.9 मित्र हुई। आकृति 'ख' में 2, 6, 10 संख्याए है। 2 वृष शुक्र, 6 कन्या बुध, 10 मकर शनि। शुक्र-बुध-शनि परस्पर नैसर्गिक मित्र है। अत: 2, 6, 10 मित्र हुई। आकृति 'ग' में 3.7.11 संख्याएँ है। 3- मिथुन बुध. 7 तुला शुक्र, 11 कुम्भ शनि। बुध-शुक्र शनि परस्पर स्वाभाविक मित्र हैं। अत: 3. 7. 11 मित्र हुई। आकृति 'घ में 4, 8, 12 संख्याएँ हैं। 4 चन्द्रमा कर्क, 8 मंगल वृश्चिक, 12 बृहस्पति मीन। चन्द्र-भौम गुरु स्वभावत: मित्र हैं। अत: 4,8,12 मित्र हुई। इस प्रकार 12 राशियों के चार मैत्री समूह हैं। इन चार त्रयम्बकों को एक में मिलाने से एक चतुर्भुज बनता है। इसमें प्रत्येक त्रयम्बक का शीर्ष एक बिन्दु पर टिका है। यह बिन्दु चतुर्भुज विश्व का केन्द्र है। यह योगी के लिये ज्ञेय है किन्तु अव्यक्त है। त्रयम्बक विश्व ही चतुर्भुज होकर भास रहा है। इस विश्व को मैं प्रणाम करता हूँ। जातक की कुण्डली ही साक्षात् त्रयम्बक शिव है, त्रिविक्रम विष्णु है, चतुमुर्ख ब्रह्मा है। जातक की कुण्डली उस का उपास्य देव है, मार्गदर्शक है तथा स्वत: प्रमाण है।

पीठाधीश्वर स्वस्ति श्री स्वामी डॉ जयेंद्र कीर्ति जी

ज्योतिष में जातक की कुंडली में त्रयंबक कैसे होता है?

कुण्डली का पहला अम्बक (1. 2. 3. 4) दैहिक है। इस भाग का प्रारंभ 1 तन देह

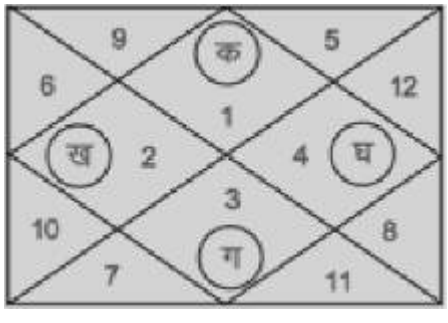

है। कुण्डली का दूसरा अम्बक (5, 6, 7, 8) बौद्धिक है। इस प्रखण्ड का प्रारंभ 5 पंचम बुद्धि से है। कुण्डली का तीसरा अम्बक (9. 10. 11. 12) धार्मिक है। इसका प्रारंभ 9 नवम धर्म से होता है। अब मैं धर्म का विवेचन करता हूँ। यह धर्म मात्र 10 लोगों को छोड़कर सबके लिये है। ये दस कौन-कौन लोग हैं? विदुर के कथनानुसार, व्यास के शब्दों में-

दश धर्म न जानन्ति धृतराष्ट्र निबोध तान्।
मत्त: प्रमत्त उन्मत्त: श्रन्त: क्रुद्धो बुभुक्षित:।।
त्वरमाणश्च लुब्धश्च भीत: कामी च ते दश।
तस्मादेतेषु सर्वेषु न प्रसज्जेत पण्डित:।।

– महाभारत उद्योगपर्व विदुर नीति 1/106-71

(हे धृतराष्ट्र! दस प्रकार के मनुष्य धर्म को नहीं समझते, उन्हें तुम जानो। 1. मत्त। 2. प्रमत्त। 3. उन्मत्त। 4. श्रन्त। 5. क्रुद्ध। 6. बुभुक्षित। 7. त्वरमाण। 8. लुब्ध। 9. भीत। 10 कामी। इसलिये पण्डित इनसे सम्बन्ध नहीं रखते।)

1. मत्त = मद्+क्त। पियक्कड़, नशे में चूर, विवेकहीन।

2. प्रमत्त = प्र+मद्+क्त। घमण्डी, अहंकारी, निरंकुश ।

3. उन्मत्त = उद्+मद्+त्त। विक्षिप्त, पागल, सनकी।

4. श्रान्त = श्रम्+क्त। थका हुआ, क्लान्त, शिथिल मनदेह।

5. क्रुद्ध = क्रुध्+क्त। क्रोधयुक्त, क्रोधी, कोपी।

6. बुभुक्षित = बुभुक्षा (मुज्+सन्+अ+टाप्) इतच् । भूखा।

7. त्वरमाण= त्वर्+शानच्। शीघ्रता करता हुआ, जो जल्दी में हो. आस्थिर चित्त, धैर्यहीन-उतावला उतावली में काम करने वाला।

8 लुब्ध = लुभ्+क्त। लालची, लोभी, लालायित।

9. भीत = भी+क्त। आतंकित, डरा हुआ, आपद्मस्त ।

10. कामी = कम्+डिनि+सु। कामासक्त, लम्पट, विषयातुर।

ऐसे लोगों के लिये धर्म व्यर्थ है। ये न तो धर्म समझते हैं, न ही सुनते हैं। धर्म विषयक यह प्रलेख भी ऐसों के लिए नहीं है। यह जिज्ञासुओं के लिये है। जोकि नवम

भाव है। जो सबको धारण करता है. जिसे सभी धारण करते हैं. जो सबका आधार है तथा आधेय भी है, उसी का नाम धर्म है। आधार और आधेय की श्रृंखला को विश्व

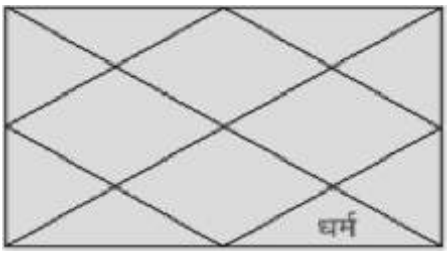

कहते हैं। यह विश्व ही धर्म है। इसे जानने में जीवन की सार्थकता है। विश्व का ज्ञाता धर्मात्मा है। ऐसे धर्मात्मा को मेरा प्रणाम! सारा संसार आधार और आधेय के रूप में विभक्त है। आधार से पृथक् आधेय की सत्ता सम्भव नहीं है। फल का आधार है फूल। फूल का आधार है पल्लव। पल्लव का आधार है वृन्त (शाखा)। शाखा का आधार है तना (वृक्ष)। वृक्ष का आधार है अंकुर। अंकुर का आधार है बीज। बीज का आधार है भूमि। भूमि का आधार है जल (शेषनाग)। जल का आधार है अग्नि (कच्छप)। अग्नि का आधार है वायु। वायु का आधार है शून्य (आकाश)। शून्य में सब है. शून्य सबमें है। इसलिये शून्य धर्म है। फल में बीज होता है। अत: बीज का आधार है फल। यह चक्र बड़ा ही सुन्दर है। इसे सुदर्शनचक्र कहते हैं। इसको धारण करने वाला तत्त्व धर्म है। यह तत्व व्यक्त और अव्यक्त दोनों है। अव्यक्त रूप में त्रिगुणात्मिका मूला प्रकृति धर्म है। व्यक्त रूप में इस मूला प्रकृति का विकार रूप यह विश्व ही धर्म है। अव्यक्त पुरुष (चेतन तत्व) धर्म नहीं है। वह निर्गुण होने से धर्म परे है।

पुरुषतत्व (चेतन ब्रह्म) अव्यक्त है। प्रकृति तत्व (जड़ ब्रह्म) व्यक्ताव्यक्त है। यहीं अव्यक्त पुरुष एवं अव्यक्त प्रकृति दोनों धर्म से परे हैं। पुरुष के सान्निध्य से प्रकृति विकृत होती है। प्रकृति का विकृत होना ही धर्म है। धर्म पुत्र है प्रकृति का। धर्म की माला और पिता प्रकृति ही है। पुरुष इसका पिता नहीं। यह धर्म का साक्षी और प्रेरक मात्र है। यह सांख्य सम्मत ज्ञान है। इसे जो जाने समझे बूझे, उसे मेरा प्रणाम।

देह का आधार प्राण है, प्राण का आधार देह। जन्म का आधार मृत्यु है. मृत्यु का आधार जन्म। भक्त का आधार भगवान् है, भगवान का आधार भक्त। दिन का आधार रात है, रात का आधार दिन। नर का आधार नारी है, नारी का आधार नर। इसी द्वैत का नाम धर्म है। अद्वैत में गर्म कहाँ? द्वैतात्मक विश्व को मेरा प्रणाम।

धर्म के स्वरूप का वर्ण करने वाला एक मन्त्र है–

चत्वारि श्रृंगा त्रयो अस्य पादा,
द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य ।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति,
महो देवो मर्तयां आ विवेश ।।

वृषभ= गो (भूमि, जल, अग्नि, वायु, प्रकाश, रश्मि, शब्द, वाक्, वाणी, आत्मा, पशु, जीव, प्राणी, इन्द्र, मन, इन्द्रिय, काल) वर्म।

वृष भ्वा. पर. वर्षति वर्षना अनुदान देना अर्पण करना तर करना पैदा करना सर्वोपरि शक्ति रखना प्रहार करना तथा वृष् चुरा.आ. वर्षयते शक्तिशाली वा प्रमुख होना, उत्पादन क्षमता से युक्त होना+अनच वृषभ। अन्य प्रकार से, वृषभ वृषभ।

वृष्+क = वृष= उत्तम श्रेष्ठ प्रमुख कामदेव आनन्द सुख शक्तिशाली। भा (भाति अदा. पर चमकना उज्जवल होना दिखायी देना प्रतीत होना, विद्यमान होना प्रकाशमान होना) ड–भ शुक्र भ्रम भ्रान्ति ग्रह राशि नक्षत्र प्रकाश दीप्ति।

वृषभ = प्रकाश (ज्ञान), सुख (आनन्द) की वर्षा करने वाला, हर्षप्रद कल्याणकारी मंगलमय शुभद= धर्म।

जिस पर बैठने से, सवार होने से, शयन करने से सुख की वर्षा हो वा आनन्द की प्राप्ति हो वह सब वृषभ है। वृषभ चूहा (गणेश का वाहन), बैल (शिव का वाहन), गरुण (विष्णु का वाहन), मयूर (कार्तिकेय का वाहन), ऐरावत (इन्द्र का वाहन), सिंह (दुर्गा का वाहन), हंस (सरस्वती का वाहन), उल्लू (लक्ष्मी का वाहन), भैंसा (यमराज का वाहन), शरीर (जीव का वाहन), हृदय (आत्मा का वाहन), अग्नि (हव्य वाहन), यज्ञ (सुख वाहन)। अत: **वृषभ** = वाहन, जो सबको वहन करता, ढोला ले चलता है। मोटरकार, रेलगाड़ी, वायुयान, अन्तरिक्षयान, पोत, पनडुब्बी सब को ढोने से वाहन वा वृषभ हैं।

धर्म और वाहन का एक ही अर्थ है। जो सबका आधार आसन है, वह वाहन/वृषम/धर्म है। अब मैं इस मन्त्र का अर्थ अनेकों प्रकार से कर रहा हूँ–

1. वृषभ = शरीर पक्ष में

चत्वारि श्रृंगा = चतुरंग / चतुरवयव।
= कपालखण्ड / शीर्ष भाग, स्कन्ध बाहुखण्ड / बाहुभाग, मध्य खण्ड / आवक्ष कटि भाग,ऊरुपादखण्ड/अधो भाग

त्रयोपादा= सतोगुणी, रजोगुणी, तमोगुणी, प्रकृति।

द्वेशीखें = कठोरता/परुषता युक्त पुरुष भाव, कोमलता / सौम्यतायुक्त स्त्रीभाव। दक्षिणपार्शव वामपार्शव।

सप्त हस्तास: सप्त धातुएँ।
= रस, रक्त, मांस, भेद, अस्थि मज्जा, वीर्य।

त्रिधा बद्ध: = वात, पित्त, कफ से बंधा हुआ।

2. सूर्य पक्ष में अर्थ

चत्वारि श्रृंगा = प्रात:काल, मध्यान्हकाल, सायंकाल, निशीथ काल, में सूर्य की स्थिति।

त्रयोपादा = सूर्य की शीघ्र, मन्द, सम गतियाँ।

द्वे शीर्षे= सूर्य की उच्च (मेष), नीच (तुला) में स्थिति।

सप्त हस्तास: = सूर्य की सात रश्मियाँ

त्रिधाबद्ध = आदि (पूर्व), मध्य (ऊपर), अन्त (पश्चिम) में स्थित सूर्य।

3. कुण्डली पक्ष में

चत्वारि श्रृंगा= कण्टक / चारों केन्द्र / भाव, 1. 4. 7. 101

त्रयोपादा = त्रिकोण स्थान /भाव 1,5, 91

द्वे शीर्षे = दोनों मारक स्थान/भाव 2.7।

सप्त हस्तासः = सातों प्रकाश ग्रह/द्वादश राशीश।

= सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि।

त्रिधाबद्ध = जन्म लग्न, चन्द्र लग्न, सूर्य लग्न द्वारा फलादेश।

4. विश्व पक्ष में

चत्वारि श्रृंगा = चार दिशाएँ। पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण।

त्रयोपादा = भूलोक, भुवोंक, स्वोंक।

द्वे शीर्षे = सृष्टि, प्रलय ।

सप्त हस्तासः= दो प्रकृतियाँ-व्यक्त, अव्यक्त तथा पञ्चप्राण-प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान।

त्रिधाबद्ध = देश, काल, पात्र से सब बँधा है।

5. वाक् पक्ष में

चत्वारि श्रृंगा= परा, पश्यन्ती, मध्यमा, वैखरी वाणी।

त्रयोपादा = कारक पद. क्रिया पद. अव्यय पद।

द्वे शीर्षे = गद्य वाक्य, पद्य वाक्य।

सप्त हस्तासः = 7 राग / स्वर। षड्ज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, पञ्चन, धैवत, निषद। सारेगम पधनि।

त्रिधाबद्धः = धातु, उपसर्ग, प्रत्यय से बँधा हुआ।

6. लोक अर्थ में

चत्वारि श्रृंगा = चार प्रकार के प्राणी।

= अण्डज, पिण्डज, उदिभद्ध, स्थावर प्राणि वर्ग।

त्रयोपादा = त्रिलिंग। पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, नपुंसकलिंग।

द्वे शीर्षे = नाशवान, अविनश्वर। दृश्य, अदृश्य।

सप्त हस्तासः = सप्तावरण। महत्तत्व, अहंकार, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध।

त्रिधाबद्धः = तीन अवस्था ठोस, तरल, वायवीय (गैस) स्थिति में।

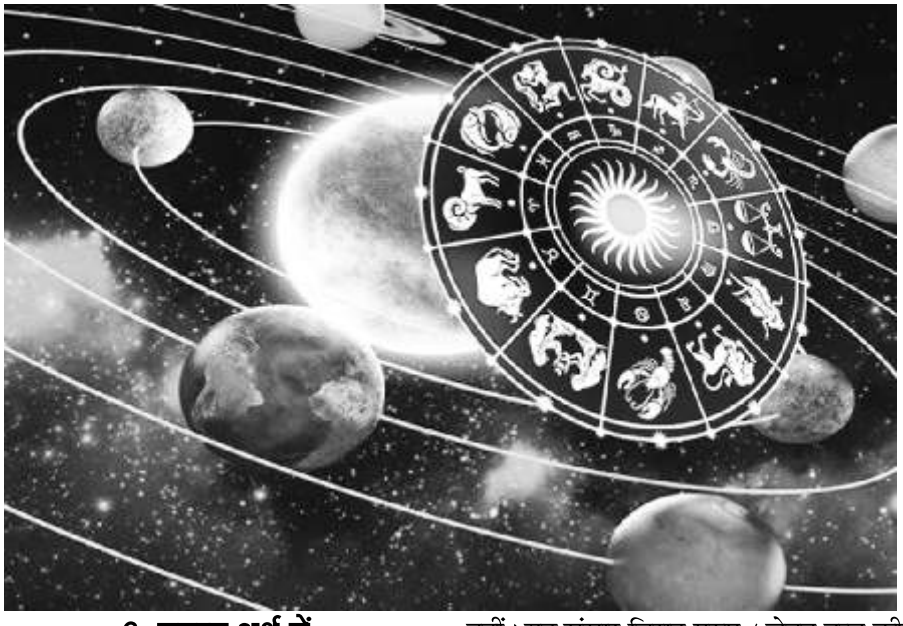

6. मनुष्य अर्थ में

चत्वारि = श्रृंगा जागृति, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय दशाएँ।

त्रयोपादा = स्थूल, सूक्षम, कारण शरीर।

द्वे शीर्षे = सुख, दुःख। जन्म-मृत्यु।

सप्त हस्तासः = मात, पिता, सहोदर, सहोदरी, पुत्र, पुत्री, पत्नी / पति।

त्रिधाबद्ध = पुत्रेषणा, वित्तेषणा, लोकेषणा से बंधा हुआ। इस प्रकार चार श्रृंग, तीन पाद, दो शीर्ष, सात हाथ, तीन बन्ध के अनेकों अर्थ हैं। अधिक विस्तार ठीक नहीं है। अब आगे के पदों पर विचार करता हूँ।

रोरवीति = रु शब्दे+यङ्लुगन्त प्र. पु. एक वचन लट् लकार।

= निरन्तर शब्द करता रहता है।

वृषभः महः देवः = वृषभ बहुत बड़ा देवता है। (मह पूजायाम् घञर्थक महः यज्ञ, प्रकाश)।

आ विशेष= आविश् प्रवेश लिट् प्र.पु. एक वचन।

= पूरी तरह प्रविष्ट है, प्रवेश कर चुका है, घुसा है।

मर्त्याम् = म्+तन्+यत्+टाप्+अम्। मया शब्द स्त्रीलिंग द्वितीया विभक्ति एक वचन।

मर्त्या = मरणधर्मा काया। क्योंकि काया का नाश होता है, इसमें रहने वाली आत्मा का नहीं। यह संसार विराट पुरुष / चेतन तत्व की काया (शरीर) है।

महो देवो मर्त्या आ विवेश = महः देव ने मरणशील लोक को घेर रखा है। महः देव धर्म। अर्थात् धर्म ने संसार को जकड़ रखा है। धर्म इस संसार के कण-कण में प्रविष्ट है। संसार धर्म से ओतप्रोत है।

वृषभो रोरवीति = वृषभ सतत शब्द करता रहता है। धर्म अपने स्वरूप का निर्वचन प्रकृतितः स्वयं कर रहा है। अर्थात् चर्म अपना प्रवक्ता स्वयं है।

चत्वारि श्रृंगा त्रयो अस्य पादा =इस धर्म की चार सींगें हैं। तीन इसके पैर हैं। यह चतुर्भुज एवं त्रिविक्रम स्वरूप वाला है।

द्वे शीर्ष सप्त हस्तासो अस्य= इस धर्म के दो सिर तथा सात हाथ हैं। अग्नि पार्थिव तथा अपार्थिव (दिव्य) होने से दो शीर्ष वाला है तथा सप्तजिह्वी / सात जिहवाओं से युक्त है।

त्रिधाबद्धः =(धर्म) यह धर्म तीन प्रकार से बंधा है-आदि, मध्य, अन्त गर्दन, पेट, पूँछ (पैर)।

सम्पूर्ण मन्त्र का तात्पर्य है-वृषभ नाम धर्म का तथा यह व्यापक है। धर्म को संकुचित दृष्टि से देखने वाले लोग मूर्ख हैं, राक्षस हैं। ऐसे लोगों का धर्म विषयक मत दुर्गन्धित मल सदृश है। धर्म संबंधी व्यापक मत वाले देव हैं, विद्वान हैं। इन्हें मेरा नमस्कार।

-डॉ. अमित कुमार 'राम'

जाने धनेश द्वारा धनार्जन करने के साधन एवं साध्य कैसे? समीक्षात्मक अध्ययन

प्रस्तुत लेख में हमारा विषय केवल धन पर केन्द्रित है। कहते हैं कि केवल कुबेर को छोड़कर धन की किसे आवश्यकता नहीं। धन जीवन यापन का सबसे प्रमुख आधार है। तो इस धन को देने वाले भी सात ग्रह है जो द्वादश लग्नों में अपने स्वामित्व के आधार पर ही धन प्रदाता होते है। हर लग्न के लिए कोई एक ग्रह धनेश होता है और द्वादश लग्नों में देखे तो सोतों ग्रह सूर्य, मंगल, चंद्रमा, बुध, गुरू, शुक्र व शनि, ये सप्त धनेश ही प्रधान होते है और यही अपनी स्थिति के अनुसार धन प्रदान करते है। आईये उदाहरण कुंडलीयों सहित इनको और अधिक समझने का प्रयास करते हैं:-

1. मेष लग्न व धनेश

जन्म चक्र के दूसरे घर को धन स्थान कहा गया है और इसके स्वामी को धनेश कहा गया है। मेष लग्न के दूसरे भाव में वृष राशि होने पर शुक्र धनेश होता है। शुक्र धनेश होने से वह धन अपनी स्थित अनुसार प्रदान करता है। यथा पहले घर में स्थित शुक्र जातक को सर्वमान्य बनाता है। दूसरे घर में शुक्र हो तो जातक सामान्य रूप से धनार्जन नहीं करता लेकिन उसे धनाभाव भी नहीं रहता। तीसरे स्थान में शुक्र जातक को लोभी व कामुक बनाता है वहीं चौथे भाव का शुक्र जातक को बड़े श्रीमंत लोगों से मिलाता है और जातक को बाहुबल से धन कमाना पडता है। पांचवे भाव में शुक्र जातक को वैभवपूर्ण जीवन व्यतीत तो कराता है, परंतु उसे अर्थ की चिंता सदा बनी रहती है। छठे भाव शुक्र कर्जा अधिक देता है। खाने की अधिक आदत के कारण जातक रोगी बन जाता है। **देखे**

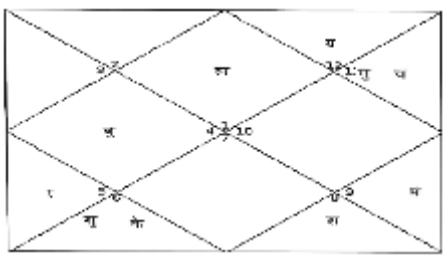

उदाहरण कुंडली एक:
जन्म दिनांक: 19-08-1986
जन्म समय: 22:45
जन्म स्थान: सोनीपत हरियाणा
उदाहरण कुंडली एक के जातक के शुक्र धनेश होकर छठे स्थान में स्थित है। जिस कारण जातक धन संकट से जूझता रहा और सितंबर 2013 में जाकर अपना खुद का घर खरीद पाया।

सप्तम शुक्र स्त्री की वजह से व व्यापार से धन प्रदान करवाता है। जातक स्त्रियों से विशेष आकर्षण रखता है। आठवें भाव में शुक्र धन, स्त्री व आयु की हानि करता है। नर्वे भाव में शुक्र यश व धन प्रदायक रहता है। दसवें भाव में शुक्र सभी प्रकार के ऐश्वर्य व सुख प्रदान करता है। बड़े घर की लड़की पत्नि के रूप में प्राप्त होती है। ग्यारहवे घर का शुक्र बहुत धन प्रदाता होता है। तो वही बारहवें घर का शुक्र राजा की तरह सभी भौतिक सुखों से झोली भर देता है। जातक धनवान रहता है।

2. वृषभ लग्न व धनेश

वृष लग्न के लिए धनेश बुध ग्रह होता है और अपनी स्थित के अनुसार धन प्रदान करता है। लग्न में धनेश बुध जातक को लेखन या प्रकाशन से धन प्रदान करवाता है। वहीं दूसरे भाव में धनेश बुध हो तो जातक बुद्धिवान होता है और वह सटीक गणित लगा सकता है। और वह बैंक में नौकरी कर या दलाली का काम कर धन कमाता है।

उदाहरण कुंडली: 2
जन्म दिनांक: 26-07-1941
जन्म समय: 02:30
जन्म स्थान: सोनीपत हरियाणा
उदाहरण कुंडली दो के जातक की वृष लग्न

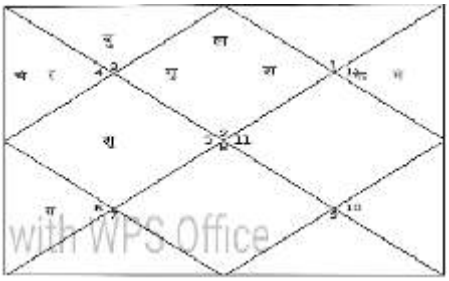

की कुंडली में धनेश बुध अपने ही स्थान धन स्थान में स्थित है। यह जातक बैंक में नौकरी करता रहा और साथ में दलाली से भी धन कमाया।

वही तीसरे भाव में धनेश होने से जातक भाईयो का लाडला होता है और भाईयो से धन लाभ पाता है। डॉक्टरी अथवा न्यायालय के कार्य से धन पाता है।

चौथे भाव में धनेश होने से जातक धैर्यवान होता है और आधी आयु जाने के बाद ही धन सग्रह कर पाता है। पांचवे भाव में धनेश बुध हो तो ऐसा जातक व्यवहार कुशल होता है और वह दूसरों को आगे कर धन कमाता है।

छठे स्थान में धनेश बुध हो जातक लेखन या मुद्रक बन धन कमाता है।

सातवें स्थान में धनेश बुध हो तो जातक कम्पाउण्डर या क्लर्क बन धन कमाता है। वह व्यापार भी करता है।

आठवें स्थान में धनेश बुध हो तो जातक को कई बार अचानक से धन लाभ कराता है।

नौवें भाग्य स्थान में धनेश बुध हो तो जातक खूब व्यापार करता है और विवाह के बाद उसका अधिक भाग्य जागता है। दशम स्थान में धनेश बुध हो तो जातक को पैतृक संपत्ति तो मिलती ही है, साथ ही वह व्यापार से भी

धन कमाता है। ग्यारहवें भाव में धनेश बुध हो तो जातक कई तरह के व्यवसाय कर धन कमाता है।

बारहवें भाव में बुध हो तो जातक कई सिद्धि प्राप्त करता है और वह धनवान व दूसरो का सहायक भी होता है।

3. मिथुन लग्न और धनेश चंद्रमा

मिथुन लग्न वालो के लिए धनेश चंद्रमा होता है जिसकी वजह से इस लग्न वालों को धन प्राप्ति में कई उतार चढ़ावो का सामना करना पड़ता है। यदि धनेश चंद्रमा लग्न में स्थित हो तो जातक घूमने का बहुत शौकीन होता है और घूमने पर बहुत धन खर्च करता है। झूठ बहुत बोलता है। पत्नि द्वारा उसे धन प्राप्त होता है। दूसरे भाव में अपने ही स्थान में चंद्रमा हो तो जातक का परिवार बहुत बड़ा होता है और ऐसा जातक खूब धन व प्रताप कमाता है। तीसरे भाव में धनेश चंद्रमा हो तो जातक ऐसा जातक बार बार व्यवसाय बदलता है। उसे धन कमाने में बहुत संघर्ष करना पड़ता है।

चौथे भाव में धनेश चंद्रमा हो तो जातक सरकार द्वारा सम्मानित होता है। उच्च वाहन व धन भी वह अपने स्वबल से कमाता है। पांचवें भाव में धनेश चंद्रमा हो तो जातक ब्याज पर धन देकर खूब पैसे बनाता है।

छठें स्थान में धनेश चंद्रमा हो तो जातक नशेड़ी होने की वजह से बार बार अपमानित व धन हानि करता है। उसका धन रोगों पर अधिक खर्च होता है। सातवें स्थान में धनेश चंद्रमा हो तो जातक देश विदेश में व्यापार करके खूब धन कमाता है।

आठवें स्थान में धनेश चंद्रमा हो तो जातक का धनी होने का मामला बहुत क्षीण होता है। धन हानि अधिक होती है।

नौवें स्थान में धनेश चंद्रमा हो तो जातक धर्मशील होता है। वह कई तरह के व्यवसाय कर धन कमाता है। ग्यारहवें भाव में धनेश चंद्रमा हो तो जातक को कई बार लॉटरी या सट्टे से धन प्राप्त होता है और वह भूमि से भी धन कमाता है। धनवान तो वह बनता है लेकिन थोडा देरी से।

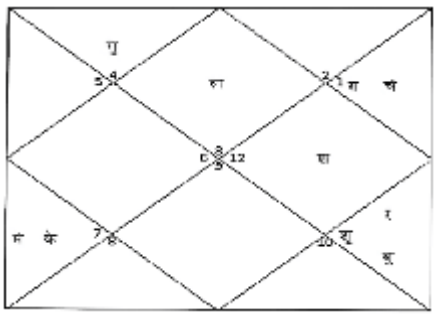

उदाहरण कुंडली: 3
जन्म दिनांक: 15-02-1967
जन्म समय: 14:14
जन्म स्थान: सोनीपत हरियाणा

उदाहरण कुंडली तीन के जातक के लाभ भाव में धनेश चंद्रमा स्थित है। इसे कई बार लॉटरी, सट्टे बाजी से धन लाभ हुआ है। और इसकी पास अपनी जमीन है, जिस पर फसल उत्पन्न कर यह धन कमाता रहा है।

यदि धनेश चंद्रमा बारहवें घर में स्थित हो तो जातक को चाचा की संपत्ति मिलती है। वह कई बार कर्जदार भी बनता है।

4. कर्क लग्न व धनेश सूर्य

कर्क लग्न वालों के लिए थन स्वामी सूर्य होता है। कर्क लग्न में धनेश सूर्य यदि लग्न में स्थित हो तो जातक उच्च अधिकारी बन धन कमाता है। वहीं दूसरे भाव में धनेश हो जातक स्वार्थी होता है और वह कई तरीको से धन कमाता है। लेकिन धन के कमाने के तरीको पर वह बदनाम भी होता है। सूर्य धनेश बन तीसरे स्थान में स्थित हो तो जातक बेहद पराक्रमी व बुद्धिमान होता है। वह किसी संस्था का अध्यक्ष बन धन लाभकमाता है।

यदि धनेश सूर्य चौथे भाव में स्थित हो तो जातक लोकप्रिय व कई तरह के संघर्ष करने के बाद धनी हो पाता है।

उदाहरण कुंडली चार
जन्म दिनांक : 31.10.1969
जन्म समय : 22.40
जन्म स्थान : सोनीपत

उदाहरण कुंडली चार के जातक की कुंडली में सूर्य धनेश होकर चतुर्थ भाव में स्थित है जिस कारण जातक के लेकर कठोर संघर्ष रहा। अब जाकर कहीं इस जातक का जीवन धनी और सामान्य हुआ है।

यदि सूर्य धनेश होकर पांचवे भाव में स्थित हो तो जातक अपनी संतान की वजह से धनी और मानी बनता है। छठें स्थान में धनेश सूर्य

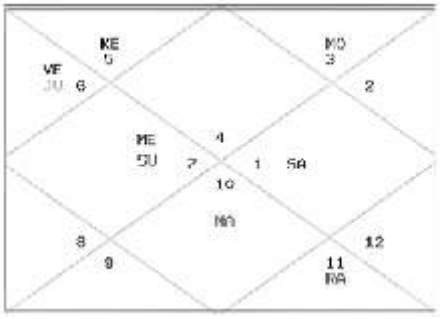

स्थित हो तो जातक धन धान्य का पूरा सुख पाता है लेकिन इसके शत्रु अधिक होते हैं।

सातवें स्थान में धनेश सूर्य स्थित हो तो जातक व्यवसाय और चुनाव आदि से धन पाता है। लेकिन वैवाहिक जीवन कष्टप्रद रहता है। आठवें स्थान में धनेश सूर्य स्थित हो तो जातक बहुत अधिक खर्चिला होता है जिस कारण धन का सदा अभाव खलता है।

नौवें भाग्य स्थान में धनेश सूर्य स्थित हो तो जातक दुष्ट प्रवृति व ठगी करके धन कमाता है। दशम स्थान में धनेश सूर्य स्थित हो तो जातक पर सदा राजकृपा बनी रहती है और अपनी विद्वता से वह धन व क्रीति कमाता है। ग्यारह भाव में धनेश सूर्य स्थित हो तो जातक उच्च पदाधिकारी होता है और बहुत सा धन धान्य उसके पास होता है। बारहवें भाव में धनेश सूर्य स्थित हो तो जातक विदेश से धन कमाता है।।

5. सिंह लग्न व धनेश बुध

सिंह लग्न के लिए धन स्वामी बुध ग्रह होता है। जिसका वर्णित धन पर असर हम वृष लग्न में कर चुके है । उदाहरण कुंडली पांच में बुध धनेश होकर लग्न में स्थित है और इस वजह से जातक लेखक, संपादक कर्म से धन कमाता रहा।

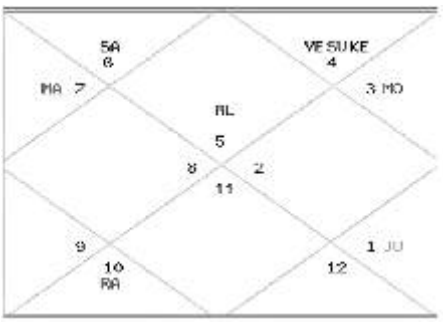

उदाहरण कुंडली: 5
जन्म दिनांक: 21-07-1952
जन्म समय: 08:20 सुबह
जन्म स्थान: सोनीपत हरियाणा

6. कन्या लग्न व धनेश शुक्र

कन्या लग्न वालो के लिए धनेश शुक्र होता है। जिसका वर्णन मेष लग्न वाले कोलम में किया जा चुका है । उदाहरण कुंडली 6 में जातक का धनेश शुरू छठे स्थान में स्थित है। जिस कारण जातक सदा कर्ज तले दबा रहा। खाने की ज्यादा आदत के कारण रोगी रहा और रोग से ही मृत्यु हुई।

उदाहरण कुंडली : 6
जन्म दिनांक: 05-01-1913
जन्म समय: 00:05
जन्म स्थान: सोनीपत हरियाणा

7. तुला लग्न व धनेश मंगल

तुला लग्न के लिए दूसरे घर का स्वामी होने के कारण धनेश मंगल होता है। धनेश मंगल यदि लग्न में स्थित हो जातक विविध व्यवसायों के प्रति आकृष्ट हो धन हानि करता है और वकालत या शल्य चिकित्सक कर्म द्वारा धन कमाता है। और यदि मंगल दूसरे स्थान में स्थित हो तो जातक एकदम से धनी बनने के चक्कर में रेस, लॉटरी आदि पर धन बर्बाद करता है । डॉक्टरी पेशे से वह धन कमाता है।। यदि धनेश मंगल तीसरे भाव में स्थित हो तो जातक को शुरूवाती दिन कम पैसों की कमाई में गुजारने पढ़ते है और तीस पार वह धन की ठीक ठाक कमाई करने लगता है।

चौथे सुख भाव में धनेश मंगल स्थित हो तो जातक भूमिपति होता है और भूमि से ही थन कमाता है। उदाहरण कुंडली सात के जातक के मंगल चतुर्थ भाव में स्थित है। यह जातक बेहद संपन्न जमीदार रहा। और भूमि से खूब धन कमाया।

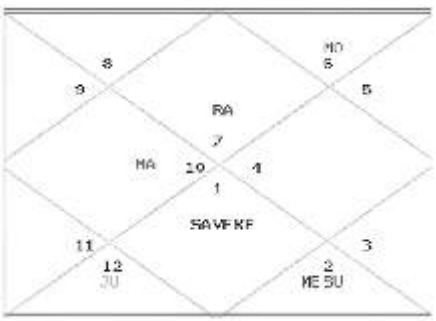

उदाहरण कुंडली: 7
जन्म दिनांक: 28-05-1939
जन्म समय: 16:10
जन्म स्थान: सोनीपत हरियाणा

पांचवे भाव में धनेश मंगल यदि हो तो जातक पुलिस, सेना या इंजीनियरिंग की नौकरी द्वारा धन कमाता है। और यदि छठे स्थान में धनेश मंगल हो तो पराक्रम से धन कमाता है। और नित शत्रु बनाता है।

सातवें स्थान में धनेश मंगल हो तो जातक डॉक्टर, सर्जन बन धन कमाता है। आठवें स्थान में मंगल हो तो जातक दरिद्री में अधिकतर जीवन यापन करता है। नौवें भाग्य स्थान में धनेश मंगल हो तो जातक विदेश से धन कमाता है। और विदेश स्त्री से ही विवाह करता है। विदेश में डॉक्टरी का पेशा कर लोगों की कुंडली में भी मंगल की यही स्थिति होती है।

दशम स्थान में धनेश मंगल हो तो जातक वकील बन या किसी के द्वारा गोद लिया जाकर धन कमाता है। सर्जरी के धंधे से भी वह धन कमाता है।

ग्यारहवें भाव में धनेश मंगल हो तो उसे अपने राज्य / क्षेत्र में बड़ा पद प्राप्त होता है। बारहवें भाव में धनेश मंगल हो तो जातक के जीवन में वाद विवाह व कलह झगड़े ज्यादा होते है। कई बार उसके चलते कार्य झगड़े की वजह से ठप्प हो जाते है।

8. वृश्चिक लग्न व धनेश गुरू

वृश्चिक लग्न में धनेश गुरू लग्न में हो तो धन की चिंता सदा लगी रहती है। दूसरे घर में स्थित हो तो शिक्षक या प्रवक्ता बन धन कमाता है। तीसरे भाव में धनेश गुरू हो तो जातक लेखन से धन कमाता है। और सरकारी नौकरी से धन कमाता है। उदाहरण कुंडली आठ के जातक की कुंडली में तीसरे भाव में धनेश गुरू स्थित है। इस जातक ने लेखन व सरकारी नौकरी से धन कमाया है।

उदाहरण कुंडली 8
जन्म दिनांक: 23-11-1926
जन्म समय: 5:50
जन्म स्थान: मेरठ यूपी

चौथे स्थान में धनेश गुरू हो तो स्थावर संपत्ति नष्ट हो जाती है और अपने भुजबल से धनार्जन करना पड़ता है। पांचवे भाव में धनेश गुरू व्यवसाय या शिक्षक कर्म से धन कमाता है। छठें स्थान में धनेश गुरू हो तो जातक पहले नौकरी कर धन कमाता है फिर व्यवसाय से भी वह धन कमाता है। सातवें स्थान में धनेश गुरू हो तो जातक शिक्षक, वकील या न्यायाधीश बन धन कमाता है। आठवें स्थान में धनेश गुरू सदा धन का संकट प्रदान करता

रहता है। नवम स्थान में धनेश गुरू हो तो उच्च पद या नामी वकील बन धन कमाता है। दशम गुरू जातक को धन के मामलों में भाग्यशाली बनाता है। ग्यारहवें भाव में धनेश गुरू धन सम्पत्ति से सदा युक्त रखता है। बारहवें भाव में धनेश गुरू जातक को मौज मस्ती युक्त बनाता है। वह थनी होता है।

9. धनु लग्न और धनेश शनि

धनु लग्न के लिए धन स्वामी शनि ग्रह होता है। यदि शनि धनेश होकर लग्न में स्थित हो तो जातक प्रारंभिक अवस्था में भारी कष्ट पाता है। और फिर अपने बाहुबल से धन कमाता है।

दूसरे घर में धनेश हो तो लगातार धन की प्राप्ति होती रहती है। यदि तीसरे स्थान में धनेश शनि हो तो जातक को प्रवास अधिक करने पडते है और प्रवास कर करके वह धन कमाता है। चतुर्थ भाव में धनेश शनि हो तो व्यापार और नौकरी कर धन कमाता है। लेकिन शुरूवात में कष्टों के बाद। पांचवें भाव में धनेश शनि हो तो वह अपने बुद्धि बल पर धन कमाता है। छठे स्थान में धनेश शनि हो तो जातक को या तो धन बहुत मिलेगा या यश बहुत मिलेगा। सातवें स्थान में धनेश शनि हो तो जातक व्यापार को निरंतर बढ़ाता हुआ थन कमाता है। लेकिन स्त्री मामला थोडा कष्टप्रद रहता है।

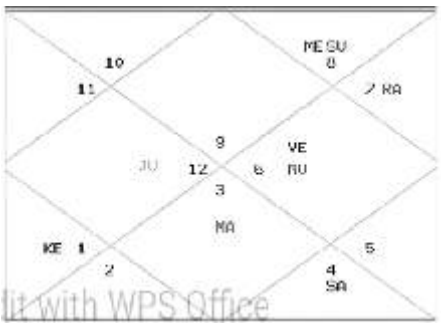

आठवें स्थान में धनेश शनि हो तो जातक को पहले धन से सुखी व बाद में दुखी कर देता है। अनुसंधान के कार्य धन देते है। उदाहरण कुंडली नौ के जातक की कुंडली में शनि धनेश होकर अष्टम भाव में स्थित है। यह जातक 2005 तक धन से बेहद सुखी रहा लेकिन अब धन की तंगी ने इसका जीना हराम कर रखा है।

उदाहरण कुंडली: 9
जन्म दिनांक: 28-11-1975
जन्म समय: 09:00
जन्म स्थान: सोनीपत हरियाणा

शनि यदि नवम स्थान में धनेश होकर स्थित हो तो जातक शिक्षक, वकील या जज बनकर धन कमाता है। दशम स्थान में धनेश शनि हो तो जातक निरंतर कई मार्गो से अपने कर्म की सिद्धि करता हुआ धन कमाता है। ग्यारह भाव में शनि हो तो जातक कई प्रकार से धन कमाता है। बारहवें भाव में धनेश शनि हो तो जातक व्यवसाय से धन कमाता है।

10. मकर लग्न व धनेश शनि

मकर लग्न में धनेश शनि होता है जिसके फलों का वर्णन ऊपर किया जा चुका है। उदाहण कुंडली दश के जातक की कुंडली में धनेश शनि छठें स्थान में स्थित है। यह जातक अपने क्षेत्र में काफी प्रसिद्ध रहा लेकिन धन के मामलों में हमेशा दरिद्र ही रहा।

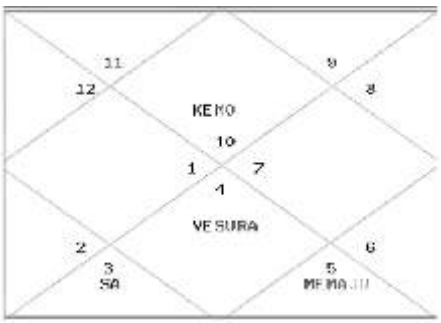

उदाहरण कुंडली 10
जन्म दिनांक: 03-08-1944
जन्म समय: 18:30
जन्म स्थान: पानीपत हरियाणा

11. कुंभ लग्न व धनेश गुरू

कुंभ लग्न के लिए धनेश गुरू होता है। जिसका फल विवेचन ऊपर लिखित वर्णित है। उदाहरण कुंडली ग्यारह सिने स्टार अमिताभ बच्चन की है। इनके छठे स्थान में धनेश गुरू स्थित है। इन्होनें पहले नौकरी की फिर व्यवसाय करके धन कमाया।

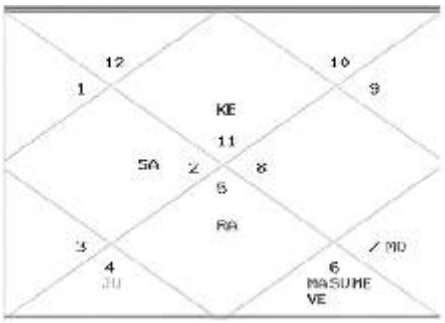

उदाहरण कुंडली: 11
जन्म दिनांक: 11-10-1942
जन्म समय: 16:00
जन्म स्थान: इलाहाबाद

12. मीन लग्न व धनेश मंगल

मीन लग्न के लिए धन स्वामी मंगल होता है जिसका वर्णन हम ऊपर कर चुके है। उदाहरण कुंडली बारह में मंगल धन स्वामी हो भाग्य स्थान में स्थित है। यह जातक विदेश (दुबई) में नौकरी कर धन कमा रहा है।

उदाहरण कुंडली: 12

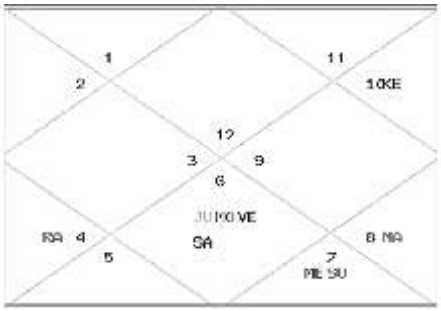

जन्म दिनांक 04-11-1980
जन्म समय: 15:30
जन्म स्थान: सोनीपत हरियाणा

उपरोक्त वर्णित फलकथन विभिन्न ग्रहों की स्थित, योग, दृष्टि द्वारा प्रभावित होता है। इस लेख से हमारा उद्देश्य धन भाव व धनेश से संबंधित है। और केवल धन स्वामी का विचार किया गया है।

कारावास योग

कर्नल नरेश कुमार सोनी

वर्तमान में हर दिन बलात्कार, हत्या, आर्थिक एवं अन्य अपराधों की खबरें सुनने को मिलती है। अपराधियों को आज नहीं तो कल जेल जाना ही पड़ता है। कोई जरूरी नहीं कि अपराधी ही जेल जाये । कई लोग अपने उद्देश्य के लिये, अपनी संस्था या समाज के कल्याण के लिये आंदोलन करते हैं और जेल जाते हैं। कई निरपराध लोगों को कानूनी पचड़ा में फसाकर जेल भेज दिया जाता है।

कारावास – जेल योग

सामान्यत: छठे, आठवे, एवं बारहवे भाव/भावेश का राहु, शनि एवं मंगल से संबंध हो तो जेल योग । कारावास का योग बनता है।

कुंडली में छठे भाव में राहु एवं बुध की युति सोशल मीडिया के द्वारा किसी मामले को बार बार उठाने पर जेल । कारावास योग का निर्माण करती है।

कुंडली में लग्नेश कमजोर हो, सूर्य, चंद्र पर राहु, केतु का प्रभाव हो एवं मंगल शनि की युति या दृष्टि हो तो जातक को झूठे आरोप या कानूनी परेशानियों के कारण जेल । कारावास जाना पड़ता है।

जेल – कारावास योग के मुख्य ग्रह

राहु– राहु अंत्यत क्रूर एवं मायावी ग्रह है। यह गृह जातक को कामुक, व्यभिचारी, दुराचारी, लोभी, विद्रोही एवं झुठे आरोप आरोप लगाने वाला बनाता है।

शनि– शनि, आयु, जीवन, मृत्यु दुर्भाग्य संकट अनादर, अनैतिक और अधार्मिक व्यवहार, चोरी, क्रूर कार्य, लोभ लालच वाला ग्रह है। शनि दंडाधिकारी भी है।

शनि न्याय और कर्म का ग्रह है । हठे, आठवें भाव में जब यह ग्रह राहु या मंगल से पीड़ित होता है तो जेल। कारावास योग का निर्माण होता है।

मंगल : मंगल उग्र, अग्निवत्वीय व जिद्दी ग्रह है। मंगल प्रधान वाले जातक निरंकुश प्रकृति के होते हैं। अपनी आलोचना व विरोध सहना इनके बस की बात नहीं होती ।जरा से प्रतिवाद होने पर ये उग्र हो जाते है, सारी मर्यादा ये भूल कर हाथापाई पर उत्तर आते है। पर स्त्री आसक्ति, व्यभिचार असत्य भाषण क्रूरता एवं द्वेष इसकी विशेषज्ञता है है। उग्रता, लड़ाई भुगड़ा या हिंसा के कारण जातक अपराध करता है और जेल जाता है

लग्न कुंडली

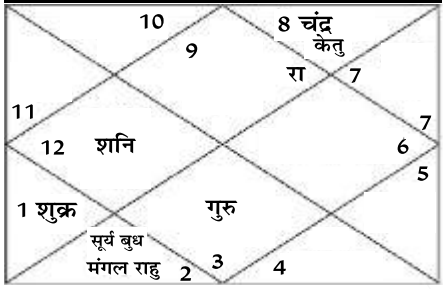

नवांश कुंडली

जेल – कारावास के मुख्य भाव

छठा भाव: इस भाव के कारक ग्रह शनि एवं मंगल है। शत्रु, चिन्ता, रोग, ऋण, बदनामी, हिंसा, चोरी, मुकदमे बाजी छठे भाव के विषय है। इस मुख्य इस भाव का स्वामी जब भी कमजोर या पीड़ित होगा तब जातक का जेल जाने का योग बनेगा।

आठवां भाव : आयु, जीवन – मृत्यु, पराजय, अपयज्ञ , फौजदारी, दरिद्रता, कुनीति, शत्रु ,मानसिक चिंता मृत्यु कारक भाव है। इस भाव का कारक ग्रह शनि है क

दादश भाव: मोक्ष, व्यय, गुप्त ,शत्रु ,क्रोध दु:ख, हानि दंड, गुप्तचरी, चुगुलखोरी, शयन सुख,नाश, हत्या, आत्महत्या , अपमान एवं कारावास का भाव है। इस भाव का कारक ग्रह शनि है।

बन्धन योग: कुंडली के दूसरे, पांचवे नवम एवं बारहवे भाव शनि राहु, केतु से पीड़ित हो तो बंधन योग का निर्माण होता है और बाद में इससे कारावास / जेल योग को संभावना होती है।

कुंडली विश्लेषण

व्ययेश मंगल षष्ठ भाव में,राहु से युत,अष्टमेश चंद्र एवं केतु से दृष्ट। चतुर्थस्थ शनि से दृष्ट

अष्टमेश चंद्र – व्यय भाव में स्थित,केतु से युत,राहु एवं मंगल से दृष्ट

षष्ठ भाव – अष्टमेश चंद्र एवं व्ययस्था केतु से दृष्ट एवं राहु व मंगल से युत। शनि की षष्ठ भाव पर दृष्टि।

द्वितीय भाव – राहु से दृष्ट पीड़ित।

नवम भाव – व्ययेश मंगल से दृष्ट पीड़ित। नवमेश सूर्य अष्टमेश से दृष्ट, मंगल एवं राहु से युत पीड़ित

पंचम भाव– पंचमेश मंगल, राहु से युत, अष्टमेश चंद्र एवं केतु से दृष्ट

द्वादश भाव – चंद्र एवं केतु स्थित चंद्र अष्टमेश मंगल एवं राहु से दृष्ट

सूर्य+राहु – सूर्य ग्रहण योग षष्ठ भाव में

चंद्र+केतु चंद्र ग्रहण योग द्वादश भाव मे

सप्तमेश एवं दशमेश – बुध षष्ठ भाव में विवाह भंग योग एवं राज भंग योग

नवमेश सूर्य षष्ठ भाव में – भाग्य भंग योग

अष्टमेश चंद्र द्वादश भाव में – सरल विपरीत राजयोग

व्ययेश मंगल षष्ठ भाव में विमल विपरीत राजयोग

नवमांश कुंडली – व्ययेश चंद्र पर अष्टमस्थ मंगल की दृष्टि अष्टमेश गुरु षष्ठस्थ,राहु से युत एवं व्ययस्था केतु से दृष्ट।

अष्टमेश गुरु एवं षष्ठस्थ राहु की व्यय भाव एवं व्ययेश चंद्र पर दृष्टि

निष्कर्ष– षष्ठ,अष्टम एवं द्वादश भाव एवं भावेशों पर शनि, राहु एवं मंगल की दृष्टि। युति कारावास योग का निर्माण करते है।

द्वितीय, पंचम, नवम एवं द्वादश भाव । भावेज्ञ राहु, शनि एवं मंगल से पीड़ित होने पर बंधन योग का निर्माण करते हैं।

सूर्य ग्रहण, चंद्र ग्रहण,षष्ठ, अष्टम ,द्वादश भाव में स्थित – कारावास योग की संभावना को बढ़ाते हैं।

–दशमेश बुध षष्ठ भाव मे राजभंग योग के कारण जातक की नौकरी चली गई।

भाग्येश सूर्य षष्ठ भाव में भाग्य भंग योग के कारण जातक को काफी संघर्ष करना पड़ा, तब वह कारावास से बाहर निकल पाया।

जन्म कुंडली, अंक शास्त्र, हस्त रेखा, टैरो कार्ड

बी आर चौधरी
भोपाल

वनम् समाश्रिता येपि निर्ममाम
निष्परिग्रहा अपिते परिपृच्छन्ति
ज्योतिषाम् गति कोविदम्।

जो सब सुखों का त्याग करके वन का आश्रय ले चुका है, वह भी ज्योतिष के माध्यम से अपना भविष्य जानना चाहता है।

यों तो ज्योतिष की कई विधियां है।

जन्म कुंडली, अंक शास्त्र ,हस्त रेखा, टैरो कार्ड, रमल आदि विभिन्न विधायें हैं।

पर सामुद्रिक शास्त्र एक ऐसी विधा है जो सहज सरल सुलभ और प्रमाणिक सत्यता को बताता है।

सामुद्रिक शास्त्र में व्यक्ति विशेष के विषय में जानने के लिए और हानि लाभ के लिए कई विधियां हैं।जैसे अंग शास्त्र ,स्वप्न ,स्वर, लक्षण, भूमि, व्यंजना, उत्पात।

नास्ति हस्तात् परा विद्या त्रैलोक्ये सचराचरे।

तीनों लोगों के इस चराचर जगत में एक व्यक्ति विशेष के विषय में जानने के लिए हस्त रेखा से बढ़कर दूसरी कोई विद्या नहीं है।

आये नहीं थे स्वप्न में भी, जो किसी के ध्यान में।

वे प्रश्न पहले हल हुए थे,इस हिंदुस्तान में।

आकार देख प्रकार थे, हम जान जाते आप ही।

वे शास्त्र थे सामुद्रिक सरीखे हम बनाते आप ही।

हथेली की आकृति रेखाओं की बनावट पर्वतों आदि से हमें व्यक्ति विशेष के विषय में बहुत रोचक और सटीक जानकारियां मिलती है।

अष्टक वर्ग के आधार पर जातक की जन्मकुण्डली का विवेचन

ज्योतिषाचार्य एच एन राव
भोपाल (म. प्र)

फलित ज्योतिष के अन्तर्गत कई प्रकार की विधाएं है जिसमें अष्टक वर्ग से जन्म कुण्डली के आधार पर फलित विवेचन भी एक है

सामान्यत: जातक के जन्मांग को चार खंडों में बांटा गया है

इन चारों खंडों के नाम है:

1..बंधु खंड

2..सेवक खंड

3..पोषक खंड

4..घातक खंड

इस वर्गीकरण का आधार कुंडली के चारों त्रिकोणों (धर्म,अर्थ,काम,मोक्ष) में सर्वाष्टक वर्ग के प्राप्त अंक हैं

बंधु खंड में धर्म त्रिकोण के तीनों (1,5,9) भाव आते हैं, यदि इन भावों में 84 या इससे अधिक शुभ अंक प्राप्त हो तो ऐसे जातक बंधु खंड के अंतर्गत आते हैं।

बंधु खंड में आने वाले जातक परमार्थी यानी दूसरों के सहायता के लिए सदैव तत्पर/ परोपकारी होते हैं।

सेवक खंड में अर्थ त्रिकोण के तीनों (2,6,10) भाव आते हैं।यदि इन भावों में 84 या इससे अधिक शुभ अंक प्राप्त हो तो ऐसे जातक सेवक खंड के अंतर्गत आते हैं।

सेवक खंड में आने वाले जातक यदि उच्च पद पर भी पहुंच जाए तो भी अपने अधिकारों का सार्थक उपयोग नही कर पाते या अपने अधिकारों का उपयोग करने में हिचकिचाते हैं, सदा दुविधा/ द्वंद/असमंज में रहते हैं।

पोषक खंड जब काम त्रिकोण के तीनों (3,7,11)भाव आते हैं।यदि इन भावों में 84 या इससे अधिक शुभ अंक प्राप्त हो तो ऐसे जातक पोषक खंड के अंतर्गत आते हैं।

पोषक खंड में आने वाले जातक उच्च पद प्राप्त करते हैं,यदि उच्च पद पर नहीं भी पहुंचे तो भी उनकी पदस्थापना ऐसे उच्च अधिकारी के पास होती हैं जहां अन्य उच्च अधिकारी भी अनुमति लेने आते हैं। जैसे मंत्री/चेयरमैंन/ एम डी इत्यादि के निजी सहायक।

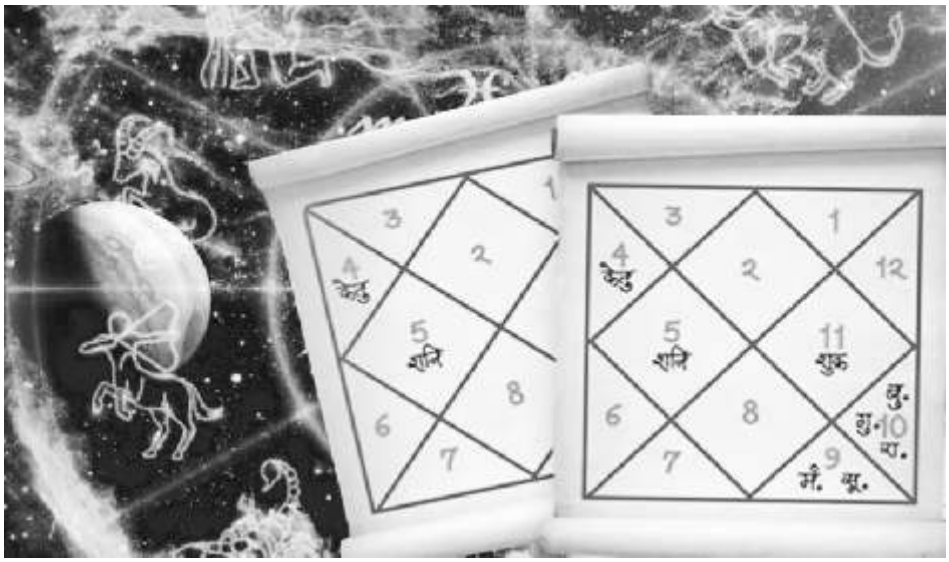

घातक खंड जब मोक्ष त्रिकोण के तीनों (4,8,12) भाव आते हैं।यदि इन भावों में 84 या इससे अधिक शुभ अंक प्राप्त हो तो ऐसे जातक घातक खंड के अंतर्गत आते हैं।

घातक खंड में आने वाले जातक का जीवन संघर्षमय रहता हैं। जातक को आसानी से कोई भी चीज प्राप्त नहीं होती,यदि कुछ मिलता भी हैं, तो उसकी कीमत उन्हें किसी ना किसी रूप में चुकानी पड़ती हैं। जैसे पदोन्नति के बाद कोई बीमारी या कोई अन्य परेशानी।

अष्टकवर्ग से दशा अन्तर दशा का विचार कैसे करें:-

जिस ग्रह की दशा/अन्तर दशा का विचार करना हो उस ग्रह के भिन्नाष्टक वर्ग में केन्द्र एवं त्रिकोण के छ: भावो को प्राप्त अंको का योग, यदि ग्रह को सर्वाष्टक वर्ग में प्राप्त होने वाले कुल अंकों के योग के 50% से जितना अधिक होगा वह दशा उतनी अच्छी रहेगी।

जैसे: - बृहस्पतिदेव को सर्वाष्टक वर्ग में कुल 56 अंक मिलते है, यदि केंद्र + त्रिकोण = >28 से जितने अधिक अंक मिलें होगे बृहस्पतिदेव दशा/अन्तर दशा उतनी अच्छी जायेगी

विभिन्न ग्रहों को प्राप्त अधिकतम अंक

बृहस्पतिदेव=56,>28

बुध = 54, >27

शुक्र = 52, >26

चन्द्रमा =49,>25

सूर्य =48,>24

मंगल = 39,>20

शनिदेव =39, >20

वास्तु शास्त्र में पंच तत्वों के संतुलन का महत्व

राजेन्द्र शर्मा ज्योतिषाचार्य,
वास्तु विशेषज्ञ भोपाल

वसन्ति प्राणिनो यत्र

प्रत्येक प्राणी जहां निवास करता है उसके लिए वही वास्तु है जब किसी अनियोजित भूखंड को सुनियोजित स्वरूप प्रदान कर उसे निवास योग्य बनाया जाता है उसे वास्तु कहा जाता है प्राकृतिक नियमों से आबद्ध होकर अपने सुख दुख का अनुमान कर प्राणी नित नए भय मुक्त वातावरण में सुरक्षित स्थान की खोज करता है जिसकी पूर्ति वास्तु शास्त्र ही करता है वास्तु शास्त्र अथर्ववेद के उपवेद स्थापत्य वेद से निकला है जिसमें तीन बातों का वर्णन है

वास्तु,शिल्प, चित्र

वास्तु के अनेक भेद हैं

1.आवासीय वास्तु

2.व्यवसायिक वास्तु

3.धार्मिक वास्तु

आवासीय वास्तु

इसके अंतर्गत सभी प्रकार के भवन आते हैं

व्यावसायिक वास्तु

इसके अंतर्गत तीन प्रकार आते हैं

1.व्यापारिक वास्तु

2.औद्योगिक वास्तु

3.सार्वजनिक महत्व के वास्तु

दुकान,शोरूम ऑफिस,होटल सब व्यापारिक वास्तु अंतर्गत आते हैं

घरेलू उद्योग,लघु उद्योग, भारी कल कारखाने यह सब औद्योगिक वास्तु अंतर्गत आते हैं

मंदिर, मठ, आश्रम, धर्मशाला, जलाशय, धार्मिक संस्थान सब धार्मिक वास्तु अंतर्गत आते हैं

शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम – अर्थात इस चराचर जगत में धर्म साधन का मूल शरीर है एवं शरीर की सुरक्षा आवास स्थान से होती है।

हमारा शरीर पंच तत्व अग्नि, पृथ्वी, वायु, जल, आकाश तत्व से बना है यही तत्व ब्रह्मांड में भी मौजूद हैं।

इसलिए कहा गया है 'यत पिंडे तत ब्रह्माण्डे 'इसलिए इन पंच तत्वों की वास्तु शास्त्र में प्रधानता है पूरा वास्तुशास्त्र इसी अवधारणा पर कार्य करता है यह पंच तत्वों को संतुलित रखने की शक्ति रखता है जिससे जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह होता है और नकारात्मक ऊर्जा का अंत,आकाश का गुण शब्द,वायु का शब्द एवं स्पर्श,अग्नि का गुण शब्द,स्पर्श एवं रूप ,जल तत्व का शब्द,स्पर्श,रूप एवं रस तथा पृथ्वी तत्व का शब्द, स्पर्श, रूप,रस,गंध होता है अग्नि तत्व का स्थान आग्नेय कोण में पूर्व दक्षिण दिशा के मध्य में,पृथ्वी तत्व का स्थान नैऋत्य कोण में पश्चिम दक्षिण दिशा के मध्य में,वायु तत्व का स्थान वायव्य कोण में उत्तर पश्चिम दिशा के मध्य में तथा जल तत्व का स्थान ईशान कोण में पूर्व उत्तर दिशा के मध्य में तथा आकाश तत्व बाहर अंदर जो भी खाली जगह है उसमें विद्यमान होता है इसलिए संबंधित तत्व से जुड़ी वस्तु को संबंधित दिशा में ही स्थापित करना चाहिए ,आकाश तत्व हमारे शरीर में मस्तिष्क है और मस्तिष्क शरीर का सबसे महत्वपूर्ण अंग है मुख्य धुरी है इससे ही पूरा जीवन संचालित होता है इसके अस्तित्व से ही हमारी उन्नति अवनति उपलब्धि जुड़ी है वायु तत्व हमारे शरीर में श्वासों के रूप में विद्यमान है आकाश से ही वायु बनी है स्पर्श तन्मात्रा है हमारे शरीर में प्राण, अपान, व्यान, उदान,समान पांच प्रकार की वायु होती है जिससे शरीर का संचालन होता है जब तक शरीर में वायु है तभी तक

मनुष्य जिंदा रहता है अन्यथा मृत्यु को प्राप्त होता है शरीर के हृदय की धड़कन,गैस निकलना,डकार वायु तत्व की शरीर में उपस्थिति को अभिप्रमाणित करता है इसलिए वायु तत्व की महत्ता सबसे अधिक है वास्तु से निर्माण में इसका विशेष ध्यान रखा जाता है

अग्नि तत्व पाचन तंत्र की कोशिकाओं में जठराग्नि के रूप में शरीर में मौजूद है अग्नि तत्व हमें सूर्य से प्राप्त होता है सूर्य से निकलने वाली पराबैंगनी किरणें शीतल रहती हैं इन किरणों में वातावरण में मौजूद विषाणुओं को नष्ट करने की एक विशेष प्रकार की क्षमता रहती है दूसरी वर्णक्रम प्रकाश में इंद्र धनुष के सात रंगों की रश्मियां होती है बैंगनी, नीला, आसमानी, पीला,नारंगी,लाल रंग के अनुसार पृथक पृथक प्रभाव भी इनका शरीर पर पड़ता है बैंगनी नीला आसमानी शीतलता देता है तथा लाल उष्णता को बढ़ाता है तीसरी रक्त आभा किरणें सर्वाधिक ऊष्मा समेटे रहती हैं प्रात: कालीन किरणें ऊर्जा स्फूर्ति प्रदान कर तन को निरोग बनाती हैं इससे सकारात्मक ऊर्जा भी मिलती है इनसे विटामिन डी मिलता है जो शरीर को स्वस्थ बनाकर रखता है इसलिए सूर्य को ज्योतिष में आत्मा का कारक कहा गया है ऊर्जा का अजेय स्त्रोत है रोग निरोग की स्थिति का आकलन कुंडली में सूर्य की कहां कैसी उपस्थिति है उसको देखकर ही किया जाता है।

जल तत्व हमारे शरीर में कोशिकाओं के अंदर रक्त के रूप में विद्यमान है जो हमारे शरीर को शक्ति सम्पन्न क्रियाशील बनाता है यदि रक्त का संचार यदि थोड़े समय भी अवरुद्ध हो जाए तो व्यक्ति बीमार पड़ जाता है रक्त का पूरे शरीर में संचार शरीर को जीवंत रखता है।

पृथ्वी तत्व के रूप में हड्डी मांस को देखा जाता है जो शरीर को स्थिरता प्रदान करता है तथा इससे ही धैर्य और जीवन में परिपक्वता आती है जो एक सफल व्यक्तित्व का निर्माण करती है यह तत्व करियर में बेहतर नतीजे पाने, रिश्तो में सुधार लाने में भी अति लाभदायक है।

जो ब्रह्मांड में है वही हमारे शरीर में भी है ब्रह्मांड में आकाश है उसी के अंदर पृथ्वी है अत: आकाश हर जगह विद्यमान है आकाश से वायु,वायु से जल जल से पृथ्वी है।

वास्तु शास्त्र अनुसार भवन निर्माण करने से सकारात्मक ऊर्जा में अभिवृद्धि होती है यह हमें बेहतर ढंग से जीने में हमारी मदद करता है और जीवन सफल बनाता है वास्तु शास्त्र की अवधारणाएं धर्म संगत है यदि भवन में से धर्म शास्त्र को निकाल दिया जाए तो भवन केवल सीमेंट; रेत; लोहे के अतिरिक्त कुछ नहीं और यदि यज्ञोपवीत को धर्म से अलग कर दें तो वह सूत के धागे के अतिरिक्त कुछ भी नहीं हम जिस भू खंड पर भी भवन बनाते हैं वह भूमि अतीत में कैसी रही होगी यह हम नहीं जानते इसलिए उसे शुद्ध करते हैं और यदि निर्माण में दिशाओं का सही ध्यान रखकर संरचनाओं का निर्माण नहीं किया तो फिर वास्तु शांति आवश्यक है इसके जरिए सभी दिशाओं के देवताओं का आवाहन कर पंच तत्वों के माध्यम से ब्रह्मांड से मिलने वाली ऊर्जा को अपने लिए सकारात्मक बनाया जाता है जो हमारे जीवन को सूखी समृद्ध वैभवशाली बनाती है।

वास्तु शास्त्र अंतर्गत भवनों को इन्हीं तत्वों को ध्यान में रखकर डिजाइन किया जाता है सूर्य पूर्व से निकलता है प्रात: की किरणें अत्यंत लाभदाई होती हैं सूर्य का प्रकाश सभी कमरों में पहुंचे इसके लिए पूर्व दिशा में खिड़की रोशनदान दरवाजे आदि रखने का प्रावधान रखा जाता है तथा मध्य आंगन आदि में खुला रखा जाता है जो आकाश तत्व का प्रतिनिधित्व करता है वायु सभी कमरों को मिले इसलिए क्रॉस वेंटिलेशन का ध्यान रखा जाता है क्योंकि वायु बिना जीवन संभव नहीं है जल तत्व से संबंधित स्थान को उत्तर दिशा में प्रावधानित किया जाता है पृथ्वी तत्व से जुड़ी वस्तुओं का स्थान नैऋत्य कोण में निश्चित है देवालय का स्थान ईशान कोण में,भोजन बनाने का स्थान, बीजली का मीटर,अग्नि संबंधी आग्नेय कोण में,पढ़ने का स्थान,शौचालय कभी भी ईशान,आग्नेय,नैऋत्य, वायव्य, मध्य में नहीं बनाना चाहिए इसे नैऋत्य पश्चिम के मध्य,दक्षिण नैऋत्य के मध्य बना सकते हैं शयन स्थान दक्षिण में करना उचित है यदि उचित स्थान पर निर्माण नहीं किया गया तो हमें उस घर में मानसिक शांति नहीं मिल सकती।

पंच तत्वों को संतुलित रखकर ही हम भवन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार कर सुखी निरोगी रह सकते हैं पंच तत्वों में ही हमारी निरोगता के कारण छिपे हैं तथा इसी में दीर्घायु का कारण,जितना इस ब्रह्मांड में इन तत्वों का प्रतिशत है उतना ही जब शरीर में रहता है तभी व्यक्ति निरोगी एवं लंबी आयु जीता है।

भूमि की दिशा स्थान का चयन अपनी राशि के अनुसार करना उचित रहता है।

इसी प्रकार भूमि का ढलान की उत्तर और पूर्व की ओर है तो इसका बहुत बड़ा महत्व है यदि ढलान उत्तर अथवा पूर्व की ओर होना ऐश्वर्य ;धन संपदा और पारिवारिक सुख में वृद्धि करता है तथा यदि अन्य दिशा में ढलान हो तो वह दिशा अनुसार अशुभ फल देता है दक्षिण दिशा में ढलान मृत्यतुल्य कष्ट देता है इसी प्रकार भवन निर्माण के पूर्व भूमि की शुद्धि भी पंच गव्य से की जानी चाहिए एक दिन गायों को भूखंड पर रखकर उनकी सेवा करना आहार खिला ने से भवन की भूमि को शुभ माना जाता है उचित मास तिथि नक्षत्र मुहूर्त देखकर ग्रह शुभारंभ एवं प्रवेश करना चाहिए।

इसी प्रकार मुख्य द्वार का दिशा के अनुसार स्थान निर्धारित कर बनाना अत्यंत महत्वपूर्ण होता है द्वार का वेध भी व्यक्ति के जीवन में मुश्किलें एवं बाधाएं लाता है पंच तत्वों का भवन निर्माण में ध्यान रख कर वास्तु शास्त्र के निर्धारित सिद्धान्तों के अनुसार हम सुखी ;निरोगी और दीर्घायु जीवन प्राप्त कर सकते हैं।

डॉ. निशा शर्मा

केपी ज्योतिष में ग्रहों का कारकत्व और कस्पल इंटरलिंकः फलादेश की यथार्थ कुंजी

केपी (कृष्णमूर्ति पद्धति) ज्योतिष अनेक आधुनिक फलादेश पद्धतियों में एक विशिष्ट स्थान रखती है। इस प्रणाली का मूल आधार भावों के कस्प (कस्प) के सब-लॉर्ड की सिग्निफिकेशन है। जीवन में घटने वाली समस्त छोटी-बड़ी, सुखद-दुखद घटनाएँ तथा सभी प्रकार की उपलब्धियाँ, विपत्तियाँ, लाभ-हानि कुंडली के बारह भावों में ही समाहित होती हैं। केपी सिद्धांत के अनुसार किसी भी घटना के घटित होने या न होने का निर्णय, भाव के सब-लॉर्ड के पोटेंशियल पर निर्भर करता है।

केपी सिस्टम में प्रथम भाव अर्थात प्रथम कस्प उस बिंदु से प्रारंभ होता है जिस क्षण किसी व्यक्ति विशेष का जन्म हुआ है। इस प्रारंभिक बिंदु पर जो राशि होती है, जो नक्षत्र होता है और नक्षत्र का विंशोत्तरी दशा के अनुपात में किया गया नवाँ भाग, जिसे लग्न भाव का सब-लॉर्ड कहा जाता है, ये तीनों मिलकर लग्न की कहानी कहते हैं। यही सत्य कुंडली के सभी भावों पर लागू होता है। अत: किसी भी भाव के बल को समझने के लिए उसके राशि स्वामी, नक्षत्र स्वामी और सब-लॉर्ड को समझना अनिवार्य होता है।

भाव का सब-लॉर्ड कोई भी ग्रह हो, वह अपने स्वभाव के अनुसार अपने नक्षत्र स्वामी के माध्यम से उस भाव के सकारात्मक या नकारात्मक फल प्रदान करने की बात करता है। परंपरागत रूप से माने जाने वाले 'भाव-कारक ग्रहों' की भूमिका यहाँ सैद्धान्तिक रूप से नगण्य मानी जाती है, क्योंकि कस्प का सब-लॉर्ड बना प्रत्येक ग्रह अपने नक्षत्र लॉर्ड और सब-लॉर्ड के माध्यम से परिणाम देने में सक्षम होता है।

काल पुरुष की कुंडली में लग्न का जो संबंध सभी भावों से है और भावों का जो संबंध लग्न से है, वही लग्न का पोटेंशियल अर्थात उसकी क्षमता निर्धारित करता है। अर्थात लग्न भाव का अन्य भावों के साथ इंटरलिंकिंग या आपसी संबंध जितना अधिक होगा, कुंडली में उतना ही अधिक पोटेंशियल होगा। उदाहरण स्वरूप, यदि सिंह लग्न की कुंडली में लग्न पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र अर्थात शुक्र के नक्षत्र पर प्रारंभ हो, तो पंचम एवं नवम भाव भी शुक्र के नक्षत्र पर होंगे। सिंह लग्न में तृतीय और दशम भाव शुक्र की राशियों के होते हैं और यदि शुक्र ग्यारहवें भाव में स्थित हो, तो लग्न भाव ने शुक्र के माध्यम से कम से कम इन छह भावों से संबंध स्थापित कर लिया और इसके अलावा शुक्र अन्य किसी भाव का सब-लॉर्ड भी बनता है, तो उन सभी भावों की लिंकेज भी लग्न भाव से बन गई। यही कस्पल इंटरलिंक है।

किसी भी भाव का अध्ययन करने के लिए उसके सब-लॉर्ड को 'ओरिजिन प्लेनेट' के रूप में लिया जाता है। इसी उदाहरण में यदि शुक्र सप्तम भाव का सब-लॉर्ड बनता है, तो शुक्र की स्क्रिप्ट या कथानक पढ़ते समय उसके नक्षत्र स्वामी और उसके सब-लॉर्ड का अध्ययन किया जाता है कि वे किन-किन भावों के स्वामी हैं, कहाँ स्थित हैं और किस नक्षत्र में बैठे हैं। साथ ही यह भी देखा जाता है कि वह नक्षत्र स्वामी किन भावों का लॉर्ड है और कहाँ स्थित है। इस प्रक्रिया में कम से कम पाँच भाव स्वत: ही आपस में कनेक्ट हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त यह भी विचार किया जाता है कि शुक्र और किन-किन कस्पों का सब-लॉर्ड है। इस पद्धति में कस्प के राशि स्वामी से अधिक उसका नक्षत्र लॉर्ड और नक्षत्र लॉर्ड से भी अधिक भाव का सब-लॉर्ड प्रभावशाली माना जाता है।

अभी इस उदाहरण में हमने देखा था कि शुक्र का नक्षत्र 1-5-9 कस्प में और 3 तथा 10 का स्वामी 11 में बैठा है। इन सभी को हम सप्तम भाव से गणना करेंगे, तो पाएँगे कि इसका संबंध अधिकतर विषम एवं परिवृद्धि के भावों से बन रहा है। इन्हें हम 'मैक्सिमम इम्प्रूविंग हाउसेस', यानी कि ऑड नंबर हाउसेस कहते हैं, जो प्रथम दृष्टया वैवाहिक जीवन को अच्छा होना दर्शाते हैं।

अब शादी देर से होगी, इंटर कास्ट होगी, लव मैरिज होगी या अरेंज्ड मैरिज होगी; पति या पत्नी कैसे होंगे, इनका परिवार कैसा होगा—इस सब के बारे में शुक्र के नक्षत्र स्वामी के सिग्निफिकेटर या विभिन्न भावों से संबंध और शुक्र के सब-लॉर्ड के सिग्निफिकेशंस बताएँगे। अगर किसी कस्प का सब-लॉर्ड अपने ही स्तर पर अच्छे भावों से जुड़ता है, तो अंतिम परिणाम अच्छा ही होता है। नक्षत्र लॉर्ड के सिग्निफिकेशन को देखने के लिए वह किन भावों का स्वामी है और कहाँ बैठा है, यह तो देखते ही हैं, लेकिन साथ में यह भी देखते हैं कि वह किन भावों का नक्षत्र स्वामी है और किन भावों का सब-लॉर्ड है, क्योंकि यह भी परिणाम को प्रभावित करता है।

अभी के उदाहरण में शुक्र को सप्तम भाव का सब-लॉर्ड लिया था। यदि इसका नक्षत्र स्वामी सातवें से चतुर्थ, अष्टम अथवा द्वादश भावों पर चला जाए, तो वैवाहिक जीवन में बाधा उत्पन्न होने की संभावना बनती है। लेकिन यदि पुन: शुक्र का सब-लॉर्ड परिवृद्धि भावों से संबंध बना ले, तो विवाह में कुछ उथल-पुथल के बाद सामंजस्य स्थापित हो जाता है और शेष वैवाहिक जीवन अच्छा चलता है।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि ऑड हाउसेज़ या विषम भावों को परिवृद्धि एवं प्रगतिसूचक भाव क्यों माना जाता है। पाराशरी ज्योतिष में भावात्-भावम् का सिद्धांत किसी भी भाव के बल को प्रदर्शित करता है। यही विषम नंबर्स अर्थात इम्प्रूविंग हाउसेस हैं—प्रथम से प्रथम (एक), द्वितीय से द्वितीय (तीसरा), तृतीय से तृतीय (पाँचवाँ), चतुर्थ से चतुर्थ (सप्तम), पंचम से पंचम (नवम), षष्ठ से षष्ठ (एकादश), सप्तम से सप्तम (लग्न), अष्टम से अष्टम (तृतीय), नवम से नवम (पंचम), दशम से दशम (सप्तम), एकादश से एकादश (नवम), द्वादश से द्वादश (एकादश भाव)। यहाँ सभी विषम भाव आते हैं, इसलिए इन्हें इम्प्रूविंग हाउसेस या अत्यंत शुभता लिए हुए भाव कहा जाता है, क्योंकि इनमें भावात्-भावम् का मल्टीप्लिकेशन इफेक्ट होता है, जो परिणामों में गुणात्मक वृद्धि दर्शाता है। हर भाव का अन्य भावों से संबंध ही कुंडली के पोटेंशियल को दर्शाता है।

यद्यपि भाव-सिग्निफिकेशन केपी ज्योतिष की संरचना का केंद्रीय तत्व है, तथापि व्यापक अभ्यास, केस-स्टडीज़ और दीर्घकालीन अनुभव से यह स्पष्ट रूप से देखा गया है कि घटना की वास्तविक अभिव्यक्ति अर्थात इवेंट डिलीवरी में 'ग्रहों का कारकत्व' निर्णायक भूमिका निभाता है। केपी ज्योतिष में यह स्वीकार किया जाता है कि कस्प का सब-लॉर्ड घटना का प्रॉमिस देता है, जबकि सिग्निफिकेटर ग्रह उस घटना को डिलीवर करता है। भाव का सब-लॉर्ड अपने नक्षत्र स्वामी के माध्यम से यह स्पष्ट करता है कि घटना संभव

है या नहीं, जबकि सब-लॉर्ड का सब-लॉर्ड ग्रह उस घटना के घटित होने का तरीका और गुणवत्ता दर्शाता है। दशा में सक्रिय सिग्निफिकेटर ग्रह, उस घटना के कारक ग्रह तथा उनका गोचर, घटना को वास्तविक रूप प्रदान करता है। हर ग्रह अपने-अपने स्वभाव और गुणों के अनुसार कुंडली के क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है।

उदाहरण स्वरूप, परीक्षा, दस्तावेज़ या इंटरव्यू से संबंधित मामलों में तृतीय भाव का सब-लॉर्ड यह दर्शाता है कि प्रयास और परीक्षा देने का योग है या नहीं, किंतु वास्तविक रूप से परीक्षा या इंटरव्यू प्राय: तभी होता है जब अन्य सिग्निफिकेटर ग्रहों के साथ बुध ग्रह भी दशा या गोचर में सक्रिय होता है। बुध को बुद्धि, लेखन, तर्क, संवाद, विश्लेषण, दस्तावेज़ तथा मौखिक-लिखित परीक्षा का प्रमुख कारक माना गया है। यदि तृतीय भाव का सब-लॉर्ड अनुकूल हो, किंतु दशा में बुध का समर्थन न हो, तो परिणाम में विलंब या आंशिक सफलता देखी जाती है।

इसी प्रकार संपत्ति से संबंधित प्रश्नों में चतुर्थ भाव का सब-लॉर्ड संपत्ति प्राप्ति का संकेत देता है, किंतु संपत्ति का क्रय, पंजीकरण या कब्जा मंगल, शनि अथवा शुक्र की सक्रिय दशा में ही होता है। संपत्ति संबंधी प्रश्नों में चतुर्थ भाव (फोर्थ हाउस) का सब-लॉर्ड यह दर्शाता है कि संपत्ति-प्राप्ति का योग है या नहीं तथा भूमि या भवन की प्रकृति कैसी होगी इत्यादि। परंतु संपत्ति का वास्तविक क्रय, पंजीकरण अथवा कब्जा प्राय: तभी घटित होता है जब दशा में 'भूमि एवं भवन के कारक ग्रह'—मंगल, शनि अथवा शुक्र—में से कोई ग्रह सक्रिय हो तथा गोचर में वे संबंधित सिग्निफिकेटर ग्रहों के नक्षत्र एवं सब-लॉर्ड से संबंध स्थापित करें, अन्यथा संपत्ति क्रय की घटना स्थगित रहती है। ज्ञात है कि मंगल भूमि तथा क्रय-क्रियाओं का, शनि स्थायित्व, संरचना एवं दीर्घकालीन संपत्ति का तथा शुक्र सुविधाओं, भौतिक सुखों एवं आवास का प्रमुख कारक ग्रह माना जाता है।

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि केपी ज्योतिष में भाव-सिग्निफिकेशन घटना की संभाव्यता को दर्शाता है, ग्रहों का कारकत्व और दशा-गोचर उस घटना को मूर्त रूप प्रदान करते हैं तथा कस्पल इंटरलिंक घटना की गुणवत्ता और स्थायित्व निर्धारित करता है। इन तीनों तत्वों का समन्वित और संतुलित अध्ययन ही केपी ज्योतिष में सटीक, समयबद्ध और व्यावहारिक फलादेश की आधारशिला है।

भविष्यवाणी के लिए टैरो कार्ड का उपयोग

एस्ट्रो पंडित पूजा नितेश दुबे ' मोहिनी'

18 वीं शताब्दी के उत्तराध् में टैरो कार्ड का उपयोग भविष्यवाणी के लिए किया जाने लगा. 1770 की दशक में स्वयं को कार्ड रीडिंग का उस्ताद घोषित करने वाले एटिला ने विशेष रूप से भविष्य बताने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले कार्डों का पहला डेक बनाया टेरों वर्तमान ऊर्जा को दर्शाता है टेरो निर्णय लेता नहीं है निर्णय आप लेते हैं ईस्ट को साधे प्रार्थना करें प्रकाश की शक्तियां भीतर और बाहर पहले और इन पवित्र कार्डों को सत्य की शक्ति से आशीर्वाद दें इस आशीर्वाद पर कुछ क्षण ध्यान करें टैरो कार्ड अवचेतन आंतरिक ज्ञान को उजागर करने में मदद करते हैं छुपे हुए उद्देश्यों अवसरों और संभावनाओं को चित्रित कर सकते हैं टैरो कार्ड भाग्य कथन उपकरण के रूप में जाने जाते हैं टैरो कार्ड रीडिंग वाकई कारगर होती है और सही तरीके से करने पर टैरो कार्ड मार्गदर्शन और सहायता का एक बड़ा स्रोत बन सकते हैं यह रचनात्मक सोच की विभिन्न प्रक्रियाओं को समझने का भी एक शानदार तरीका हो सकता है जिसे ऐसे अनोखे जवाब मिलते हैं जो आपको ऐसे विचारों की और ले जाते हैं जिनके बारे में आपने पहले कभी सोचा भी नहीं होगा कुछ लोग टैरो कार्ड को अशुभ मानते हैं काला जादू मानते हैं अंधकार से जुड़ा हुआ मानते हैं यह सच नहीं है अगर आप ऐसे सोच रखेंगे तो यह आपको नकारात्मक प्रभाव ही देगा यहां पर 78 कार्ड होते हैं जिसमें 22 बड़े कार्ड और 56 छोटे कार्ड होते हैं 22 बड़े कार्ड हमारी जिंदगी के बड़े-बड़े अवसरो पर आधारित होते हैं 56 छोटे कार्ड हमारी रोजमर्रा की जिंदगी को बताते हैं बड़े आयोजन जैसे अध्यात्म आयोजन सम्मेलन शादी विवाह इत्यादि छोटे कार्ड तत्वों पर आधारित होते हैं जैसे जल तत्व अग्नि तत्व वायु तत्व और आकाश तत्व यह सभी चिन्ह निर्णय लेने के लिए उपयोगी होते हैं टैरो कार्ड एक सिंबॉलिक सिस्टम है यह हमेशा सबकॉन्शियस माइंड से जुड़ता है जिसमें आधारित चिन्ह जैसे वॉंड कप स्वोर्ड प्रैनटिकल इत्यादि उपस्थित होते हैं इसमें अलग-अलग 10-10 सुट्स होते हैं इनमें चार कोर्ट कार्ड होते हैं भविष्य की एक निश्चित भविष्यवाणी करने के बजाय आधुनिक टेरो आपको अपनी वर्तमान आजीवन स्थिति को समझने और व्यक्तिगत विकास और आत्मनिरीक्षण के लिए कार्डों का उपयोग करके अपनी इच्छा अनुसार भविष्य बनाने के लिए सशक्त विकल्प चुनने में मदद करता है यहां पर सभी अलग-अलग शक्तिशाली कार्ड होते हैं जैसे इसके पास संभावनाएं नई शुरुआत यात्रा का आरंभ असीमित स्वतंत्रता और सभी कुछ होता है जिसमें उसकी जोखिम भी दिखाई देता है भोलापन भी दिखाई देता है और कोई बंधन नहीं होता है नई शुरुआत भी मिलती है कार्ड अचानक बदलाव का कार्ड होता है टैरो कार्ड का प्रतीकात्मक अर्थ और घातो से उबरने की प्रक्रिया भी होती है उपचार प्रक्रिया अक्सर उन कार्डों की पहचान करने से शुरू होती है जो व्यक्ति को उसके आंतरिक परिदृश्य में ले जाते हैं

टैरो कार्ड के द्वारा आप अपने रिश्तों के बारे में सवाल कर सकते हैं आप धन संपत्ति जमीन जायदाद अपनी संतान उसके करियर पढ़ाई लिखाई नौकरी सभी से संबंधित इलाज स्वास्थ्य से संबंधित क्वेश्चन कर सकते हैं और उनका बखूबी आपको फलित मिलता है टैरो कार्ड आपको सहायक होते हैं आपकी वर्तमान स्थितियों को सुधारने में भविष्य की स्थितियों को सुधारने में भूतकाल में हुई घटनाओं को सुधारने में टैरो कार्ड की हेल्प से टैरो कार्ड की सहायता से आप अपने भविष्य को सकारात्मकता की और ले जा सकते हैं और नकारात्मकता को दूर कर सकते हैं टैरो कार्ड एक बहुत ही उपयोगी विधा है जो भविष्यफल को बताता है और हमें सहायता करता है टैरो कार्ड सिर्फ भविष्य बताने का ही नहीं आत्म चिंतन का भी एक अच्छा उपकरण है जिसकी सहायता से हम काफी चीजों को ठीक कर सकते हैं और टैरो कार्ड एनर्जी के साथ-साथ ग्रहो और नंबर्स के साथ मिलकर उनकी ऊर्जाओं के सहयोग से आपको फलित देता है

जय श्री कृष्णा

जन्म लग्न के अनुसार योगकारक, सम एवं मारक ग्रह

रमेश कुमार खरे, भोपाल

योग कारक ग्रह

ज्योतिष में योग कारक ग्रह, वह ग्रह होता है जो एक ही समय में किसी लग्न के लिए केंद्र (1,4,7,10) और त्रिकोण (5,9) भावों का स्वामी होता है. यह ग्रह कितना शुभ फल देगा, यह उसकी स्थिति (उच्च राशि, स्व राशि, मित्र राशि में होने) और अन्य ग्रहों के प्रभाव पर निर्भर करता है.ऐसा ग्रह महादशा, अंतर्दशा एवं गोचर के समय अत्यंत शुभ फल देता है और जातक के भाग्य धन और सफलता में वृद्धि करता है

सम या तटस्थ ग्रह

यह ग्रह शुभ भावों केंद्र (1,4,7,10) या त्रिकोण (5,9) का स्वामी तो होता है, किंतु लग्नेश का मित्र नहीं होता और यह ग्रह अपनी स्थिति (शुभ/ अशुभ) के अनुसार यानी अच्छे भाव में हो तो अच्छा और बुरे भाव में हो तो बुरा फल देता है.जब कोई तटस्थ ग्रह किसी शुभ ग्रह के साथ होता है,तो वह उस भाव और उस भाव के फल को शुभ बना देता है.यदि वह शत्रु ग्रह के साथ हो तो परिणाम नकारात्मक हो सकता है.

मारक ग्रह

जन्म कुंडली में, मुख्य रूप से एक ही समय में दूसरे और सातवें भाव के स्वामी मारक ग्रह कहलाते हैं.महर्षि पाराशर ने द्वितीय एवं सप्तम भाव को मारक स्थान की संज्ञा दी है.यदि कोई ग्रह केवल द्वितीय या सप्तम का स्वामी है ,तो भी वह उस कुंडली के लिए मारक माना जाता है. ये भाव क्रमशः आयु भाव तृतीय (अष्टम से अष्टम)एवं अष्टम से द्वादश होने के कारण मारक भाव माने गए हैं. तुलनात्मक रूप से सप्तमेश अधिक शक्तिशाली मारक माना जाता है. यदि ऐसा ग्रह बाधकेश भी है, तो अधिक खराब फल देता है .अशुभ स्थिति में 3,6,8,11एवं 12 भावों के स्वामी भी मारक तुल्य फल दे सकते हैं. मारक ग्रह अपनी दशा –भुक्ति में या गोचर में गंभीर रोग, दुर्घटना या मृत्यु तुल्य कष्ट दे सकता है .

उपरोक्त तीनों प्रकार के ग्रहों की श्रेणियां जन्म लग्न के अनुसार बदलती रहती हैं. कुंडली के सटीक विश्लेषण के लिए ग्रहों की स्थिति, युति, दृष्टि और उनके बलाबल का विचार करना आवश्यक है.

प्रत्येक लग्न के अनुसार योग कारक सम एवं मारक ग्रहों का विवरण निम्नानुसार है :-

1.मेष लग्न

योगकारक ग्रहः- कोई नहीं. किंतु पंचमेश सूर्य एवं चतुर्थेश चंद्र का संबंध योगकारक है.लग्नेश मंगल एवं नवमेश गुरु अन्य शुभ फलदायी ग्रह हैं.

सम ग्रहः- शनि (दशमेश एवं एकादशेश).

मारक ग्रहः- शुक्र द्वितीयेश एवं सप्तमेश होने से अति मारक है.

बुध (तृतीयेश, षष्ठेश एवं लग्नेश का शत्रु) अन्य मारक तुल्य ग्रह है.

2.वृष लग्न

योगकारक ग्रहः–शनि (नवमेश एवं दशमेश होने से) विशिष्ट योगकारक है.

लग्नेश शुक्र एवं पंचमेश बुध अन्य शुभ फलदायी ग्रह हैं.

सम ग्रहः- सूर्य (चतुर्थेश एवं लग्नेश शुक्र का शत्रु).

मारक ग्रहः–कोई नहीं.

किंतु मंगल (सप्तमेश एवं द्वादशेश), चंद्र (तृतीयेश) एवं गुरु (अष्टमेश एवं एकादशेश) अन्य मारक तुल्य ग्रह हैं.

3.मिथुन लग्न

योग कारक ग्रहः- कोई नहीं.

किंतु बुध लग्नेश एवं चतुर्थेश होने से शुभ फलदायक है.बुध को लग्नेश होने से केन्द्राधिपति दोष नहीं लगता है.अन्य शुभ ग्रह शुक्र (पंचमेश एवं लग्नेश का मित्र) है.

सम ग्रहः- शनि (अष्टमेश एवं नवमेश) .

मारक ग्रहः- कोई नहीं.

गुरु सप्तमेश एवं बाधकेश है तथा दशमेश भी होने से, केन्द्राधिपति दोष से सर्वाधिक दूषित होकर मारक तुल्य है.मंगल (षष्ठेश एवं एकादशेश), चंद्र (द्वितीयेश) भी अन्य मारक तुल्य ग्रह हैं तथा सूर्य लग्नेश का नैसर्गिक मित्र होने के बाबजूद तृतीयेश होने से कष्टकारी माना गया है.

4.कर्क लग्न

योगकारक ग्रहः–मंगल पंचमेश एवं दशमेश होने से विशिष्ट योगकारक है.जबकि लग्नेश चंद्र एवं नवमेश गुरु अन्य शुभ फलदायी ग्रह हैं.

सम ग्रहः–शुक्र (चतुर्थेश एवं एकादशेश).

मारक ग्रहः–कोई नहीं.

किंतु सूर्य द्वितीयेश , बुध (तृतीयेश एवं द्वादशेश), शनि (सप्तमेश एवं अष्टमेश) मारक तुल्य ग्रह माने गए हैं.

5.सिंह लग्न

योगकारक ग्रहः–मंगल चतुर्थेश एवं नवमेश होने से विशिष्ट योगकारक है.जबकि लग्नेश सूर्य एवं पंचमेश गुरु अन्य शुभ

फलदायी ग्रह हैं.

सम ग्रहः– शुक्र (तृतीयेश, दशमेश एवं लग्नेश का शत्रु).

मारक ग्रहः–कोई नहीं.किंतु शनि (षष्ठेश एवं सप्तमेश), बुध (द्वितीयेश एवं एकादशेश) तथा द्वादशेश चंद्र मारक तुल्य ग्रह माने गए हैं.

6.कन्या लग्न

योग कारक ग्रहः–कोई नहीं.

किंतु बुध, लग्नेश एवं दशमेश होने से शुभ फलदायक है.बुध को लग्नेश होने से केन्द्राधिपति दोष नहीं लगता है.अन्य शुभ ग्रह शुक्र (नवमेश एवं लग्नेश का मित्र)है.

सम ग्रहः– शनि (पंचमेश एवं षष्ठेश) .

मारक ग्रहः– कोई नहीं.

गुरु सप्तमेश एवं बाधकेश है तथा चतुर्थेश भी होने से, केन्द्राधिपति दोष से सर्वाधिक दूषित होकर मारक तुल्य है.अन्य ग्रह मंगल (तृतीयेश एवं अष्टमेश), चंद्र (एकादशेश) तथा सूर्य (द्वादशेश) मारक तुल्य ग्रह माने गए हैं.

7.तुला लग्न

योगकारक ग्रहः– शनि चतुर्थेश एवं पंचमेश होने से विशिष्ट योगकारक है.जबकि लग्नेश शुक्र तथा नवमेश बुध अन्य शुभ फलदायी ग्रह हैं.

सम ग्रहः–चंद्र (दशमेश एवं लग्नेश का शत्रु).

मारक ग्रहः–मंगल द्वितीयेश एवं सप्तमेश होने से विशिष्ट मारक ग्रह है.

जबकि गुरु (तृतीयेश एवं षष्ठेश) तथा एकादशेश सूर्य,अन्य मारक तुल्य ग्रह माने गए हैं.

8.वृश्चिक लग्न

योगकारक ग्रहः–कोई नहीं.

किंतु मंगल (लग्नेश), गुरु (द्वितीय एवं पंचम का स्वामी तथा इन भावों का कारक होने से), सूर्य (दशमेश) एवं चंद्र

(नवमेश) अन्य शुभ फलदायी ग्रह हैं.

सम ग्रहः– शनि (तृतीयेश एवं चतुर्थेश).

मारक ग्रहः–कोई नहीं.किंतु शुक्र (सप्तमेश एवं द्वादशेश) तथा बुध (अष्टमेश एवं एकादशेश) मारक तुल्य ग्रह माने गए हैं.

9.धनु लग्न

योगकारक ग्रहः– कोई नहीं.

किंतु गुरु लग्नेश एवं चतुर्थेश होने से शुभ फलदायक है.गुरु को लग्नेश होने से केन्द्राधिपति दोष नहीं लगता है.अन्य शुभ ग्रह,मंगल (पंचमेश एवं द्वादशेश) तथा नवमेश सूर्य हैं.

सम ग्रहः– बुध सप्तमेश एवं बाधकेश तथा दशमेश भी होने से केन्द्राधिपति दोष से दूषित है (किंतु बुध पापी ना हो).

मारक ग्रहः–कोई नहीं.

किंतु शनि (द्वितीयेश एवं तृतीयेश), शुक्र (षष्ठेश एवं एकादशेश) तथा अष्टमेश चंद्र मारक तुल्य ग्रह हैं.

10.मकर लग्न

योगकारक ग्रहः– शुक्र पंचमेश एवं दशमेश होने से विशिष्ट योगकारक है.जबकि लग्नेश शनि एवं नवमेश बुध अन्य शुभ फलदायी ग्रह हैं.

सम ग्रहः–मंगल (चतुर्थेश एवं एकादशेश तथा लग्नेश का शत्रु).

मारक ग्रहः– कोई नहीं. चंद्र सप्तमेश एवं लग्नेश का शत्रु, सूर्य अष्टमेश एवं लग्नेश का शत्रु तथा गुरु (तृतीयेश एवं द्वादशेश) मारक तुल्य ग्रह हैं.

11.कुंभ लग्न

योगकारक ग्रहः– शुक्र चतुर्थेश एवं नवमेश होने से विशिष्ट योगकारक है.जबकि लग्नेश शनि, पंचमेश बुध तथा गुरु (द्वितीय एवं एकादश का स्वामी तथा इन भावों का कारक होने से) अन्य शुभ फलदायी ग्रह हैं.

सम ग्रहः– मंगल (दशमेश एवं तृतीयेश तथा लग्नेश का शत्रु).

मारक ग्रहः– कोई नहीं.सप्तमेश सूर्य तथा षष्ठेश चंद्र मारक तुल्य ग्रह माने गए हैं.

12.मीन लग्न

योगकारक ग्रहः–कोई नहीं.किंतु गुरु लग्नेश एवं दशमेश होने से शुभ फलदायक है.गुरू को लग्नेश होने से केन्द्राधिपति दोष नहीं लगता है.नवमेश मंगल एवं पंचमेश चंद्र अन्य शुभ फलदायी ग्रह हैं.

सम ग्रहः–बुध सप्तमेश एवं बाधकेश है तथा चतुर्थेश भी होने से केन्द्राधिपति दोष से दूषित है (किंतु बुध पापी ना हो).

मारक ग्रहः– कोई नहीं.षष्ठेश सूर्य, शुक्र (तृतीयेश एवं अष्टमेश) एवं शनि (एकादशेश एवं द्वादशेश) मारक तुल्य ग्रह माने गए हैं.

नवग्रहों का प्रभाव शरीर के रोग एवं निवारण

आचार्य नीलेश अग्रवाल
भोपाल (म. प्र)

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार, हर ग्रह शरीर के अलग-अलग अंगों और रोगों से जुड़ा होता है; सूर्य से हृदय, हड्डी, आँखें, चंद्रमा से मानसिक, सर्दी, पानी संबंधी, मंगल से रक्त, त्वचा, पेट, बुध से नसों, जीभ, त्वचा, गुरु से पाचन, गैस, मोटापा, शुक्र से यौन, त्वचा, मधुमेह, शनि से हड्डियाँ, तंत्रिका, पुरानी बीमारियाँ, और राहु-केतु से अज्ञात, एलर्जी, जोड़ों के दर्द व मानसिक भ्रम के रोग हो सकते हैं।

ग्रहों और उनसे जुड़े मुख्य रोग (ज्योतिषीय मान्यता के अनुसार)

सूर्य: हृदय रोग, आँखों की समस्या, हड्डियों का कमजोर होना, बाल झड़ना, विटामिन D की कमी, रक्तचाप (ब्लड प्रेशर)।

चंद्रमा: मानसिक रोग, डिप्रेशन, नींद न आना, सर्दी-जुकाम, पानी से जुड़े रोग, चिंता।

मंगल: रक्त विकार, फोड़ा-फुंसी, त्वचा रोग, पित्त विकार, पेट की समस्याएँ, appendicitis, उच्च रक्तचाप।

बुध: चर्म रोग, हकलाना, जीभ, नाक, गला, फेफड़े, याददाश्त, मस्तिष्क संबंधी रोग, त्वचा विकार।

गुरु (बृहस्पति): गैस, पाचन संबंधी समस्याएँ, पीलिया, मोटापा, गठिया, जोड़ों में दर्द, सूजन।

शुक्र: यौन रोग, नपुंसकता, मधुमेह (डायबिटीज), त्वचा संबंधी रोग, हार्मोनल समस्याएँ, मोटापा, सुंदरता से जुड़े रोग।

शनि: हड्डियों और पैरों में दर्द, वात रोग, पुराना बुखार, सांस के रोग, पक्षाघात (पैरालिसिस), दीर्घकालिक बीमारियाँ।

राहु: अज्ञात रोग, एलर्जी, अचानक दुर्घटना, मानसिक भ्रम, बुखार, दिमागी समस्याएँ।

केतु: जोड़ों का दर्द, शुगर, कान के रोग, रीढ़ की हड्डी की समस्याएँ, मानसिक भ्रम। रोग का ज्योतिषीय कारण

वैदिक ज्योतिष गणनीय है, आप जानते हैं।

जातक के जीवन की समस्याओ और जातको का कारण भी ग्रह-प्रभाव है।

षष्ठम् भाव को रोग एवं नवनिहाल से सम्बंधित माना गया है।

चतुर्थ भाव से तृतीय भाव, षष्ठम माता के भाई-बहन और माता के योग से संबंधित है।

जातक यदि रोग दशा में है तो षष्ठम भाव को प्रथम मान कर निर्धारण करे।

षष्ठमेश की स्थिति पर भी विचार करें।

12 वर्ष से कम आयु के बच्चे के रोग की स्थिति में पिता के दशम भाव से विचार करें।

दशम पंचम से षष्ठम है, संतान का रोग भाव।

ग्रह स्वास्थ्य एवं रोग के कारण हो सकते हैं।

यदि 6 अंश से कम या 24 अंश से अधिक हो तो जातक को रोग की संभावना अधिक हो जाती है।

षष्ठम् भाव का मंगल, खुजली, चोट, जलन संभव है। रक्त संबन्धित रोग जैसे बीपी, एनीमिया आदि।

यहां केतु पैर में चोट या सर्जरी कर सकती है। समन्यता केतु जहां बैठता है उस अंग से संबंधित शैली या चोट का निशान जरूर देता है।

खराब स्थिति मे त्रिक स्थान के स्वामी भी इन भावों मे अशुभ फल ही देगें

जन्मदात्री माँ है, रोग भी गर्भाधान, गर्भावस्था और प्रसव समय से ही आरंभ।

रावण संहिता में है, शनि ग्रहो (6-8 भाव) में शुभ फल देता है।

अष्टम मे शनिदेव, दीर्घ वय पर अंतिम अवस्था में रोगी ही रहते हैं। और बिमारी मौत के साथ ही ख़तम होती है।

मेरा अनुभव है, त्रिक स्थान में ग्रह न हो तो शुभ है।

द्वादश भाव पर, एकादश का लाभ भाव है, वंहा स्थित ग्रह के कारण जातक को धन लाभ प्राप्त कराटे है।

चंद्र मानसिक रोग देता है, जातक में पानी की कमी भी संभव है।

मंगल के कारण रक्त विकार, चोट या जलन संभव है।

बुध के कारण त्वचा रोग, वाणी विकार संभव है। प्रथम भाव में है तो चेहरे पर कील-मुंहसे संभव है।

बृहस्पति का संबंध कान से है, तृतीय व एकादश भाव से बृहस्पति का प्रभाव कान पर अनुभव होगा

स्मरण शक्ति की कमी और अत्याधिक चर्बी, अंग विकार भी बृहस्पति के कारण संभव है।

उत्तर-पश्चिम दिशा षष्ठम भाव से संबन्धित है।

रोग की दशा मे घर की उस दिशा मे यदि वास्तुदोष है या नविनीकरण यदि कोई परिवर्तन किया गया है तो विचारणीय है।

हड्डियों से सम्बंधित रोग

शरीर के सभी रोम, सिर के बाल शनिदेव से संबंधित है।

गंजेपन का कारण बृहस्पति है।

अत्याधिक या कम रोम शनिदेव का प्रभाव से है।

एक अद्भुत स्मरणीय तथ्य कहा गया है:- चोट स्थान पर गंजेपन के बाद जातक नया कुछ नहीं सीखता, जो अबतक सिखा है, उससे ही जीवन व्यतीत होता है।

शनिदेव और बृहस्पति का कुंडली मे कोई भी संबंद वैराग्य देता है।

राहु के कारण भय या वहम मे रहता है। हकलाहट, सांस लेने में समस्या और कैसर रोग का कारण भी है राहु।

केतु शल्य क्रिया का कारण है।

रोग से प्रतिरक्षात्मक बल की कमी भी संभव है। संबन्धित रोग होने पर रोग के कारक ग्रह का जब तब वास्तु दोष निवारण होता है , रत्न, औषधियां, हवन और योग्य ज्योतिष से सलाह लेकर निवारण संभव है।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए आहार चिकित्सा

हमें हमारा शरीर स्वस्थ और निरोग रखने के लिए रात्री में जल्दी सोना और सवेरेजल्दी सूर्योदय पूर्व नींद से उठ जाना जरूरी होता है। इसीलिए तो ईश्वर आराधना के लिए प्राचीन काल से ही ब्रह्म मुहूर्त का समय सबसे उत्तम माना गया है। इससे स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है साथ ही अपने आध्यात्मिक चिंतन और भगवद् भजन के लिए उत्तम समय मिल जाता है।

सवेरे जल्दी उठकर शौच आदि से निवृत होना तथा स्नान आदि कर लेना चाहिए शरीर के लिए उपयुक्त योग आसन और प्राणायाम भी जरूर करना चाहिए ताकि अच्छे स्वास्थ्य के लिए उत्तम रहे ;भगवान की आराधना में प्राणायाम करना भी उत्तम माना गया है। सुखी और स्वस्थ्य जीवन के लिए सोने जागने तथा आहार आदि की हमारी नियमितता होनी चाहिए। अच्छा स्वास्थ्य हमे अपने अर्थोपार्जन के लिए किये जाने वाले दैनिक कार्यों में नियमितता प्रदान करता है अन्यथा अस्वस्थ्य रहने पर कायों में ढिलाई बरतने से हमारे कार्यक्षेत्र से अंसतोष के साथ ही सामाजिक जीवन तथा व्यक्तित्व पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है। अत: यह बात तो स्पष्ट है कि हमारे असंतुलित जीवन से और उत्तमआहार नही लेने के कारण ही बीमारियां उत्पन्न होती है।

अधिक गरिष्ठ पदार्थ का सेवन अथवा अधिक समय तक भूखे रहना। नशीले, खाद्यान्न अथवा पेय चीजों का सेवन हमारे स्वास्थ्य को खराब करता है। हमारा शरीर पहले तो बीमारियो से लड़ता है और खराब खाद्यान्न के सेवन से बीमारियों के उत्पन्न होते रहने के कारण बीमारियों से पराजित होकर बिस्तर पकड़ लेता है। अत एव हमारा आहार पर नियंत्रण रखना अच्छे स्वास्थ्य के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

सवेरे का नाश्ता

सवेरे के नाश्ते में हमें सुखे मेवे के अन्तर्गत पिस्ता, अखरोट, अंजीर, बादाम, मखाने, पिण्डखजूर, ताजे फल और उनका रस अथवा सब्जियों की बनी हुई सलाद या सूप को पीना चाहिए। अधिक श्रम करने वालों को गेहूं , मक्का का दलिया भी लेना चाहिए।

दोपहर का भोजन

दोपहर के भोजन में गेहूं ज्वार, मक्का और बाजरा के मोटेआटे से बनी हुई रोटी, दाल, चावल और अथवा फलों आदि का सलाद खीरा, ककड़ी, टमाटर, सलाद के पत्ते, गाजर, मूली, पत्ता गोभी, पालक, प्याज, अजवाइन के पत्ते आदि को सलाद के रूप में तथा समय तथा देशकाल के समय अनुसार उपलब्ध हरी सब्जियां भाप से पकी हुई अथवा उबली हुई सब्जी जोकिअधिक मसाले से रहित हो उसे भोजन मे लेना चाहिए।

सायंकाल का भोजन

सायंकाल का भोजन जहां तक संभव हो सूर्यास्त के 1 घंटे पहले से लेकर डेढ़ घंटे बाद तक कर ही लेना चाहिए ताकि भोजन का पाचन रात्री में सोने से पूर्व ही हो सके और रात्री की नींद हमें सरलता से प्राप्त हो सके। रात्री में देररात तक जगना और अधिक विलम्ब से भोजन करना हमारी पाचन शक्ति को कमजोर करता है तथा अनावश्यक बीमारियां घर कर लेती है।

– अमृता पुरोहित, इंदौर

ज्योतिष, संहिता खंड और बाज़ार को समझने की सरल सोच

ज्योतिषाचार्य अनुपम शुक्ल

(यह आलेख पूर्ण रूप से शैक्षणिक विचार विमर्श है ,यह किसी तरह की निवेश की सलाह नहीं है। निवेश हेतु अपने निवेश-सलाहकार से सम्पर्क कर निर्णय लेवें - **सम्पादक**)

ज्योतिष शास्त्र में संहिता खंड का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। संहिता खंड वह शाखा है जो समूह से जुड़ी घटनाओं का अध्ययन करती है—जैसे मौसम,खेती,शासन,युद्ध,समाज की समृद्धि और आर्थिक उतार-चढ़ाव। बृहत् संहिता,वराहमिहिर के ग्रंथ और नाड़ी ग्रंथों में यह बात बार-बार कही गई है कि बाज़ार कोई अचानक या अलग-थलग घटना नहीं है। बाज़ार असल में ब्रह्मांड की लय और लोगों की सामूहिक सोच का प्रतिबिंब होता है।

पुराने समय में वस्तुओं के दाम, लेन-देन और व्यापार को सूर्य के मौसम बदलने, चंद्रमा की कलाओं और ग्रहों के आपसी प्रभाव (ग्रह युद्ध) से जोड़कर देखा जाता था। आज भले ही बाज़ार कंप्यूटर, एल्गोरिदम और हाई-फ्रीक्वेंसी ट्रेडिंग से चल रहे हों, लेकिन बाज़ार को चलाने वाली मूल शक्तियाँ आज भी वही हैं—डर,लालच,पैसा उपलब्ध होना, जोखिम से बचाव और भविष्य की उम्मीद। ये सब मानवीय भावनाएँ आज भी ग्रहों की चाल,खासकर तेज़ चलने वाले ग्रहों,के साथ तालमेल रखती हैं।

इसी कारण एस्ट्रो-इकोनॉमिक्स को केवल कुछ योगों या एक-दो सूत्रों तक सीमित नहीं किया जा सकता। इसके लिए एक ऐसा ढाँचा चाहिए जो तार्किक हो, बार-बार परखा जा सके और दोहराया जा सके, और जो पुराने संहिता सिद्धांतों पर आधारित होते हुए भी आज के फ्यूचर्स, ऑप्शंस और डेरिवेटिव जैसे बाज़ारों पर लागू हो सके।

अधूरी और भ्रामक ज्योतिषीय व्याख्याओं की समस्या

आज के समय में वित्तीय ज्योतिष की एक बड़ी समस्या यह है कि कई लोग शास्त्रों की बातों को आधा-अधूरा और बिना संदर्भ के पेश करते हैं। सोशल मीडिया पर अक्सर किसी एक ग्रह गोचर,ग्रहण या वक्री चाल को ही पूरा संकेत बता दिया जाता है। इसका उद्देश्य अधिकतर ज्ञान देना नहीं,बल्कि कमाई करना होता है।

जबकि संहिता ज्योतिष कभी भी एक ही ग्रह को देखकर निर्णय नहीं करता। ऋषियों ने हमेशा इन बातों को साथ में देखा—

- **ग्रहों की आपसी गति**
- **सूर्य और चंद्रमा से उनकी दूरी**
- **ग्रहों की अवस्था और चरण**
- **किसी एक व्यक्ति पर नहीं, बल्कि समाज और बाज़ार पर सामूहिक प्रभाव**

इसलिए सही एस्ट्रो-इकोनॉमिक्स का उद्देश्य यह होना चाहिए कि ज्योतिष जिज्ञासा का विद्यार्थी संहिता की तरह सोचना सीखें—देखें,समझें,अनुमान लगाएँ,परखें और ज़रूरत पड़ने पर अपनी सोच सुधारें।

मासिक बाज़ार को समझने की सरल रूपरेखा

(सूर्य-बुध-शुक्र का संबंध)

महीने भर के बाज़ार रुझान को सबसे अच्छे तरीके से सूर्य,बुध और शुक्र के आपसी संबंध से समझा जा सकता है। ये तीनों ग्रह मिलकर यह तय करते हैं कि लोग किसी चीज़ की कीमत को कैसे देखते हैं,खरीद-बिक्री कैसे होती है और मूल्य का अवमूल्यन ओर उन्नयन किसप्रकार होगा कितना बढ़ेगा या घटेगा।

1. सूर्य का परिवर्तन, नक्षत्र और चंद्र अवस्था

सूर्य बाज़ार की मुख्य दिशा तय करता है—सरकार,नीति,भरोसा और नेतृत्व का संकेत देता है। जब सूर्य नक्षत्र बदलता है,तो धीरे-धीरे ये चीज़ें बदलने लगती हैं—

- लोग कितना जोखिम लेना चाहते हैं
- आगे की नीतियों को लेकर उम्मीद
- बड़े निवेशकों की भागीदारी

नक्षत्र बाज़ार की चाल का स्वभाव बताते हैं—

- **उग्र नक्षत्र:** तेज़ उतार-चढ़ाव
- **मृदु नक्षत्र:** ठहराव और स्थिरता
- **तीक्ष्ण नक्षत्र:** अचानक तेज़ मूव

चंद्रमा का असर

- **अमावस्या:** नई शुरुआत,चुपचाप खरीद या बिक्री
- **पूर्णिमा:** भावनाएँ चरम पर,मुनाफा वसूली या घबराहट

इसी कारण कई बार बाज़ार अमावस्या या पूर्णिमा के आसपास ऊपर या नीचे रुकता है।

2. बुध : दाम तय होने की प्रक्रिया

बुध बाज़ार का नर्व सिस्टम है—सूचना,तेज़ी,ट्रेडिंग और ट्रेडर की सोच से जुड़ा हुआ।

सूर्य के मुकाबले बुध की स्थिति- सिर्फ बुध का वक्री या मार्गी होना ही नहीं,बल्कि सूर्य से उसकी दूरी ज़्यादा मायने रखती है—

जब बुध सूर्य से आगे और तेज़ चलता है

- खबरें बहुत ज़्यादा असर डालती हैं
- सट्टा बढ़ जाता है
- दाम टिक नहीं पाते
- बाज़ार गिरता है या सुधरता है

जब बुध सूर्य के पीछे होते हुए तेज़ हो

- असली स्थिति अभी सबको समझ नहीं आती
- बड़े खिलाड़ी धीरे-धीरे खरीदते हैं

- बाद में तेज़ ब्रेकआउट होता है
- बाज़ार नए ऊँचे स्तर बनाता है

यह दिखाता है कि लोग क्या सोच रहे हैं और असल में क्या हो रहा है—दोनों में फर्क।

3. बुध–शुक्र की दूरी : स्पॉट और फ्यूचर का फर्क

शुक्र पैसे की सुविधा, आराम, भरोसा और पूंजी से जुड़ा है। बाज़ार में यही तय करता है कि लोग कितना समय तक निवेश बनाए रखेंगे।

जब बुध और शुक्र बहुत दूर हों

- स्पॉट और फ्यूचर के दाम पास आ जाते हैं
- जोखिम कम लगता है
- बाज़ार स्थिर रहता है

जब बुध शुक्र से तेज़ हो

- छोटे समय के ट्रेड ज़्यादा
- स्पॉट दबा रहता है
- फ्यूचर महँगा होता है

जब शुक्र बुध से तेज़ हो

- लंबी अवधि का भरोसा
- ज़्यादा फ्यूचर खरीद
- स्पॉट पीछे-पीछे चलता है

जब दोनों की चाल बराबर हो

- बाज़ार एक दायरे में घूमता है

4. सूर्य–बुध–शुक्र का मिलाजुला असर

इन तीनों का आपसी तालमेल तय करता है कि बाज़ार की तेज़ी या मंदी टिकेगी या नहीं।

तेज़ी का समय

बुध सूर्य के पास और तेज़ शुक्र सूर्य से दूर

- दाम सही लगते हैं
- मांग मज़बूत होती है
- तेज़ी टिकती है

मंदी का समय

बुध सूर्य से दूर शुक्र सूर्य के पास

- दाम को लेकर भ्रम
- भावनाओं में ज़्यादा खरीद
- बाद में गिरावट

5. जांच और अनुभव ज़रूरी है

संहिता ज्योतिष कभी अंधविश्वास नहीं था। ऋषियों ने सालों तक देखकर, समझकर और सुधार करके सिद्धांत बनाए। आज भी—

- पुराने डेटा को परखना
- अलग-अलग बाज़ारों की तुलना
- अमावस्या–पूर्णिमा पर ध्यान
- वॉल्यूम और उतार-चढ़ाव देखना

बहुत ज़रूरी है।

निष्कर्ष– अगर ज्योतिष को तर्क, अनुशासन और सादगी के साथ इस्तेमाल किया जाए, तो यह बाज़ार को समझने का एक मज़बूत साधन बन सकता है। सूर्य–बुध–शुक्र का मॉडल एक ऐसा मासिक ढाँचा देता है, जो न तो डर फैलाता है और न ही चमत्कार दिखाता है, बल्कि सोचने की दिशा देता है।

एस्ट्रो-इकोनॉमिक्स का मकसद भविष्यवाणी करना नहीं बल्कि बाज़ार की सामूहिक सोच को समझना है—ताकि आधुनिक वित्तीय तरीकों के साथ मिलकर बेहतर निर्णय लिए जा सकें।

ग्रहों नक्षत्रों का तेजी मंदी पर प्रभाव

1. पूर्णिमा या अमावस्या के बाद पहले से चली आ रही तेजी में मंदी अथवा मंदी हो तो तेजी आती है।
2. चंद्र बुध एवं चंद्र शुक्र युति अमावस्या के दो से चार दिन में आती है तो तेजी और मंदी आती है मंगल राहु साथ हो तो भी चांदी (लाल वस्तु तेज)।
3. यदि बुध या शुक्र सूर्य के पीछे हो अमावस्या के पहले युती है तो अमावस्या बाद तेजी।
4. बुध सूर्य से 28 डिग्री पीछे या आगे जाते हैं इस प्रकार शुक्र सूर्य से 48 अंश आगे या पीछे जा सकता है। बुध और शुक्र आपस में 48+28=76 अंश तक दूरी होने पर वर्षा कम होती है। ऐसे में चांदी, चना, तेलो, दलहन तथा धनिया में तेजी आती है।
5. बुध शुक्र एक साथ दो-तीन महीनों तक नजदीक रहे या आपस में 5 डिग्री दूरी पर हो तब नजदीक मानते हैं। ऐसे में बारिश अच्छी होती है और तेलवाना तेल और आईल सीड में मंदी आ जाती है।
6. गुरु ग्रह जब कुंभ राशि में हो तब तेलवाना में तेजी देता है, यह तेजी अमावस्या पूर्णिमा के निकट अधिक हो जाती हैं।
7. गुरु ग्रह मकर, मेष, सिंह के 15 अंश के बाद से कन्या तक, लहसुन में मंदी आती है। गुरु कन्या, वृषभ के राहु या तुला राशि में एक साथ होने पर भी लहसन में तेजी और प्याज में तेजी।
8. जब गुरु शनि वृषभ के हो, तब तेल, करंज के बीज सोयाबीन में तेजी चल सकती है।
9. सिंह, मीन, वृश्चिक में मंगल शेयर मार्केट में मंदी।
10. वृषभ का, मीन का मंगल मार्केट को तेजी मंदी ज्यादा।
11. शुक्र, शनि एक साथ होकर अस्त हो तो मंदी होकर तेजी।
12. गुरु ग्रह वक्री होने पर सोने-चांदी में तेजी।
13. मंगल शनि गुरु में से मंगल अस्त होने से तेजी। मंगल अस्त होने पर मूंगफली, तेल, चना तेज।
14. गुरु ग्रह अस्त होने पर तेल, दाल, लहसुन में तेजी।
15. शुक्र ग्रह अस्त होने पर शेयर मार्केट में मंदी।
16. सोमवारी या मंगलवारी पूर्णिमा होने पर सोयाबीन डी.ओ.सी.तेज।
17. सिंह का मंगल वृश्चिक एवं मीन राशि का मंगल सिंह/मीन का शुक्र, वृश्चिक का शुक्र, अश्लेषा, रेवती कक्ष शुक्र तथा मूल/उत्तराषाढ़ा का चंद्र (कृष्णपक्ष का) हो तो बाजार में भयंकर गिरावट आती है।
18. कृष्ण पक्ष में शुक्र, धनेष्ठा, शतभिषा तथा चंद्रमा चित्र स्वाती से पूर्वाषाढ़ा तक होने पर भयंकर मंदी आती है।
19. कृतिका से अश्लेषा के चंद्र नक्षत्र मंदी देते हैं।

'पूर्वजन्मकृत पापों का वर्तमान जन्म में प्रभावः कैसे ज्ञात होता है?'

ज्योतिषाचार्य सी.आर.शर्मा
(गोतम गुरुजी), भोपाल

(शास्त्रीय प्रमाण-समर्थित विश्लेषण)

प्रस्तावनाः भारतीय ज्योतिषशास्त्र में जन्मकुंडली केवल वर्तमान जीवन का फलादेश नहीं, बल्कि पूर्वजन्म-संचित कर्मों का दर्पण मानी गई है। बृहदारण्यक उपनिषद से लेकर मनुस्मृति,महाभारत, पराशरीय होराशास्त्र, जातकपारिजात और फलदीपिका तक विविध ग्रंथ यह प्रतिपादित करते हैं कि वर्तमान जन्म में प्राप्त देह, परिवार, सुख-दुःख, आयु और ग्रह स्थितियाँ-सभी पूर्वकृत कर्मों के परिणामस्वरूप प्राप्त होती हैं।

1 :- वेद-उपनिषद में कर्मफल का सिद्धांत

बृहदारण्यक उपनिषद (4.4.5.)

'यथाकर्म यथाश्रुतं '

जीव अपने कर्मानुसार ही जन्म और अनुभव प्राप्त करता है,अर्थात् जन्म विशेष, परिस्थितियाँ औरभाग्य-यह सब संचित कर्मानुसार निर्धारित है।

छान्दोग्यउपनिषद (5.10.7.)

'सत्यम् हि मन्यन्ते... पुण्येन पुण्यं लोकं जायते, पापेन पापम्।'

अर्थः पुण्य और पाप—दोनों आगामी जन्म के सुख-दुःख का निर्धारण करते हैं।

यह उपनिषद-आधारित सिद्धांत ज्योतिष का आधार बनता है, क्योंकि ज्योतिष 'कर्मफल-विज्ञान' है।

2 : मनुस्मृति और कर्मजन्म सिद्धांत

मनुस्मृति (12.3.)

'कर्मणां परिणामोऽयं जन्मानि विविधानि।'

अर्थ- पूर्वकर्मों का ही परिणाम विविध जन्मों के रूप में प्राप्त होता है।

मनुस्मृति (12-81-)

'यथा कर्म कुर्वीत तद्भवत्यात्मनः स्वरूपम्।'

अर्थ- ग्रहस्वभाव, जन्मजात वृत्तियाँ, प्रकृति—सब पूर्वकर्म से निर्मित।

3 :- पराशर ऋषि के अनुसार कुंडली = संचित कर्म का प्रतिबिंब

बृहत्पाराशर होराशास्त्र (1-5-)

'कर्मविपाककालज्ञं ज्योतिषं'

ज्योतिष कर्मों के फल और उनके समय को समझने का विज्ञान है।

इससे स्पष्ट है कि जन्मकुंडली = कर्मफल का मानचित्र (कर्म-नक्शा) है।

4 :- पूर्वजन्मकृत पापों का कुंडली में प्रकट होने का सिद्धांत

पूर्वकृत पाप-कर्म तीन प्रकार से वर्तमान कुंडली में व्यक्त होते हैं।

(1- कर्मदोष (संचित कर्म के संकेत)।

2- पितृदोष (पूर्वजों के अपकृत कार्य)।

3-ऋणज-कर्मज दोष (अनेक प्रकार के बंधन, दैहिक/मानसिक कष्ट)।

अब इनके ज्योतिषीय संकेत नीचे विस्तार से प्रस्तुत हैं।

5 :- पूर्वजन्मकृत पापों के प्रमुख ज्योतिषीय संकेत

1- द्वादश भाव = 'पूर्वजन्म' और 'कर्म-क्षय' का भाव द्वादश भाव को पराशर ऋषि ने व्यय भाव मोक्षभाव पापफलों का अनुभव स्थल पूर्वजन्म-दोषके रूप में अभिहित किया है।

यदि द्वादशेश पीड़ित हो, द्वादश भाव में

पापग्रह हो, अथवा राहु-केतु का प्रबल प्रभाव हो, तो पूर्वकृत दोषों का अनुभव इस जन्म में होता है।

6 :- ग्रहवार विश्लेषण (शास्त्रीय आधार)

(1-) शनि को 'दण्डकर्ता' कहा गया है।

बृहत्पाराशर (अध्याय 25)

'शनि: पापशेष: कर्मफलद: । '

अर्थ- शनि पापकर्मों का फल देने वाला प्रमुख ग्रह है।

पाप कर्म दोष के संकेत- शनि का भाव '1-4-7-10' में पापदृष्टशनि और राहु के परस्पर सम्बन्ध (कर्म-बंध)

फल: सामाजिक अपमान कार्यो मेविलम्ब-देरी होना

शरीर मे रोग होना

अत्यधिक परिश्रम

पारिवारिक कष्ट होना

(2-) राहु पूर्वजन्म-अपूर्ण इच्छाओं और पापकर्मों का प्रतिनिधि है।

विष्णु पुराण (2-8)

राहु— 'पापात्मा '।

कुंडली संकेत

राहु पंचम में = पूर्व जन्म में बुद्धि/विद्या का दुरुपयोग

राहु नवम में =धर्मविचलन, गुरु-द्रोह

राहु चतुर्थ में = माता/भूमि से सम्बंधित कर्मदोष

राहु अष्टम में = गहन कर्मबन्ध (3-)केतु 'कर्म-विपाक' का तीक्ष्ण कारक।

गर्ग, संहिता: 'केतुर्भोगविनाशक: कर्मविपाकद: । '

केतु का संकेत- केतु लग्न/चंद्र से 5-9 में = पूर्व जन्म के तप/भयआघात

केतु द्वादश में = अधूरे तप या पूर्वजन्म-वैराग्य (4-)मंगल हिंसा,युद्धअन्याय या क्रोधजन्य पापकर्मों का फल देता है।

मंगल अष्टम/द्वादश में पापदृष्ट = पूर्वजन्म में हिंसा

मंगल राहु-सप्तम में = लौकिक स्त्री-पुरुष दुराचार के कर्मफल

(5-)शनि-राहु-केतु युति: शास्त्रों में यह योग अत्यन्त महत्वपूर्ण माना गया है।

व्यास-स्मृति: 'शनि-राहुसंयोगे कर्मज दोषो महान्। '

अर्थ- यह योग बड़ा कर्मदोष लेकर आता है।

भाव-आधारित विश्लेषण: (1-) पंचम भाव पूर्वजन्म-संचित पुण्य-पाप का सबसे स्पष्ट सूचक पराशर ऋषि ने पंचम भाव को 'पूर्वपुण्य' कहा है।

यदि पंचम भाव पीड़ित हो शनि या राहु,पंचमेश नीचस्थ पंचम में पापग्रहों का दर्पण तो पूर्वजन्मकृत पाप प्रबल रूप से अनुभव होते हैं।

उदाहरण: संतान सुख में बाध,शिक्षा में बाधा,मानसिक पीड़ा धर्म-विचलन की प्रवृत्ति

(2-) नवम भाव धर्म-कर्म-आचार नवम में पापग्रह या नवमेश पीड़ित: पूर्वजन्म में गुरु-द्रोह, ब्रह्मचर्य भंग, धर्मभ्रष्टता

वर्तमान जीवन मेंभाग्यहीनता, पिता सम्बन्धी कष्ट

(3-) अष्टम भाव- 'आपूर्व' कर्म व ऋणात्मक कर्मफल:,अष्टम भाव को

आयु का भाव।

गुप्त पाप का भाव।

कर्मज ऋण का भाव।

दैहिक-मानसिक कष्ट

का भाव कहा गया है।

शनि/राहु/केतु/मंगल अष्टम में

पूर्वजन्मकृत पापकर्मों का दण्ड।

(4-) द्वादश भाव - व्यय, कष्ट, कारावास, पापफल: द्वादश में राहु-शनि पूर्वजन्मकृत कर्मों का दण्ड मानसिक क्लेश शरीर में रोग,व्याधि

(5-) विशिष्ट कर्मदोष (शास्त्रीय प्रमाण सहित):

पितृदोष: - गरुड़ पुराण:

'पितृभक्तिहीनस्य शापो भवति। '

अर्थ-पितरों का अनादर कर्मफल उत्पन्न करता है।

ज्योतिष में इसके संकेत: पंचम/नवम में राहु, सूर्य पीड़ित होना, 1-5-9 त्रिकोण पीड़ित, कुल-पितरों का कर्मदोष।

मातृदोष: चतुर्थ भाव में शनि/राह चंद्रमा का पीड़ित होना

शास्त्रीय प्रमाण

बृहत्पाराशर,अध्याय 26

चंद्रमा = माता, मन चंद्र-दोष = मातृ-संबंधित पूर्वकर्म।

स्त्री-दोष: कई शास्त्रों में वर्णित यदि पूर्वजन्म में स्त्री-अपमान या दुराचार हुआ हो।

सप्तम भाव पीड़ित हो

शुक्र नीच राशि में

राहु-शुक्र युति में हो

फल: क्या होगा ?

विवाह क्लेश होगा

पत्नी-सुखहीनता योग

चरित्र-विवादस्पद होगा

भूमि-दोष: चतुर्थ में राहु-शनि = भूमि, घर, मातृधन के क्षेत्र में पूर्वकृत दोष।

ग्रह-दृष्ट युति शास्त्रीय प्रमाण

(1:-) बृहत्पाराशर (अध्याय 23)

'दुष्टग्रहदृष्टे पापफलानि '—पापग्रहों की दृष्टि से पापफल जन्मान्तर से प्राप्त होते हैं।

(2-) जातकपारिजात (अध्याय 2): 'पूर्वकृतं कर्म तस्य जन्मे फलति। '

अर्थ: जन्म के समय ग्रहों की स्थिति पूर्वकृत कर्मों का फल है।

(3-) फलदीपिका (अध्याय 20)

'संचित कर्म प्रभावाद् दु:खानि सुखानि च। '

अर्थ- सुख-दु:ख का आधार संचित कर्म ही है।

निष्कर्ष

पूर्वजन्मकृत पापों का वर्तमान जन्म की कुंडली में प्रकट होना एक सुव्यवस्थित, शास्त्र-आधारित सिद्धांत है।

मुख्य संकेतक हैं

पंचम, अष्टम, नवम, द्वादश भाव

शनि, राहु, केतु, मंगल

पितृदोष, मातृदोष स्त्री-दोष

ग्रह-दृष्टि और पापग्रह संयोजन

कुंडली में इन संकेतों का समुचित अध्ययन यह स्पष्ट कर देता है कि जातक किस प्रकार के संचित पाप-कर्मों का अनुभव इस जीवन में कर रहा है और उनके उपशमन हेतु कौन-सी साधना/अनुष्ठान अपेक्षित हैं।

सूर्यग्रह विश्व परिस्थिति का निर्णायक

आचार्य कौशिक, भोपाल

आचार्य कौशिक एक अनुभवी वैदिक ज्योतिषाचार्य हैं, जो पारंपरिक ज्योतिषीय ज्ञान को आधुनिक प्रबंधन दृष्टिकोण के साथ प्रस्तुत करने के लिए जाने जाते हैं। शोधपरक लेखन, सेमिनार एवं प्रशिक्षण के माध्यम से वे ज्योतिष को समकालीन समाज से जोड़ने का कार्य कर रहे हैं।

सन स्पॉट और ज्योतिषीय चेतना

आधुनिक खगोल विज्ञान और वैदिक दृष्टिकोण का समन्वय

सूर्य केवल एक खगोलीय पिंड नहीं है, बल्कि भारतीय दर्शन और ज्योतिष में वह जीवन, चेतना और आत्मबल का मूल स्रोत माना गया है। आधुनिक विज्ञान ने सूर्य की सतह पर दिखाई देने वाले काले धब्बों—सन स्पॉट की खोज की है, जो न केवल खगोल वैज्ञानिकों के लिए बल्कि आधुनिक ज्योतिष के लिए भी विचारणीय विषय बन गए हैं।

सन स्पॉट : वैज्ञानिक दृष्टि

सन स्पॉट सूर्य की सतह पर उत्पन्न वे क्षेत्र हैं जहाँ तापमान अपेक्षाकृत कम होता है, परंतु चुंबकीय ऊर्जा अत्यंत प्रबल रहती है। ये धब्बे सूर्य की चुंबकीय गतिविधि के संकेतक होते हैं और इनकी संख्या लगभग 11 वर्षों के सौर चक्र में घटती-बढ़ती रहती है। जब सन स्पॉट अधिक सक्रिय होते हैं, तब सूर्य से सौर ज्वालाएँ और ऊर्जात्मक विस्फोट पृथ्वी की ओर प्रवाहित होते हैं।

भारतीय ज्योतिष के संहिता शास्त्रों में इन धब्बों को तामस-कीलक, सूर्यकलंक आदि के नाम से जाना जाता है।

धब्बों की संरचना और स्वरूप

सूर्य की सतह पर छोटे छोटे छिद्र होते हैं। इन छिद्रों से चुम्बकीय तरंगे निकती हैं। इन छिद्रों का अपना दबाव क्षेत्र होता है। क्योंकि सूर्य की सतह तरल और गतिशीलहै, यह छिद्र भी गतिशील होते हैं।

जब कभी दो छिद्र नजदीक आते हैं, इनके बीच स्थित प्लाज्मा पर दबाव पड़ने लगता है। लगातार दबाव से इनमें एक चमकीला संबंध (पुल) स्थापित होता जाता है। कुछ अंतराल बाद दोनो छिद्र आपस में जुड़ कर एक बड़े छब्बे में परिवर्तित हो जाते हैं। इन शक्ति क्षेत्रों के बीच परिवर्तन की वजह से चुम्बकीय क्षेत्र की गतिविधियाँ भी बड़ जाती हैं और सूर्य मण्डल में प्लाज्मा का भयंकर विस्फोट उभर जाता है। इन स्थानों से विशालकाया सौर ज्वाला के भी विस्फोट होते हैं। सौर ज्वाला इतनी तीव्र होती है कि अगर इन्हे उठा कर राते के आकाश में रख दिया जाए तो पूर्ण चन्द्रमा से भी ज्यादा प्रकाशवान होगी।

सूर्य के सतह की गर्मी करीब 5,700* केल्विन होती है। परंतु यह धब्बे सतह के ठण्डे क्षेत्र होते हैं जिनकी गर्मी 3,500* केल्विन के करीब होती है।

यह सौर ज्वाला इतनी तीव्र होती है कि पृथ्वी पर इनका असर महसूस किया जाता है। विशेष रूप से तकनीकि अवसंरचनाएँ में अव्यवस्था, सौर ज्वाला से निकने वाली एक्स-रे रेडियो संचार को बाधित कर देती हैं। इनसे निकलने वाली पराबैगनी किरणें मानवीय-सैटेलाइट्स के पथ को भी प्रभावित करती पाई गई हैं। इन दमकों से जीपीएस गणनाएं भी प्रभावित हो जाती हैं।

सोलर मैग्जिमम और सोलर मिनिमम

सोलर मैग्जिमम या सोलर मैक्स उस अवधी को कहते हैं जब सौर चक्र में सौर गतिविधि सबसे तीव्र होती है। इस समय सौर धब्बों की संख्या सबसे अधिक होती है। इसके अनुसार एक सौर चक्र को 11.7 वर्ष का होता है। इसके विपरीत सोलर मिनिमम भी होता है जब सौर धब्बे नगण्य होते हैं या बिलकुल नहीं होते हैं। दैनिक सूर्य के धब्बों के निरीक्षण से पता चलता है कि सोलर-मैक्स और सोलर-मिनिमम का संयुक्त ग्राफ के भी विशिष्ठ लक्षण हैं। जहाँ सोलर-मैक्स और सोलर-मिनिम कई वर्षों तक सामन्य से औसतन अधिक रहते हैं या कई वर्षों तक समान्य से औसतन कम रहते हैं। सौर धब्बों की ऐसी लम्बी स्थिति पृथ्वी पर विशेष प्रभाव डालती है।

वैदिक ज्योतिष में सूर्य का स्थान

वैदिक ज्योतिष में सूर्य को—
आत्मा का कारक
चेतना और तेज का स्रोत
सत्ता, नेतृत्व और धर्म का प्रतीक
स्वास्थ्य और जीवनशक्ति का आधार
माना गया है। सूर्य की स्थिति से जातक की आत्मिक दृढ़ता, आत्मविश्वास और जीवन दिशा का मूल्यांकन किया जाता है।

सन स्पॉट और ज्योतिषीय ऊर्जा का संबंध

यद्यपि शास्त्रीय ग्रंथों में सन स्पॉट का प्रत्यक्ष उल्लेख नहीं मिलता, फिर भी आधुनिक ज्योतिष में इन्हें सूर्य की ऊर्जा तरंगों में अस्थिरता के रूप में देखा जाता है। जब सूर्य की चुंबकीय गतिविधि बढ़ती है, तब उसका प्रभाव पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र तथा मानव मन पर भी पड़ता है।

यह काल सामूहिक रूप से—
सत्ता संघर्ष, राजनीतिक परिवर्तन, सामाजिक आंदोलनों, तकनीकी व्यवधान, प्राकृतिक असंतुलन का सूचक माना जाता है।

मानव चेतना पर प्रभाव

अधिक सन स्पॉट गतिविधि के समय अनेक व्यक्तियों में—

मानसिक अस्थिरता, चिड़चिड़ापन, क्रोध और अहंकार, हृदय एवं रक्तचाप संबंधी समस्याएँ देखी गई हैं, विशेषकर उन जातकों में जिनकी कुंडली में सूर्य अत्यधिक बलवान या पीड़ित हो।

निष्कर्ष- सन स्पॉट आधुनिक विज्ञान की खोज हैं, परंतु उनका प्रभाव केवल खगोलीय न होकर मानव जीवन और चेतना से भी जुड़ा है। ज्योतिष इन्हें सूर्य की ऊर्जा में असंतुलन का संकेत मानते हुए आत्मसंयम, साधना और विवेक पर बल देता है।

जब सूर्य स्थिर होता है, तब जीवन प्रकाशित होता है; और जब उसकी ऊर्जा असंतुलित हो—तो साधना ही संतुलन का मार्ग बनती है।

प्रेम योग और ज्योतिष

डॉ. राजेंद्र भट्ट

प्रेम के लिए ना कोई उम्र होती है ना कोई सामाजिक सीमा होती है। कभी भी कहीं भी किसी से भी हो सकता है। सजीव निर्जीव का भेद नहीं रहता है। प्रेम का अपना एक अलौकिक जगत होता है। ज्योतिष शास्त्र में शुक्र ग्रह को इसका मुख्य कारक माना गया है। जातक के शुक्र से हम उसकी प्रेम करने की क्षमता, प्रकार आदि का आकलन सही कर सकते हैं शुक्र जातक की जन्मकुंडली में सबल निर्दोष हो अशुभ पापी ग्रह से संबंधित ना हो तो जातक का प्रेम शुद्ध रहता है। अन्यथा प्रेम में कुछ ना कुछ कमी शुद्धता में बनी रहती हैं। विवाह की सफलता के लिए पति पत्नी में प्रेम होना आवश्यक होता है, अन्यथा वैवाहिक जीवन कष्टमय हो जाता है। पति पत्नी में विभेद हो जाता है। वैवाहिक जीवन सुखमय हो इसलिए कुंडली मिलान के समय शुक्र के बलाबल, स्थिति आदि का आकलन अवश्य कर लेना चाहिए। ज्योतिष मनीषियों द्वारा प्रेम की विभिन्न स्थितियों परिस्थितियों के संदर्भ में ज्योतिष ग्रंथों में सविस्तार लिखा गया है। जन्म कुंडली में ग्रहों भावों आदि की स्थितियां जातक के प्रेम के बारे में बहुत कुछ स्पष्ट कर देती है। नवग्रहों में शुक्र ग्रह को प्रेम का मुख्य कारक माना गया है। शुक्र प्रेम का बीज है। पंचम भाव, पंचमेश प्रेम भाव प्रेम योग में सहयोगी एवं प्रेम उत्पत्ति की भूमि भी कह सकते हैं। शुक्र और पंचमेश और यदि उच्च भावों में हो, युति में हो तो ऐसे जातक के मन में प्रेम करने की अभिलाषा रहती है तथा वह प्रेम अवश्य करता है। चंद्र मन का कारक है। चंद्र ग्रह की योग के बिना प्रेमाकुर प्रस्फुटित होकर पल्लवित होना असंभव होता है। अतः चंद्र का योगदान प्रेम योग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शुक्र चंद्र पंचम भाव पंचमेश के साथ-साथ लग्नेश सप्तमेश के संबंध, दृष्टियों के संबंध प्रेम योग की स्थितियों को प्रभावित करते हैं। जातक की कुंडली में प्रेम योग का आकलन करते समय प्रेमी भाव प्रथम, पंचम, सप्तम, द्वादश, प्रेमी राशियां वृषभ, तुला, मीन, मिथुन कन्या कर्क एवं प्रेमी नक्षत्र रोहिणी, मृगशिरा , पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, रेवती। इसी प्रकार हर्षल, शनि मंगल, गुरु, राहु ग्रह अभी अपनी-अपनी भूमिका निभाते हैं। जिस प्रकार एक बीज को वृक्ष बनने एवं फलने तक सृष्टि के सभी तत्वों का योग दान रहता है।

प्रेम संबंध किस प्रकार के होंगे यह कुंडली में चंद्रमा के पक्ष बल से ज्ञात होता है। चंद्र पक्ष बल से हीन होगा और उस पर शुक्र का प्रभाव होगा तो जातक के प्रेम में वासना अधिक होगी। वासनात्मक प्रेम होगा। चंद्र का पक्ष बल मजबूत होगा तो प्रेम कलात्मक होगा भावुकता ज्यादा होगी। प्रेम योग में अन्य ग्रहों के संबंधों के प्रभाव से देखें। चंद्र शुक्र के साथ मंगल जैसे गर्म ग्रह के संबंध हो तो प्रेम में वासना अत्यधिक होगी। यदि बुध से संबंध होता है तो प्रेम में व्यापारिक दृष्टिकोण अवश्य दिखाई देगा। बृहस्पति के प्रभाव होने पर प्रेम प्राप्त करने में बहुत भागदौड़ होगी। शुक्र गुरु के प्रबल विरोधी है। ऐसे ही यदि शनि के प्रभाव होने पर प्रेमियों में उम्र से अधिक अंतर होगा। कुछ ना कुछ स्वार्थ निहित होगा। सूर्य का संबंध पंचम भाव पंचमेश आदि से हो तो उच्च श्रेणी से संबंध व्यक्ति से होता है। मंगल से हो तो पुलिस, सेना, इंजीनियर मेहनतकश खिलाड़ी आदि से प्रेम संबंध होते हैं। प्रेम कभी कभी एकतरफा होता है। शुक्र या चंद्र प्रेमी नक्षत्र या राशि में अकेला रहता है तो यह स्थिति बनती है। कभी-कभी प्रेमी राशि, नक्षत्र में चंद्र या शुक्र अकेले हो या युति में हो और इनका 2 ग्रहों से संबंध हो रहा हो तो एक से अधिक प्रेम संबंध हो सकते हैं।

उदाहरणार्थ दो कुंडलियां प्रस्तुत हैं

1. जातक जन्म दिनांक 20 जनवरी 1989 जन्म समय 20.15 रात्री स्थान इंदौर

लग्न कुंडली

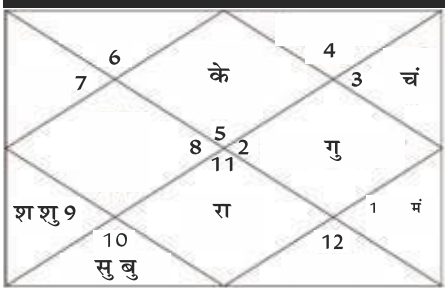

इस जातक की कुंडली मे सप्तमेश शनि बनता है जोकि विवाह में देरी करवाता है जातक का विवाह 2015 में 30 वर्ष पूर्ण होने पर हुवा सप्तमेश शनि शुक्र के साथ पंचम स्थान में स्थित है। चंद्र लाभ स्थान से शनि शुक्र एवं पंचम भाव पर पूर्ण दृष्टि दे रहा है प्रेमयोग निर्मित हुवा प्रेम विवाह में परिणीत हुआ पंचमेश बृहस्पति है। अतः शुद्ध व सात्विक प्रेम हुवा परिवार की सहमति से विवाह सम्पन्न हुआ।

कुंडली 2 यह एक जातिका की कुंडली है जन्म दिनांक 1 अप्रैल 1984 जन्म समय 10.45 प्रातः रतलाम

लग्न कुंडली

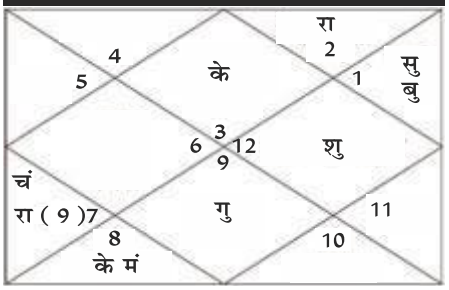

जातिका की कुंडली में शुक्र पंचमेश एवं व्ययेश होकर उच्च राशि मीन में स्थित है। बृहस्पति सप्तमेश है। सप्तमेश पंचमेश का संबंध स्थापित हुआ। चंद्र द्वितीयेश होकर अष्टमेश नवमेश शनि के साथ हैं।

त्रैमासिक राशि भविष्य फल
जनवरी से मार्च 2026

पं. हेमचन्द्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

मेष
चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

जनवरी

आपकी राशि में यह मास्क का आरंभ मानसिक तनाव ग्रस्त जरूर रहेगा लेकिन आपके मन में कार्यों के प्रति उत्साह रहेगा मित्रों से भी सहयोग मिलने की उम्मीद है परिवार में सुख और सहयोग रहेगा । पत्नी और बच्चों का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा यदि कर्ज लिया हुआ है तो उसका समय सीमा में अदा करने का ध्यान रखें। मास की 7, 8, 18, 25, 26 और 29 तारीख श्रेष्ठ कमजोर है।

फरवरी

इस मास में आपका लक्ष्य और कार्य मे तरक्की और सफलता हेतु ऊर्जा का प्रभाव अच्छा रहेगा। उत्तरार्द्ध में नई जिम्मेदारियां मिल सकती हैं, ।हालाँकिकार्य केअंतिम चरण में कोई निर्णय लेने से परेशान रहेंगे। आर्थिक मामलों में सोच समझकर उठाए गए कदम बेहतर बने रहेंगे। परिवार में जीवन सामंजस्य बना रहेगा। दापत्यजीवन के सुखद क्षणों का अनुभव करेंगे। धन लाभ होगा। सामाजिक और सार्वजनिक क्षेत्र में आप ख्याति और प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। धन लाभ और व्यवसाय मे लाभ मिलेगा। समाज में सम्मान मिलगा। सेहत सामान्य रहेगी। पढ़ाई और नौकरी में बिना मेहनत के कुछ भी नहीं मिलेगा। मास की 1, 10, 19, 23 एवं 28 तारीख शुभ रहेगी ।

मार्च

यह मां आपकी राशि वालों को थोड़ी परेशानी का रह सकता है मिश्रित पाली समाज में मिलेगा कभी अच्छा तो कभी तनाव किसी सामाजिक कार्यक्रम में अधिक ध्यान रखने की आवश्यकता है अन्यथा थोड़ा प्रतिष्ठा में कमी आ सकती है अनावश्यक कार्यों में समय और धन की व्यय होने की संभावना है लेकिन मांस के उत्तरार्ध में चिन्ताओं से मुक्त हो सकेंगे । की 4, 6, 9, 11, 18,20,23 एवं 24 तारीख कमजोर है ध्यान रखें।

वृषभ
ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो

जनवरी

आपको ग्रह योग मिश्रित फल देने वाले होंगे संतान की तरफ से चिंताएं रहेंगी तथा अनावश्यक मानसिक तनाव अपने कर्म पक्ष को लेकर रहेगा रोजी रोजगार में अनावश्यक विरोध होने की संभावना है लेकिन आपका आत्म बल बलवान रहेगा शत्रु शमन होता रहेगा । मास की 8, 10, 19, 20, 27 एवं 28 तारीख श्रेष्ठ है।

फरवरी

इस मास में ग्रहों की स्थिति आपको स्थिरता और धैर्य का संकेत देता है। नौकरीपेशा लोगों को मेहनत का फल मिलने की संभावना है। व्यापार में पुराने निवेश से लाभ हो सकता है। परिवार के किसी सदस्य से सामूहिक सहयोग आवश्यक मिलेगा। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा, लेकिन खान-पान पर ध्यान दें। आप व्यस्त और परेशान रहेंगे। कार्य में सफलता और यश मिलने से उत्साह बढ़ेगा। महिला रिश्तेदारो / मित्रों के साथ मुलाकात होगी। विरोधियों और प्रतिस्पर्धियों की पराजय होगी। अपने बिजनेस पर ध्यान दें वरना संकेत अच्छा नही है। स्वास्थ्य बढ़िया रहेगा। सुदूर यात्रा संभव है और पदोन्नति की संभावना है। मास की 5, 10, 14, 20 और 23 तारीख शुभ है।

मार्च

अपने रोजमर्रा के काम सामान्य रूप से अच्छे चलेंगे लेकिन स्वास्थ्य में थोड़ी कमी रह सकती है। यदि किसी प्रतियोगी कार्य में संलग्न होंगे तो सफलता प्राप्त होगी । मन प्रसन्न रहेगा संतान पक्ष की ओर से चिंताएं कम होगी अनावश्यक विरोध का शमन होगा । धार्मिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी व्यापारी वर्ग के लिए समय अच्छा है मास की 11, 13,20, 21 एवं 23 तारीख कमजोर है।

मिथुन
का, की, कू, घ, ङ, छ, के, को, हा

जनवरी

यह मास आपके लिए भग्य की नई योजना लेकर आया है जिससे कि आपको आर्थिक लाभ और मान सम्मान की वृद्धि होगी लेकिन पारिवारिक चिंताएं थोड़ी बढ़ेगी संतान की तरफ से तनाव रहेगा कुछ पुराने रिश्तो से मानसिक तनाव रह सकता है थोड़ा शांति रखेंगे तो परिस्थितियों में सुधार आएगा । मास की 2, 3, 15, 17, 19, 22 एवं 27 तारीख श्रेष्ठ है।

फरवरी

यह मास आपके लिए संवाद और संपर्क का है। लेकिन नई मुलाकातें भविष्य में प्रतिद्वंद्वी साबित हो सकती हैं। मीडिया, लेखन या मार्केटिंग से जुड़े लोगों के लिए समय उपयुक्त है। हालाँकि अफवाहों और गलतफहमियों से दूरी बनी हुई है। घर में सुख-शांति का माहौल रहेगा। संतानों के सम्बंध में समस्याएं खड़ी होंगी। स्वाभिमान भंग न हो इसका ध्यान रखें। शेयर-सट्टा का प्रलोभन हानि पहुंचा सकता है। व्यवसायिक यात्रा के योग बन रहे हैं। सेहत अच्छी रहेगी। मौसम का मजा लें। नई नौकरी का ऑफर मिलेगा। जीवन साथी और परस्पर स्नेह प्यार से मास अनुकूल रहेंगा और कर्म पक्ष मे सही निर्णय नहीं पायेंगे। इस मास की 1, 5, 7, 11,19 एवं 24 तारीख शुभ फलदायक है।

मार्च

यह मानस आपके लिए शुभ है लेकिन मिश्रित फल देगा । पारिवारिक जनों का सहयोग प्राप्त होगा किसी पारिवारिक कार्य में व्यस्तता अधिक रहेगी दांपत्य जीवन अच्छा रहेगा अपने कार्यों में अधिक मेहनत करनी पड़ेगी; विशेष कर व्यापारी वर्ग को सजगता से कार्य करना होगा । नवीन कार्यों की योजना बनेगी तथा सफलता भी मिलेगी अपने कार्यों में थोड़ी व्यस्तता के कारण मन अशांत रहेगा।

जीवन वैभव
स्थापना के 40 वर्ष
ज्योतिष, स्वास्थ्य एवं सुसंस्कार की शिक्षाप्रद पत्रिका

त्रैमासिक राशि भविष्य फल
जनवरी से मार्च 2026

पं. हेमचन्द्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

कर्क
ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

जनवरी

यह मास आपके लिए अशुभ फल कारक है रोजगार व्यापार में उतार चढ़ाव की स्थितियां बनेगी। अपने कर्मपक्ष में उच्च अधिकारियों से वाद विवाद की स्थितियां बनेगी। व्यस्तता अधिक रहेगी इसलिए शत्रुओं की वृद्धि संभव है' मास की 2-3, 16,17,25, 28 एवं 29 तारीख अशुभ है।

फरवरी

आपका यह मास मानसम्मान एवं धनप्राप्ती के लिए सफलता दायक रह सकता है। परिवार के साथ समय बिताने से मन को शांति मिलेगी। अध्यापन में जिम्मेदारी रखना जरूरी है। निवेश से पहले किसी अनुभवी की सलाह लें। स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं हो सकती हैं। अत्यधिक संवेदनशीलता के कारण और घरेलू मामलों को लेकर मानसिक तनाव रहेगा। जल स्त्रोतो से दूर रहना हितकर है। व्यवसायिक गतिविधियों में लाभ; नौकरी में पदोन्नति हो सकती है। ऑफिस में सहयोगी से विवाद संभव है। मास की 3, 6, 9,12,18 और 21 तारीखे शुभ फल दायक है।

मार्च

आपके कार्यों में अधिक भाग दौड़ होने के कारण अपने नियमित कार्य में मन नहीं लगेगा। व्यर्थ में इधर-उधर भटकाव रहेगा। शारीरिक कष्ट की संभावना भी है। पारिवारिक कार्यों में भी अधिक व्यस्तता रहेगी मानस के उत्तरार्ध में कार्य में थोड़ा संतोष प्राप्त होगा। लेकिन वाणी में संयम रखें ताकिअनावश्यक विरोध ना हो। मास की 4,8, 14, 15, 21 23,26 तारीख के शुभ है।

सिंह
मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, ढू, रे

जनवरी

अपने कारोबार में सावधानी रखने से ही लाभ प्राप्ति संभव है व्यापारिक कार्य हे ' तो गतिविधियों में जरूर सुधार आएगा । मानसम्मान प्रतिष्ठा और सामाजिक कार्य दायित्व की वृद्धि होगी । धार्मिक यात्रा के योग बन सकते हैं । किसी के भरोसे कार्य में नुकसान संभव है मास की 7,9, 11, 14 19, 23 और 29 तारीख अशुभ है।

फरवरी

यह मास आपको अपनी नेतृत्व क्षमता से लाभ दिलाएगा। नौकरी या बिजनेस में आपकी बात का महत्व बढ़ेगा । व्यस्तता बहुत बढेगी। शैक्षणिक कार्य दायित्वमें रूखे व्यवहार से बचना जरूरी है। पारिवारिक मामलों में संयम रखें। नए कार्यों के आरंभ के लिए तैयार रहें। आप सभी कार्य तन-मन से स्वस्थ रहकर करेंगे। व्यापार-धंधे में लाभ होगा। मन की उलझन हल होगी। व्यवसाय के लिए बेहतर है। सेहत सामान्य रहेगी और वातावरण का आनन्द अपने परिवार के साथ लेंगे। नौकरी में परेशानी बनेगी और नई नौकरी की तलाश जारी रहेगी। पुराने मित्रों से रिश्ते का ब्रेकअप चर्चा का विषय रहेगा।मास की 3, 7,13,17,23 और,29 तारीखों में कार्य और यात्रा में सावधानी रखकर कार्य करें।

मार्च

आपके पुराने रुके हुए कार्य इस माह में पूर्ण होंगे। कुछ स्थाई संपत्ति क्रय करने के योग हैं इस मास में स्वास्थ्य पर ध्यान दें उधर विकार नेत्र व्याधि रह सकती है व्यापार के क्षेत्र में कार्यों में सफलता मिलेगी। धार्मिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी। आर्थिक लेनदेन में उधारी से ध्यान रखें मास की 3,6, 12, 14, 19 24, 25 तारीख शुभ है।

कन्या
टे, टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

जनवरी

यह मांस आपके लिए मिश्रित फलदायक है पुराने समय से चले आ रहे हैं रुके कार्यों में गति प्राप्त होगी साझेदारी के कार्य में सावधानी रखने की जरूरत है व्यापारी वर्ग को समय अनुकूल है ऋण का लेनदेन का कार्य न करें । मास की 7, 8, 11, 20, 21,23 एवं 27 तारीख श्रेष्ठ हैं।

फरवरी

आपका मास विशेष उत्तम है। नौकरी में प्रमोशन या कार्य मे नई जिम्मेदारी मिल सकती है। स्वास्थ को लेकर सतर्क बने रहें। धार्मिक कार्यों के पीछे धन खर्च होगा। स्वास्थ्य खराब हो सकता है। फिर भी दिन अच्छा रहेगा। बाहर धार्मिक या सांस्कृतिक भ्रमण पर जा सकते हैं। नकारात्मक विचारों से दूर रहें। वाणी पर संयम रखें। आपका मन पुराने रुके हुए कामों की तरफ लगेगा, जो आय में रुकावट का संकेत दे रहे हैं। प्रतियोगी कार्य की तैयारी में शामिल होंगे।पुराने रिश्ते से थोड़ी अप्रसन्नता नजर का साया है। इस मास में आपको 1,3,14,17 तारीख शुभ है ।

मार्च

यह मास आपके लिए शुभ फल दायक है। नए सम्माननीय व्यक्तियों से परिचय होगा। धन एवं यश कीवृद्धि होगी नौकरी करने वालों को परिवर्तन का योग बनता है। शेयर आदि के कार्यों से दूर रहे अन्यथा हानि हो सकती है। नौकरी करने वालों को कार्य करने में समय और कार्य की गतिशीलता में निरंतरता रखनी चाहिए । व्यर्थ की यात्राओं से सावधानी रखें। मास की 5 10, 13, 18, 23 एवं 26 तारीख शुभ है।

त्रैमासिक राशि भविष्य फल
जनवरी से मार्च 2026

पं. हेमचन्द्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

तुला
रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते

जनवरी

इस मास में आपको यात्रा और वाहन चलाने में सावधान रहने चाहिए । कुछ नए कार्य मिलेंगे तथा बड़े सम्मानित व्यक्तियों का सहयोग भी प्राप्त होगा व्यापारी वर्ग को लाभ हानि दोनों मिश्रित रूप से होगी संयुक्त परिवार में पारिवारिक सदस्यों से अपने व्यवहार में सावधानी रखें मांस की 4, 7, 14,15, 22और 24 तारीख अशुभ है।

फरवरी

आपका यह मास आपके लिएयश और समृद्धि का बैलेंस बनाए रखने का संदेश देता है। कानूनी या सरकारी मामलों में सफलता मिल सकती है। रिश्तों में विलम्ब से निर्णय लेने में क्षति हो सकती है। साथी की नाराजगी भी झेलनी पड़ सकती है। घर और कार्यालय के बीच के जीवन में एक संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता है। आर्थिक रूप से भी यह थोड़ा कठिन समय है। सेहत व्यस्त होने की वजह से खराब होगी। बिजनेस व नौकरी में आपके पक्ष में वातावरण रहेगा। आपको बहुत कुछ मिलने वाला है। नौकरी करने वालों के लिए समय अच्छा है। मास की 2,4 .8,16, 24 एवं 28 तारीख शुभ है।

मार्च

यह मास आपके लिए शुभ फलदायक है । व्यापारी वर्ग को सामान्य लाभ तथाआर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है । पारिवारिक सुख की वृद्धि होगी किसी शुभ समाचार से मनपसंद रहेगा । अनावश्यक ऋण नहीं लेवे अन्यथा धन का नुकसान होगा संतान सुख अच्छा रहेगा । मास की 3,4,7,8,11,25 एवं 29 तारीख शुभ है।

वृश्चिक
तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू

जनवरी

यह मास आपके धार्मिक कार्यों में व्यस्तता का रहेगा । कुछ चापलूस लोगों से कार्यों में सावधानी जरूर रखना चाहिए खर्चकी अधिकता से मानसिक तनाव रहेगा। धन आगमन भी समय पर होगा विरोधियों का षड्यंत्र का पर्दाफाश होगा । 5 मास की 5,7, 14, 15, 24,25 एवं 28 तारीख श्रेष्ठ है ।

फरवरी

आपका मास आत्मबल और साहस बढ़ाने वाला है। छुपे हुए अप्रत्यक्ष विरोधी सक्रिय हो सकते हैं, इसलिए परहेज रखें। धन लाभ के योग हैं, लेकिन जोखिम से नुकसान होगा। नकारात्मकता पर ध्यान ना दें। उधारी मेकोई लेन-देन या आर्थिक व्यवहार ना करें। मन विचलित रहेगा। विदेश से शुभ समाचार मिल सकता है। राजनीतिक संबंध बढेगें । लाभ के कई रास्ते खुले गें।मन उदास रहने से कार्यक्षेत्र प्रभावित होगा। बुरी संगत की वजह से करियर प्रभावित होगा। पारिवारिक जीवन मिश्रितफल दायक होगा। मास की 9,11, 21, 23 एवं 27 तारीख यात्रा और निर्णय में सावधानी बरते।

मार्च

आपकी राशि वालों को दिनचर्या सुव्यवस्थित रहेगी। कोर्ट कचहरी के कार्य सफलता से पूर्ण होंगे। अपने व्यापार में वृद्धि होगी। कुछ नए कार्य की योजना बनेगी जिससे मित्रता की वृद्धि होगी लेकिन आय से अधिक व्यय होने की संभावना है। विरोध और गुप्त शत्रु बढ़ सकते हैं। शारीरिक स्वास्थ्य बाधाए ना हो इसका ध्यान रखें मास में 5,9, 10, 19, 20, 25 एवं 27 तारीख शुभ है।

धनु
ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भ

जनवरी

यह मास आपके लिए नई योजना तैयार करने के लिए अनुकूल है अच्छे कार्य करने के लिए आपको मित्रों का और वरिष्ठ जनों का सहयोग मिलेगा भौतिक सुख सुविधा की वृद्धि होगी यदि व्यापारी वर्ग है तो कार्य में विस्तार करने में फायदा है मन संतुष्ट रहेगा खर्च वृद्धि होगी । मास की 8, 9,11 14, 17,19, 25 एवं 26 तारीख अशुभ है।

फरवरी

यह मास आपको नई दिशा दिखा सकता हैं। यात्रा के योग बन रहे हैं। शिक्षा और धार्मिक महोत्सव में सौंपे कार्य मे सफलता मिल सकती है। विविधता से अव्यवस्थित न होने दें, मास खुशी और प्रसन्नता से बीतेगा। दूसरों से असहमती हो सकती है। पुरानी समस्याएं हल हो सकती हैं, मन शांत रहेगा, धन खर्च हो सकता है। साझेदारी में बिजनेस शुरू करने की सही सोच रहे हैं। नौकरी में बॉस की नाराजगी झेलनी पड़ सकती है। अपने मित्र मंडली के द्वारा सहयोग प्राप्त होगा ।मास की 4,8 14,17 एवं 21 तारीख कमजोर है यात्रा मेंसावधानी रखें।

मार्च

यह मास परिजनों के सहयोग से मानसिक संतुष्टि देने वाला रहेगा। पारिवारिक कार्यों में व्यस्तता का रहेगा; लेकिन कार्य में सफलता मिलेगी। पुराने कुछ मित्रों से नए कार्य की योजना बन सकती है; पद प्रतिष्ठा का लाभ। कुछ नए कार्यों में ब्राह्मण की संभावना हो सकती है। संतान का सुख अच्छा रहेगा। विरोध वर्ग शांत होगा । मास की 2,4, 11,12, 19, 21, एवं 22 तारीख नेष्ट है सावधानी रखें।

त्रैमासिक राशि भविष्य फल
जनवरी से मार्च 2026

पं. हेमचन्द्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

मकर
भो, जा, जी, खी, खू, खे, खोग, गा,गी

जनवरी

यह मास आपके लिए पारिवारिक दृष्टिसे अनुकूल रहेगा ।आपको सभीसे शांतिपूर्ण व्यवहार करना हितकर रहेगा । आर्थिक दृष्टि से अस्थिरता रहेगी पारिवारिक कार्यों से व्यस्त रहेंगे । यात्रा यथासंभव नही करें। मास की 3,7,10,11, 22 एवं 26 तारीख अशुभ है।

फरवरी

आपका यह मास परिश्रम और अनुशासन का शुभ फल देने वाला है। नौकरी में स्थिरता रहेगी। परिवार के वरिष्ट सदस्य का सही दिशानिर्देश मिलेगा। भावनाओं को बढ़ावा देने से बचें। मास के अंतमें आध्यात्मिकता की ओर मन प्रेरित होगा। आपके परिश्रम का शुभफल मिलता हुआ प्रतीत होगा। शारीरिक और मानसिक सुख बने रहेंगे। सामाजिक क्षेत्र में प्रतिष्ठा बढ़ेगी। सरकारी कार्य समय पर पूर्ण होने में प्रसन्नता रहेगी। राजनीति से जुड़े लोगों को लाभ मिलेगा और अन्य के लिए संघर्षशील रहेगा। सेहत को हल्के में ना लें, सर्दी का भी मजा लेंगे। नौकरी के सिलसिले में यात्रा करेंगे और दोस्त की मदद लेंगे। कर्म संबंधी मसला सुलझायेंगे। मास की 6, 9, 14, 17,22 से 28 तारीख शुभ है ।

मार्च

यह मास कृषक वर्ग के लिए उत्तम रहेगा। धन योग बनेंगे कोई राजकीय कार्य अगर लंबित हो तो उसे शीघ्र पूर्ण कर लेना चाहिए। धन और यश की चिंता रहेगी विरोधी वर्ग सक्रिय रहेगा अपने ईष्ट मित्रों और परिचितों से वैचारिक मतभेद रह सकते हैं इस कारण से वाणी में ध्यान रखें संतान सुख अच्छा रहेगा मास की 3, 4, 9, 10,11, 20, 22 और 29 अशुभ है।

कुंभ
गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा

जनवरी

यह मास आपको थोड़ा चुनौती को जरूर है,समस्याओं को चतुराई से निपटना पड़ेगा। कुछ विशिष्ट व्यक्तियों का सहयोग मिल सकेगा। आने वाली समस्या को गंभीरता से विचार करके निर्णय ले। व्यापारी वर्ग की विशेष सावधानी रखना चाहिए आर्थिक दृष्टि से यह मास मिश्रित फलदायक है । व्यर्थ की यात्रा यथा संभव टालें। सन्तान के लिए खर्च अधिक होगा। मास की 5, 6, 14, 26 27 एवं29 तारीख श्रेष्ठ है।

फरवरी

मास का पूर्वार्ध आपके लिए नए विचार और आगामी स्थिति को समझने के लिए अनुकूल होगा। सामाजिक कार्यकर्ताओं में भागीदारी सहभागिता रहेगी। अकेलेपन से बचने की कोशिश करें। पारिवारिक सदस्यों और पदाधिकारियों के साथ सुखमय और अनुकूत सम्बध रहेगें। विदेश जाने के इच्छुक लोगों के प्रयास सफल होंगे। धार्मिक कार्यों मे धन खर्च होगा। नौकरी वालों को लाभ मिलेगा। आपका मन कृषि कार्य में लगेगा। सेहत संबंधी परेशानी बढ़ेगी। लेखन साहित्य और कला से जुड़े क्षेत्र में संभावनाए हैं। परिवार सदस्यों से जातक के सौहार्द एवं प्रेम संबंध में नजदिकीयां बढ़ेगी। मासकी- 4, 7,9,18, 23, 29 शुभ तारीख है।

मार्च

यह मास आपके लिए मध्यम फलदायक है व्यस्तता अधिक रहेगी लेकिन आत्म बल की कमी रहेगी। बुद्धिजीवियों के लिए यह मास अधिक कठिनाइयों का रहेगा क्योंकि किए जाने वाले कार्यों में सतर्कता की बहुत आवश्यकता है। पारिवारिक कार्य में व्यस्तता रहेगी शुभ समाचार से मन प्रसन्न रहेगा। किसी मंगल कार्य में व्यस्तता रहेगी। धन लाभ भी समय पर होगा। मास की 1,6, 10, 12, 26 एवं 28 तारीख शुभ है।

मीन
दी, दु, थ, क्ष, ज, दे, दो, चा, ची

जनवरी

यह माह आपको तनाव तथा अधिक मेहनत करने का है कुछ अधिक जिम्मेदारियां भी आपको प्राप्त हो सकती है सामाजिक कार्यक्रमों में सावधानी रखना जरूरी है कुछ विश्वसनीय व्यक्तियों से कार्य में सहयोग कीसंभावना है जिससे रुके हुए कार्य हल हो जाएंगे तथा आर्थिक कठिनाइयों से भी प्रतिकूलता दूर होगी परिवार में प्रेम और सौहार्द की भावना बनाए रखें। मास की 7,8, 11,17, 21,23 एवं 29 तारीख श्रेष्ठ है।

फरवरी

यह मास आपका सम्माननीय व्यक्तित्व के मिलनसे लाभान्वित होने का है। कला, संगीत और लेखन से जुड़े लोगों को सफलता मिल सकती है। अपने योजनाबद्ध कार्यको साकार करने केलिए लक्ष्यतय करें। आपकी दीर्घयात्रा के भी संकेत हैं। तबीयत के पीछे धन खर्च होने की संभावना है। पारिवारिक सदस्यों के साथ थोड़ा मनमुटाव होगा। अनैतिक कार्यके साथियों से दूर रहें; बदनामी होने का योग है। आर्थिक मामलों में मित्र / साझेदार का सहयोग और परामर्श लाभवर्द्धक रहेगा। सेहत को लेकर लापरवाह रवैया परेशान करेगा।अपने प्रोफेशन और पढ़ाई में क्रोध को दूर रखें। मास की 3, 4,10,16, 17 एवं 24 तारीख शुभ है।

मार्च

यह मास आपके लिए अनुकूल है; कोई लाभदायक योजना आपके सामने आएगी जिससे संतोष एवंआत्मबल की वृद्धि होगी। किसी विशिष्ट प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त हो सकती है। यह मास परिवार में शुभ परंतु उत्तरार्ध में थोड़ा ध्यान रखने का है। अनावश्यकआर्थिक व्यय हो सकता है। व्यापारी वर्ग को सावधानी रखना चाहिए । पारिवारिक जीवन अच्छा रहेगा संतान की ओर से संतुष्टि मिलेगी। मास की 3, 4, 10, 18, 19, 23 एवं 27 तारीख अशुभ है।

त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त
जनवरी से मार्च 2026

पं. हेमचन्द्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

जनवरी 2026 के व्रत पर्व

1 जनवरी, गुरुवार
इस्वी नववर्ष 2026 प्रारंभ, प्रदोष व्रत

3 जनवरी, शनिवार -
स्नानदान व्रत की पूर्णिमा

4 जनवरी, रविवार
मास कृष्णपक्ष प्रारंभ

6 जनवरी, मंगलवार
संकष्टी चतुर्थी व्रत

10 जनवरी, शनिवार
जगदगुरू रामानन्दाचार्य जयन्ती

12 जनवरी, सोमवार
स्वामी विवेकानन्द जयन्ती

14 जनवरी, बुधवार
षडतिला एकादशी व्रत, सूर्य की मकर संक्रांति

15 जनवरी, गुरुवार
तिल द्वादशी

16 जनवरी, शुक्रवार
प्रदोष व्रत, मास शिवरात्री

18 जनवरी, रविवार
स्नानदान श्राद्ध की अमावस्या

19 जनवरी, सोमवार
श्रीवल्लभजयन्ती

22 जनवरी, गुरुवार
वैनायकी चतुर्थी व्रत

23 जनवरी, शुक्रवार
वसंत पंचमी

26 जनवरी, सोमवार
भारतीय गणतंत्र दिवस, भीमाष्टमी

29 जनवरी, गुरुवार
जया एकादशी व्रत/भीष्म द्वादशी

30 जनवरी, शुक्रवार
प्रदोष व्रत

शुभ मुहूर्त जनवरी 2026

1 जनवरी, गुरुवार - नामकरण, नवीन व्यापार
दिन में 12.05 से 1.30 के बीच

4 जनवरी, रविवार - प्रसूति का स्नान सवेरे 9.30 से 12.15 दिन में

5 जनवरी, सोमवार - नवीन व्यापार, खेत जोतना, बीज बोना
सवेरे 9.15 से 10.20, सायं 4.25 से 6.15

7 जनवरी, बुधवार - खेत जोतना, बीज बोना
सूर्योदय से सवेरे 8.30 प्रारंभ

8 जनवरी, गुरुवार - नामकरण, खेत जोतना, बीज बोना
दिन में 12.15 से 1.35 प्रारंभ

9 जनवरी, शुक्रवार - नामकरण, खेत जोतना, बीज बोना
सूर्योदय से सवेरे 10.15 दिन में 12.15 से 1.30

13 जनवरी, मंगलवार - खेत जोतना, बीज बोना
सवेरे 9.30 से 11.30 प्रारंभ

14 जनवरी, बुधवार - नवीन व्यापार, खेत जोतना, बीज बोना
सवेरे 10.35 से 12.15 दिन में

16 जनवरी, शुक्रवार - खेत जोतना, बीज बोना
सूर्योदय से सवेरे 10.40

18 जनवरी, रविवार - प्रसूति का स्नान सवेरे 9.30 से 12.5 दिन में

19 जनवरी, सोमवार - नामकरण, कर्णवेध, जलाशय निर्माण, उद्यान लगाना, देवप्रतिष्ठा, खेत जोतना, बीज बोना सवेरे 9.00 से 10.15

21 जनवरी, बुधवार - नामकरण, अन्नप्राशन, गृहारंभ (भूमिपूजन), जीर्ण गृहप्रवेश, जलाशय निर्माण, उद्यान लगाना, देवप्रतिष्ठा, सवेरे 8.00 से 9.15, 10.30 से 12.15

23 जनवरी, शुक्रवार- नामकरण, अन्नप्राशन, गृहारंभ (भूमिपूजन), जीर्ण गृहप्रवेश, जलाशय निर्माण, उद्यान लगाना, देवप्रतिष्ठा, नवीन व्यापार, खेत जोतना, बीज बोना सूर्योदय से 10.30, 12.15 से 1.40 दिन

24 जनवरी, शनिवार - विद्यारंभ, नवीन गृहप्रवेश 1.40 से 3.30 दिन

25 जनवरी, रविवार - प्रसूति का स्नान, जलाशय निर्माण, देव प्रतिष्ठा, उद्यान लगाना, सवेरे 9.15 से 11.10

26 जनवरी, सोमवार - जलाशय निर्माण, देव प्रतिष्ठा, उद्यान लगाना, खेत जोतना, बीज बोना, सायं 4.15 से 6.00

28 जनवरी, बुधवार - नामकरण, अन्नप्राशन, गृहारंभ (भूमिपूजन), जीर्ण गृहप्रवेश, जलाशय निर्माण, उद्यान लगाना, देवप्रतिष्ठा, नवीन व्यापार, खेत जोतना, बीज बोना सवेरे 10.30 से 12.15 के बीच प्रारंभ

29 जनवरी, गुरुवार - नामकरण, कर्णवेध, नवीन गृहप्रवेश, जलाशय निर्माण, उद्यान लगाना, देवप्रतिष्ठा, नवीन व्यापार, खेत जोतना, बीज बोना दिन में 3.30 से सायं 6.15 के बीच

त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त
जनवरी से मार्च 2026

पं. हेमचन्द्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

फरवरी 2026 के व्रत पर्व

1 फरवरी, रविवार
स्नानदान व्रत की पूर्णिमा

2 फरवरी, सोमवार
फाल्गुन कृष्णपक्ष आरंभ

5 फरवरी, गुरुवार
संकष्टी चतुर्थी व्रत

9 फरवरी, मंगलवार
कालाष्टमी

13 फरवरी, शुक्रवार
विजया एकादशी व्रत

14 फरवरी, शनिवार
शनि प्रदोष व्रत

15 फरवरी, रविवार
महाशिवरात्री व्रत

17 फरवरी, मंगलवार
स्नानदान - श्राद्ध की अमावस्या

18 फरवरी, बुधवार
फाल्गुन कृष्णपक्ष आरंभ

19 फरवरी, गुरुवार
फुलवारिया दूज, श्रीरामकृष्णपरमहंस जयन्ती

20 फरवरी, शुक्रवार
मधुक तृतीया

21 फरवरी, शनिवार
वैनायकी गणेश चतुर्थी

22 फरवरी, रविवार
वसंत याज्ञयवल्क जयन्ती

24 फरवरी, मंगलवार
होलाष्टक प्रारंभ, कामदा सप्तमी

25 फरवरी, बुधवार
आनन्द नवमी

27 फरवरी, शुक्रवार
आमलकी एकादशी व्रत

28 फरवरी, शनिवार
खाटूश्याम जी, मेला पर्व

शुभ मुहूर्त फरवरी 2026

1 फरवरी, रविवार - जलाशय निर्माण, उद्यान लगाना, देव प्रतिष्ठा सायं 4.15 से 6.15

6 फरवरी, शुक्रवार - अन्नप्राशन, कर्णवेध, चौलकर्म, मुण्डन, विद्यारंभ, गृहारंभ (भूमिपूजन), नवीन व्यापार, खेत जोतना, बीज बोना, जलाशय निर्माण, देवप्रतिष्ठा, उद्यान लगाना सवेरे 7.30 से 10.40 के बीच

7 फरवरी, शनिवार- विद्यारंभ, नवीन गृहप्रवेश दिन में 1.45 से 3.15

8 फरवरी, रविवार - प्रसूति का स्नान, जलाशय निर्माण, उद्यान लगाना, देव प्रतिष्ठा, दिन में 3.54 से सायं 6.15

11 फरवरी, बुधवार - अन्नप्राशन, कर्णवेध, चौलकर्म, मुण्डन संस्कार, विद्यारंभ, गृहारंभ (भूमिपूजन), नवीन व्यापार, खेत जोतना, बीज बोना, जलाशय निर्माण, देवप्रतिष्ठा, उद्यान लगाना सूर्योदय से सवेरे 9.15/10.30 से 12.15 दिन में

12 फरवरी, गुरुवार -चौलकर्म, मुण्डन संस्कार दिन में 12.22 से 13.35

14 फरवरी, शनिवार - गृहारंभ (भूमिपूजन) दोपहर 1.40 से 3.15

15 फरवरी, रविवार - जलाशय निर्माण, उद्यान लगाना, देव प्रतिष्ठा सवेरे 9.15 से 12.15 दिन में

16 फरवरी, सोमवार - अन्नप्राशन, कर्णवेध, चौलकर्म, मुण्डन संस्कार, सवेरे 9.15 से 10.40

18 फरवरी, बुधवार - अन्नप्राशन, कर्णवेध, चौलकर्म, मुण्डन संस्कार, गृहारंभ (भूमिपूजन), जलाशय निर्माण, देवप्रतिष्ठा, उद्यान लगाना, सवेरे 10.30 से 12.15

19 फरवरी, गुरुवार - नामकरण, प्रसूति का स्नान दिन में 12 से 1.15

20 फरवरी, शुक्रवार - अन्नप्राशन, नामकरण, गृहारंभ (भूमिपूजन), नवीन गृहप्रवेश, नवीन व्यापार, खेत जोतना, बीज बोना, जलाशय निर्माण, उद्यान लगाना, देवप्रतिष्ठा, सूर्योदय से सवेरे 10.30, दिन में 12.15 से 13.40

21 फरवरी, शनिवार - विद्यारंभ, गृहारंभ (भूमिपूजन), नवीन गृहप्रवेश, नवीन जलाशय निर्माण, उद्यान लगाना, देवप्रतिष्ठा, दिन में 13.30 से 16.30 के बीच

22 फरवरी, रविवार - प्रसूति का स्नान, विद्यारंभ, जलाशय निर्माण, उद्यान लगाना, देवप्रतिष्ठा, सवेरे 9.15से 12.15 दिन में

25 फरवरी, बुधवार -प्रसूति का स्नान, सवेरे 10.30 से 12.15

26 फरवरी, गुरुवार - अन्नप्राशन, नामकरण, प्रसूति का स्नान, कर्णवेध, चौलकर्म मुण्डन, गृहारंभ (भूमिपूजन), नवीन गृहप्रवेश, नवीन व्यापार, खेत जोतना, बीज बोना, जलाशय निर्माण, उद्यान लगाना, देवप्रतिष्ठा, सूर्योदय से सवेरे 7.40, दिन में 12.15 से 13.35

27 फरवरी, शुक्रवार - कर्णवेध, विद्यारम्भ, सूर्योदय से सवेरे 10.40

28 फरवरी, शनिवार - विद्यारंभ, जलाशय निर्माण, उद्यान लगाना, देवप्रतिष्ठा, दिन में 13.30 से 16.30

त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त
जनवरी से मार्च 2026

पं. हेमचन्द्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

मार्च 2026 के व्रत पर्व

1 मार्च, रविवार
रवि प्रदोष व्रत

3 मार्च, मंगलवार
स्नानदान व्रत की पूर्णिमा, होली, धुरेण्डी, वसंतोत्सव

6 मार्च, शुक्रवार
संकष्टी चतुर्थी व्रत

11 मार्च, बुधवार
कालाष्टमी / शीतलाष्टमी

15 मार्च, रविवार
पापामोचनी एकादशी

16 मार्च, सोमवार
सोम प्रदोष व्रत

18 मार्च, बुधवार
स्नानदान श्राद्ध की अमावस्या

19 मार्च, गुरुवार
चैत्र शुक्ल पक्ष प्रारंभ, नवसंवत्सर आरंभ

21 मार्च, शनिवार
गौरी तृतीया, मनोरथ तृतीया

22 मार्च, रविवार
वैनायकी चतुर्थी व्रत

23 मार्च, सोमवार
डोलोत्सव

24 मार्च, मंगलवार
स्कन्दषष्ठी

25 मार्च, बुधवार
महाअष्टमी

26 मार्च, गुरुवार
श्रीरामनवमी

27 मार्च, शुक्रवार
उभयनवमी

29 मार्च, रविवार
कामदा एकादशी व्रत

30 मार्च, सोमवार
सोमप्रदोष व्रत, मदन द्वादशी

31 मार्च, मंगलवार
महावीर जयन्ती (जैन)

शुभ मुहूर्त मार्च 2026

1 मार्च, सोमवार - जलाशय निर्माण, उद्यान लगाना, देव प्रतिष्ठा, नवीन व्यापार
सवेरे 9.15 से 12.15 दिन में

4 मार्च, बुधवार - अन्नप्राशन, नामकरण, गृहारंभ (भूमिपूजन), बीज बोना, जलाशय निर्माण, देवप्रतिष्ठा, नवीन गृहप्रवेश, उद्यान लगाना
सवेरे 10.30 से 12.15 दिन में/सायं 16.30 से 18.10

5 मार्च, गुरुवार - अन्नप्राशन, कर्णवेध, चौलकर्म, मुण्डन संस्कार, विद्यारंभ, गृहारंभ (भूमिपूजन), नवीन व्यापार, खेत जोतना, बीज बोना, जलाशय निर्माण, देवप्रतिष्ठा, उद्यान लगाना
सूर्योदय से 7.40 दिन में 12.15 से 13.35

6 मार्च, शुक्रवार- कर्णवेध, चौलकर्म, मुण्डन संस्कार, विद्यारंभ, (भूमिपूजन), सायं 5.50 से 6.00

7 मार्च, शनिवार - अक्षरारम्भ दिन में 13.30 से 16.30

8 मार्च, रविवार - जलाशय निमर्राण, उद्यान लगाना, देवप्रतिष्ठा
सवेरे 9.15 से 12.15 दिन में

9 मार्च, सोमवार - कर्णवेध, जलाशय निर्माण, उद्यान लगाना, देवप्रतिष्ठा
सवेरे 9.15 से 10.35, सायं 16.30 से 18.00

11 मार्च, बुधवार - विद्यारंभ, सवेरे 10.30 से 12.15

13 मार्च, शुक्रवार - विद्यारंभ, सवेरे 9.15 से 10.40

14 मार्च, शनिवार - जलाशय निर्माण, देवप्रतिष्ठा, नवीन व्यापार, उद्यान लगाना, खेत जोतना, बीज बोना दिन में 13.30 से 16.30

16 मार्च, सोमवार - अन्नप्राशन, नामकरण सवेरे 9.00 से 10.40 के बीच

19 मार्च, गुरुवार - नवीन व्याापार, खेत जोतना, बीज बोना
दिन में 12.00 से 13.40

20 मार्च, शुक्रवार - अन्नप्राशन, नामकरण, नवीन व्यापार, खेत जोतना, बीज बोना दिन में 12.00 से 13.30 के बीच प्रारंभ

23 मार्च, सोमवार - नवीन व्यापार, खेत जोतना, बीज बोना
सवेरे 9.00 से 10.15

24 मार्च, मंगलवार - गृहारंभ (भूमिपूजन) दिन में 10.30 से 12.30

25 मार्च, बुधवार - अन्नप्राशन, नामकरण, नवीन व्यापार, खेत जोतना, बीज बोना सवेरे 10.30 से 12.15 दिन के बीच प्रारंभ

27 मार्च, शुक्रवार - अन्नप्राशन सवेरे 9.30 से 10.20

28 मार्च, शनिवार - विद्याारंभ, गृहारंभ (भूमिपूजन)
दिन में 13.30 से 16.30

SURENDRA PLAZA

Hoshangabad Road

RERA: P-BPL-24-5007

BOOKINGS OPEN FOR SHOPS ONLY

G+1 शॉप्स	200 ft रोड फेसिंग	शोरूम हाइट 18 ft
साइज 130 sqft से 1000 sqft	400 कारों की पार्किंग क्षमता	1000 ft का फ्रंटेज

CALL: 9827278797, 7898984445

मोहन सरकार के सफल दो वर्ष

अतीत, वर्तमान, भविष्य को साथ लेकर चलने का संकल्प

मध्यप्रदेश में डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में सरकार को दो वर्ष पूरे हो चुके हैं। इस अवधि में सरकार ने अतीत के सांस्कृतिक वैभव को पुनर्स्थापित करने, वर्तमान की प्रशासनिक चुनौतियों को साधने और भविष्य की विकास योजनाओं को धरातल पर उतारने की दिशा में कई पहलें की हैं। मुख्यमंत्रीडॉ. यादव ने अपने कार्यकाल के शुरुआती दौर से ही प्रदेश की पहचान को सांस्कृतिक और विकासात्मक– दोनों स्तरों पर मजबूत करने की रणनीति अपनाई।

काल को तीन खंडों में विभाजित किया जाता रहा है, अतीत, वर्तमान और भविष्य। इन तीनों काल के लिए एक साथ कुछ करने की सामर्थ्य विरले ही व्यक्तित्वों में होती है। लेकिन तीनों कालों के लिए बहुत कुछ करने का चमत्कार बाबा महाकाल की नगरी के डॉ मोहन यादव ने दो साल की अवधि में कर दिखाया है। एक ओर जहां उन्होने मध्यप्रदेश के गौरवशाली अतीत को प्रभावी ढंग से संरक्षित और पुनर्स्थापित किया है, तो महाराज विक्रमादित्य के शासनकाल की झलक इन दो वर्षों के वर्तमान कार्यकाल में देखी जा सकती है। देश के इस हृदय प्रदेश को लेकर उनकी दूरगामी योजनाएं सुनहरे भविष्य के प्रति आश्वस्त करती हैं।

अतीत: सांस्कृतिक धरोहर को नया आयाम

सरकार ने धार्मिक और सांस्कृतिक केंद्रों के संरक्षण पर विशेष जोर दिया। महाकाल कॉरिडोर के विस्तार कार्यों ने उज्जैन को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान दिलाई है। राज्य के प्राचीन धरोहर स्थलों पर संरक्षण गतिविधियाँ तेज की गईं। ओंकारेश्वर क्षेत्र में अद्वैत दर्शन से जुड़े प्रकल्पों को गति दी जा रही है। भगवान श्रीकृष्ण के चरण मध्यप्रदेश की भूमि पर जिन स्थानों पर पड़े, उन्हे श्रीकृष्ण पाथेय में समाहित कर इनको तीर्थस्थल के रूप में विकसित किया जा रहा है। इन पहलों का उद्देश्य पर्यटन को बढ़ावा देना और सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाना है।

वर्तमान: प्रशासनिक सुधार और बुनियादी ढांचे पर फोकस

दो वर्षों में सरकार ने बुनियादी ढांचे के विस्तार को प्राथमिकता दी है। प्रमुख सड़क मार्गों, औद्योगिक कॉरिडोरों और शहरी सुविधाओं को उन्नत करने के कार्य जारी हैं। ग्रामीण सड़कों का उन्नयन भी अभियान मोड में किया जा रहा है। शिक्षा क्षेत्र में तकनीकी सुधार, रोजगारोन्मुख पाठ्यक्रम और डिजिटल सुविधाओं के विस्तार पर काम किया है। कृषि क्षेत्र में उपार्जन प्रक्रिया को पारदर्शी बनाने, सिंचाई क्षमता बढ़ाने और प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहित करने के लिए कदम उठाए हैं।

भविष्य: निवेश, ऊर्जा और स्वास्थ्य ढांचे की तैयारियाँ

राज्य सरकार ने आगामी दशक के विकास को लक्ष्य बनाते हुए कई योजनाएँ तैयार की हैं। नई औद्योगिक नीति के तहत MSME और बड़े निवेशकों के लिए अनुकूल वातावरण बनाने की कोशिशें की जा रही हैं। पीथमपुर, इंदौर, भोपाल, उज्जैन और जबलपुर में औद्योगिक क्लस्टर विकसित किए जा रहे हैं। सौर ऊर्जा उत्पादन, जल संरक्षण और इलेक्ट्रिक वाहन ढांचे को बढ़ावा देकर हरित ऊर्जा क्षेत्र में कदम तेज हुए हैं। स्वास्थ्य सुविधाओं को जिला एवं ग्रामीण स्तर तक मजबूत करने की दिशा में अस्पताल उन्नयन और टेली-मेडिसिन सेवाओं का विस्तार प्रस्तावित है।

D-19305/25